सूचीपत्र।

रैदास जी का जीवन-चरित्र।

रैदासजी जाति के चमार एक भारी भक्त हो गये हैं जिनका नाम हिंदुस्तान वरन और देसों में भी प्रसिद्ध है। यह कबीर साहिब के समय में वर्तमान थे और इस हिसाब से इन का ज़माना ईसवी सन् की चौदहवीं सदी (शतक) ठहरता है।

यह महात्मा भी कबीर साहिब की तरह काशी में पैदा हुए। कहते हैं कि कबीर साहिब के साथ इनका परमार्थी संवाद कई बार हुआ जिस में इन्हों ने वेद शास्त्र आदिक का मंडन और कबीर साहिब ने खंडन किया है। जो हो पर इस ग्रंथ के देखने से तो यही मालूम होता है कि रैदास जी को वेद शास्त्रों में कुछ भी श्रद्धा न थी।

कथा है कि पहले जनम में रैदास जी ब्राम्हन थे। स्वामी रामानंद जी से उपदेश लिया था और उनकी सेवा में लगे रहते थे। एक दिन अपने गुरू के भोजन के लिये एक बनिया से सामग्री ले आये जिसका ब्योहार चमारों के साथ भी था। इस हाल के जानने पर रामानंद जी ने क्रोध से उन्हें सराप दिया कि तुम चमार का जनम पावोगे। इस पर रैदास जी चोला छोड़ कर एक रग्घू नाम चमार के घर घुरविनिया चमारन से पैदा हुए परंतु पूरबले जोग के बल से उनको पिछले जनम की सुध न बिसरी और अपनी मा की छाती में मुँह न लगाया जब तक कि भगवत की आज्ञा से रामानंद जी ने चमार के घर आप जाकर रैदास जी को मा का दूध पीने की समझौती नहीं दी। स्वामी रामानंद जी ने लड़के का नाम रविदास रक्खा, पीछे से लोग उन्हें रैदास रेदास कहने लगे।

जब रैदास जी सयाने हुए तो भक्तों और साधुवों की सेवा में सदा रहने लगे। साधु सेवा में ऐसा मन लग गया कि जो कुछ हाथ आता उन के खिलाने पिलाने और सत्कार में खर्च कर डालते। यह चाल उनके बाप रग्घू को जो चमड़े के रोज़गार से बड़ा धनी हो गया था नहीं सुहाई और रैदास जी को अपने घर से निकाल कर पिछवाड़े की ज़मीन रहने को देदी जहाँ छप्पर तक नहीं था। एक कौड़ी खर्च को नहीं देता था। रैदास जी वहाँ अकेले अपनी स्त्री के साथ बड़े आनंद से रहने लगे, जूता बना कर अपना गुज़र करते और जो समय उस काम से बचता उसे भगवत-भजन में लगाते।

इन का बैराग अनूठा था। भक्तमाल में लिखा है कि इन की तंगी की दशा देख कर मालिक को दया आई और साधु के रूप में रैदास जी के पास आकर उन को पारस पत्थर दिया और उससे जूता सीने के एक लोहे के औज़ार को सोना बना कर दिखा भी दिया। रैदास जी ने उस पत्थर को लेने से इनकार किया,

गिर कर रैदास जी से दीक्षा लो। रैदास जी ने अपने कंधे की खलड़ी को उधेड़ कर जनेऊ दिखलाया कि सच्चा भीतर का जनेऊ यह है।

यह कथा सर्व साधारन में मीरा बाई के भोज के संबंध में प्रसिद्ध है और बहुतों का विश्वास है कि वह चित्तौड़ की रानी जिस ने रैदासजी से उपदेश लिया और उनका नेवता किया मीरा बाई थी पर इसके निर्णय की यहाँ आवश्यकता नहीं है।

यह कथा भी प्रसिद्ध है कि एक बड़े रईस रैदासजी की महिमा सुन कर उन के दर्शन और सतसंग को गये। उन के आश्रम पर पहुँच कर देखा कि एक बूढ़ा चमार और उसके साथ बहुत से और चमार बैठे जूते बना रहे हैं। थोड़ी देर पीछे सतसंग हुआ और उस के उपरांत एक चमार एक बड़े जूते में भर कर रैदास जी का चरनामृत लाया और सब को बाँटा, जब रईस साहिब की पारी आई तो उन्हों ने उसे ले तो लिया पर घिन मान कर अपने सिर से उछाल कर पीछे गिरा दिया जो कि उन के अँगरखे में सूख गया। जब घर लौटे तो शुद्ध होने के लिये कपड़े उतार कर भंगी को दे दिये और आप पंचगव्य से स्नान किया। उसी दिन से उन को गलित कोढ़ होने लगा और भंगी को जिस ने चरनामृत पड़ा हुआ कपड़ा पहिना सोने समान देह निकल आई और चिहरे पर बड़ा तेज आ गया। रईस साहिब ने बहुत कुछ दवा की पर जब अच्छे न हुए तो अपने मुसाहिबों की सलाह से फिर रैदासजी के आश्रम पर चरनामृत मिलने की आसा में गये। उस दिन चरनामृत नहीं बटा तब रईस ने रैदासजी से प्रार्थना की कि चरनामृत मिले। जवाब पाया कि अब जो चरनामृत आवेगा वह केवल पानी होगा उस में दया की मौज शामिल न होगी और मौज पर हमारा बस नहीं है। फिर कुछ दिन पीछे बहुत झुरने पछताने पर रैदास जी की दयादृष्टि से रईस अच्छा होगया।

काशी गवर्मेन्ट संस्कृत पाठशाला के सन १८०७ के एक परीक्षापत्र में नीचे लिखी हुई कथा संस्कृत में अनुवाद करने को छपी थी जिसे हम यहाँ लिखते हैं—

"इस संसार में वही आदमी ऊँचा कहा जाता है जो कि ऊँचा काम करे, ऊँचे घर में पैदा होने से ऊँचा नहीं कहलाता। देखो आग से धूआँ पैदा होता है, वह हवा के संग से आसमान में भी बहुत दूर तक चढ़ जाता है पर लोगों की आँखों में पड़ कर तकलीफ़ ही देता है, इसी लिये लोग धुएँ को बुरा कहते हैं। आग से कभी कभी बहुत लोग जल कर मर जाते हैं गाँव के गाँव राख हो जाते हैं तो भी उस से बहुत फ़ायदा होता है, इस लिये सब लोग उसे पसंद करते हैं। ऊँची जाति में पैदा होने का जो लोग घमंड करते हैं उन्हें अच्छे लोग नादान समझते हैं। बनारस में एक बाम्हन किसी रघुबंसी क्षत्री की ओर से रोज़ गंगा जी को फूल पान और सोपारी चढ़ाने जाता था। एक दिन वह बाम्हन जूता खरीदने के लिये रैदास चमार की दुकान पर गया।

आख़िर को साधु की हठ से लाचार होकर कहा कि छप्पर में खोंस दो। (यह छप्पर रैदास जी ने अपनी कमाई के पैसे से धीरे धीरे बनवा लिया था) जब तेरह महीने पीछे वही साधु जी फिर आये और पत्थर का हाल पूछा तो रैदासजी ने जवाब दिया कि जहाँ खोंस गये थे वहीं देख लो। मैं ने नहीं छुआ है।

इसी तरह एक दिन पूजा की पिटारी में पाँच मोहर निकलीं, रैदास जी उसको देख कर ऐसा डरे माना साँप हो यहाँ तक कि पूजा से भी डरने लगे। तब भगवंत ने आज्ञा की कि जो हमारा प्रसाद है उसका तिरस्कार मत करो जिस पर रैदास जी को मानना पड़ा और फिर जो कुछ इस रीति से मिलता था उसको ले लिया करते थे और उस से एक धर्मशाला और मंदिर भी बनवाया जिस में पूजा करने को बाम्हन रक्खे। यह हालत देख कर पंडितों को जलन पैदा हुई और राजा के यहाँ शिकायत की कि यह चमार होकर बाम्हनों का ढचर बनाये हुए है जिसका उसे अधिकार नहीं है इस लिये दंड का भागी है। राजा ने रैदास जी को बुला कर हाल पूछा और उन के बचन से ऐसा प्रसन्न हुआ कि दंड देने के बदले बड़ा आदर किया।

भक्तमाल में लिखा है कि चित्तौड़ की रानी ने जो काशी में जात्रा के लिये आई थी रैदास जी की महिमा सुन कर उनको अपना गुरू बनाया। यह गति देख कर पंडितों की आग दूनी भड़की और बड़ी धूम मचाई और रानी को पागल ठहराया। रानी ने एक सभा कर के सब पंडितों को और साथही रैदासजी को बुलाया जहाँ बहुत वाद विवाद हुआ—पंडित लोग जाति को बड़ा ठहराते थे और रैदास जी वर्णाश्रम की तुच्छता दिखला कर भगवतभक्ति को प्रधान करते थे; अंत को यह बात तै पाई कि भगवान की मूर्त्ति जो सिंहासन पर बिराजमान थी उस का आवाहन करके बुलाया जाय जिसके पास वह आजाय वही बड़ा। बेचारे पंडितों ने तीन पहर तक बेदध्वनि की और मंत्र पढ़े पर मूरत अपनी जगह से न हिली; जब रैदास जी की पारी आई और उन्हों ने प्रेम और दीनभाव से प्रार्थना की तो मूरत तुरतही सिंहासन छोड़ कर रैदास जी की गोद में आ बैठी—सब देख कर चकित हो गये।

भक्तमाल में रैदास जी की महिमा के दृष्टांत में यह भी बरनन है कि जब चित्तौड़ की रानी जिस का नाम झाली लिखा है अपनी राजधानी को लौटी तो बड़े आदर भाव से रैदासजी को बुलाया और उनके सुशोभित होने के उत्सव में नगर के बाम्हनों को बहुत कुछ दान दिया और अपने यहाँ भोजन करने के लिये उन को नेवता दिया। बाम्हनों ने लालचबस नेवता तो मान लिया परंतु चमार की चेली के घर का बना हुआ भोजन करना धर्म के बिरुद्ध समझ कर कोरा सीधा लेकर अपने हाथ से भोजन बनाया। जब खाने पर बैठे तो देखते क्या हैं कि हर पंगत में दो दो बाम्हनों के बीच में रैदास जी बैठे हैं—इस अचरजी कौतुक पर सब हक्के बक्के हो गये और कितनों ने चरनों पर

रैदासजी की बानी

॥ साखी ॥

हरि सा हीरा छाड़ि कै, करै आन की आस ।
ते नर जमपुर जाहिंगे, सत भापै रैदास ॥ १ ॥
अंतरगति राँचै नहीँ, बाहर कथैँ उदास ।
ते नर जमपुर जाहिंगे, सत भापै रैदास ॥ २ ॥
रैदास कहै जाके हृदै, रहै रैन दिन राम ।
सो भगता भगवंत सम, क्रोध न ब्यापै काम ॥ ३ ॥
जा देखे घिन ऊपजै, नरक कुंड मैँ बास ।
प्रेम भगति सोँ ऊधरे, प्रगटत जन रैदास ॥ ४ ॥
रैदास तूँ कावँच* फली, तुझै न छीपै[†] कोइ ।
तैँ निज नावँ न जानिया, भला कहाँ ते होइ ॥ ५ ॥
रैदास राति न सोइये, दिवस न करिये स्वाद ।
अह-निसि[‡] हरिजी सुमिरिये, छाड़ि सकल प्रतिवाद ॥ ६ ॥

॥ पद ॥

राग रामकली

॥ १ ॥

परचै राम रमै जो कोई ।
या रस परसे दुविध न होई ॥ टेक ॥
जे दीसे ते सकल बिनास ।
अनदीठे नाहीँ विसवास ॥ १ ॥
बरन कहंत कहैँ जे राम ।
सो भगता केवल निःकाम ॥ २ ॥

---

*किवाँच जिस के बदन में छू जाने से खाज पैदा हो कर ददोरे पड़ जाते हैं। †छुए। ‡दिन रात।

बात बात में वहाँ पर गंगापूजा की चर्चा चल पड़ी। रैदास ने कहा कि मैं आप को यों ही जूता देता हूँ, कृपा कर आज मेरी इस सोपारी को भी गंगा जी को चढ़ा देना। वाम्हन ने उस सोपारी को जेब में रख लिया। दूसरे दिन गंगा में नहा धो कर जजमान की सोपारी इत्यादि को चढ़ा कर पीछे से चलती बेरा जेब में से रैदास की सोपारी को निकाल कर दूर से गंगा जी में फेंका। गंगा जी ने पानी में से हाथ ऊँचा कर उस सोपारी को ले लिया। यह तमाशा देख कर वह वाम्हन कहने लगा कि सच है—

"जाति पाँति पूछे नहिँ कोई। हरि को भजै सो हरि को होई॥"

रैदास जी पूरी अवस्था को पहुँच कर अर्थात् १२० बरस के होकर ब्रह्म-पद को सिधारे और उन के पंथ के अनुयाइयों का विश्वास है कि वह कबीर साहिब की भाँति सदेह गुप्त होगये वरन अपनी बानी को भी साथ लेगये!!!

गुजरातप्रान्त में इस मत के लाखों आदमी हैं जो अपने को रविदासी कहते हैं।

थकित भयो गायन अरु नाचन, थाकी सेवा पूजा ।
काम क्रोध ते देह थकित भइ, कहौं कहाँ लौं दूजा ॥१॥
राम जनहुं ना भगत कहाऊँ, चरन पखारूँ न देवा ।
जोइ जोइ करौं उलटि मोहिं बाँधै, ता तें निकट न भेवा ॥२॥
पहिले ज्ञान क किया चाँदना, पाछे दिया बुझाई ।
सुन्न सहज में दोऊ त्यागे, राम न कहुं दुखदाई ॥३॥
दूर बसे षट कर्म सकल अरु, दूरउ कीन्हे सेऊ ।
ज्ञान ध्यान दूर दोउ कीन्हे, दूरिउ छाड़े तेऊ ॥४॥
पाँचो थकित भये हैं जहँ तहँ, जहाँ तहाँ थिति* पाई ।
जा कारन मैं दौरो फिरतो, सो अब घट मैं आई ॥५॥
पाँचो मेरी सखी सहेली, तिन निधि दई दिखाई ।
अब मन फूलि भयो जग महियाँ, आप मैं उलटि समाई ॥६॥
चलत चलत मेरो निज मन थाक्यो, अब मोसे चलो न जाई ।
साईं सहज मिलै सोइ सनमुख, कह रैदास बड़ाई ॥७॥

॥ ३ ॥

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ ।
गावनहार को निकट बताऊँ ॥ टेक ॥
जब लग है या तन की आसा, तब लग करै पुकारा ।
जब मन मिल्यौ आस नहिं तन की, तब को गावनहारा ॥१॥
जब लग नदी न समुद समावै, तब लग बढ़ै हंकारा ।
जब मन मिल्यौ राम सागर सोँ, तब यह मिटी पुकारा ॥२॥
जब लग भगति मुकति की आसा, परम तत्त्व सुनि गावै ।
जहँ जहँ आस धरत है यह मन, तहँ तहँ कछू न पावै ॥३॥
छाड़े आस निरास परम पद, तब सुख सति कर होई ।
कह रैदास जासोँ और करत है, परम तत्त्व अब सोई ॥४॥

*थिति = ठहराव ।

फलकारन फूलै बनराई।
उपजै फल तब पुहुप बिलाई ॥ ३ ॥
ज्ञानहि कारन करम कराई।
उपजै ज्ञान त करम नसाई ॥ ४ ॥
बट क बीज जैसा आकार।
पसर्यौ तीन लोक पासार ॥ ५ ॥
जहँ का उपजा तहाँ बिलाइ।
सहज सुन्नि मैँ रह्यो लुकाइ ॥ ६ ॥
जे मन बिंदै सोई बिंद।
अमा* समय ज्यौँ दीसै चंद ॥ ७ ॥
जल मैँ जैसे तूँबा तिरै।
परिचै[†] पिंड जीव नहिँ मरै ॥ ८ ॥
सो मन कौन जो मन को खाइ।
बिन छोरे तिरलोक समाइ ॥ ९ ॥
मन की महिमा सब कोइ कहै।
पंडित सो जो अनतै रहै ॥ १० ॥
कह रैदास यह परम बैराग।
राम नाम किन[‡] जपहु सभाग ॥ ११ ॥
घृत कारन दधि मथै सयान।
जीवनमुक्ति सदा निरवान ॥ १२ ॥

॥ २ ॥

अब मैँ हार्यौँ रे भाई।
भयौँ सब हाल चाल तै, लोक न बेद बड़ाई ॥टेक॥

। †परिचय हो जाने से पिंड का भेद जान ले तो जीवनमुक्त हो
‡क्यों न।

थकित भयो गायन अरु नाचन, थाकी सेवा पूजा ।
काम क्रोध ते देह थकित भइ, कहौं कहाँ लौं दूजा ॥१॥
राम जनहुँ ना भगत कहाऊँ, चरन पखारूँ न देवा ।
जोइ जोइ करौं उलटि मोहिं बाँधैं, ता तें निकट न भेवा ॥२॥
पहिले ज्ञान क किया चाँदना, पाछे दिया बुझाई ।
सुन्न सहज मैं दोऊ त्यागे, राम न कहुँ दुखदाई ॥३॥
दूर बसे षट कर्म सकल अरु, दूरउ कीन्हे सेऊ ।
ज्ञान ध्यान दूर दोउ कीन्हे, दूरिउ छाड़े तेऊ ॥४॥
पाँचो थकित भये हैं जहँ तहँ, जहाँ तहाँ थिति* पाई ।
जा कारन मैं दौरो फिरतो, सो अब घट मैं आई ॥५॥
पाँचो मेरी सखी सहेली, तिन निधि दई दिखाई ।
अब मन फूलि भयो जग महियाँ, आप मैं उलटि समाई ॥६॥
चलत चलत मेरो निज मन थाक्यो, अब मोसे चलो न जाई ।
साईं सहज मिलै सोइ सनमुख, कह रैदास बड़ाई ॥७॥

॥ ३ ॥

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ ।
गावनहार को निकट बताऊँ ॥ टेक ॥
जब लग है या तन की आसा, तब लग करै पुकारा ।
जब मन मिल्यौ आस नहिं तन की, तब को गावनहारा ॥१॥
जब लग नदी न समुद समावै, तब लग बढ़ै हंकारा ।
जब मन मिल्यौ राम सागर सोँ, तब यह मिटी पुकारा ॥२॥
जब लग भगति मुकति की आसा, परम तत्त्व सुनि गावै ।
जहँ जहँ आस धरत है यह मन, तहँ तहँ कछू न पावै ॥३॥
छाड़ै आस निरास परम पद, तब सुख सति कर होई ।
कह रैदास जासोँ और करत है, परम तत्व अब सोई ॥४॥

---

*स्थिति = ठहराव ।

॥ ४ ॥

राम भगत को जन न कहाऊँ, सेवा करूँ न दासा।
जोग जग्य गुन कछू न जानूँ, ताते रहूँ उदासा ॥ टेक॥
भगत हुआ तो चढ़ै बड़ाई, जोग करूँ जग माने।
गुन हूआ तो गुनी जन कहै, गुनी आप को आने ॥ १ ॥
ना मैं ममता मोह न महिया*, ये सब जाहिं बिलाई।
दोजख भिस्त दोउ सम कर जानौं, दुहुँ ते तरक है भाई ॥२॥
मैं अरु ममता देखि सकल जग, मैं से मूल गँवाई।
जब मन ममता एक एक मन, तबहि एक है भाई ॥ ३ ॥
कृस्न करीम राम हरि राघव, जब लग एक न पेखा।
बेद कतेब कुरान पुरानन, सहज एक नहिं देखा ॥ ४ ॥
जोइ जोइ पूजिय सोइ सोइ काँची, सहज भाव सत होई।
कह रैदास मैं ताहि को पूजूँ, जाके ठावँ नावँ नहिं होई ॥५॥

॥ ५ ॥

अब मेरी बूड़ी रे भाई, ताते चढ़ी लोक बड़ाई ॥ टेक ॥
अति अहंकार उर माँ सत रज तम, ता मैं रह्यौ उरझाई।
कर्मन बझि पर्यौ कछू नहिं सूझै, स्वामी नावँ भुलाई ॥१॥
हम मानौ गुनी जोग सुनि जुगता, महा मुरुख रे भाई।
हम मानो सूर सकल बिधि त्यागी, ममता नहीं मिटाई ॥२॥
हम मानो अखिल† सुन्न मन सोध्यो, सब चेतन सुधि पाई।
ज्ञान ध्यान सबही हम जान्यो, बूझौं कौन सोँ जाई ॥ ३ ॥
हम जानौ प्रेम प्रेम रस जाने, नौबिधि भगति कराई।
स्वाँग देखि सब ही जन लटक्यो, फिरि यौं आन बँधाई ॥४॥

*मथा। †संपूर्ण।

यह तो स्वाँग साच ना जानो, लोगन यह भरमाई ।
स्वच्छ रूप सेली जब पहरी, बोली तब सुधि आई ॥५॥
ऐसी भगति हमारी संतो, प्रभुता इहइ बड़ाई ।
आपन अनत और नहिं मानत, ताते मूल गँवाई ॥६॥
भन रैदास उदास ताहि ते, अब कछु मो पै कस्यो न जाई ।
आपा खोए भगति होत है, तब रहै अंतर उरझाई ॥७॥

॥ ६ ॥

भाई रे भरम भगति सुजान ।
जौ लौं साँच सोँ नहिं पहिचान ॥ टेक ॥
भरम नाचन भरम गायन, भरम जप तप दान ।
भरम सेवा भरम पूजा, भरम सो पहिचान ॥१॥
भरम षट क्रम सकल सहता, भरम गृह बन जानि ।
भरम करि करि करम कीये, भरम की यह बानि ॥२॥
भरम इंद्री निग्रह कीया, भरम गुफा मैं बास ।
भरम तौ लौं जानिये, सुन्न की करै आस ॥३॥
भरम सुद्ध सरीर तौ लौं, भरम नावँ बिनावँ ।
भरम भनि रैदास तौ लौं, जौ लौं चाहै ठावँ ॥४॥

॥ ७ ॥

ज्यौं तुम कारन केसवे, अंतर लव लागी ।
एक अनूपम अनुभवी, किमि होइ बिभागी ॥ टेक ॥
इक अभिमानी चातृगा*, विचरत जग माहीं ।
यद्यपि जल पूरन मही, कहूँ वा रुचि नाहीं ॥ १ ॥
जैसे कामी देखि कामिनी, हृदय सूल उपजाई ।
कोटि बैद बिधि ऊचरै, वा की बिथा न जाई ॥ २ ॥
जो तेहि चाहै सो मिलै, आरत गति होई ।
कह रैदास यह गोप नहिं, जानै सब कोई ॥ ३ ॥

* चातक, पपीहा ।

॥ ८ ॥

आयौं हो आयौं देव तुम सरना ।
जानि कृपा कीजे अपनौ जना ॥ टेक ॥

त्रिविध जोनि वास जम को अगम त्रास,
तुम्हरे भजन बिन भ्रमत फिरौं ।
ममता अहं बिषै मद मातौ,
यह सुख कबहुँ न दुतर* तिरौं ॥ १ ॥
तुम्हरे नावँ बिसास छाड़ी है आन की आस,
संसार धरम मेरो मन न धीजै† ।
रैदास दास की सेवा मानि हो देव विधि देव,
पतित पावन नाम प्रगट कीजै ॥ २ ॥

॥ ९ ॥

भाई रे राम कहाँ मोहिं बताओ ।
सत राम ता के निकट न आओ ॥ टेक ॥
राम कहत सब जगत भुलाना, सो यह राम न होई ।
करम अकरम करुनामय केसो, करता नावँ सु कोई ॥ १ ॥
जा रामहीँ सबै जग जानै, भरम भुले रे भाई ।
आप आप तैँ कोइ न जानै, कहै कौन सो जाई ॥ २ ॥
सत तन लोभ परस जीतै मन, गुना प्रश्न नहिँ जाई ।
अलख नाम जा को ठौर न कतहूँ, क्योँ न कहो समुझाई ॥ ३ ॥
भन रैदास उदास ताहि ते, करता क्योँ है भाई ।
केवल करता एक सही सिर, सत्त राम तेहि ठाईँ ॥ ४ ॥

॥ १० ॥

ऐसो कछु अनुभौ कहत न आवै ।
साहिब मिलै तो को बिलगावै ॥ टेक ॥

*दुस्तर, कठिन । †धीर धरै ।

सब मैं हरि है हरि मैं सब है, हरि अपनो जिन जाना ।
साखी नहीं और कोइ दूसर, जाननहार सयाना ॥ १ ॥
बाजीगर सोँ राचि रहा, बाज़ी का मरम न जाना ।
बाजी झूठ साँच बाजीगर, जाना मन पतियाना ॥ २ ॥
मन थिर होइ तो कोइ न सूझै, जानै जाननहारा ।
कह रैदास बिमल बिबेक सुख, सहज सरूप सँभारा ॥ ३ ॥

॥ ११ ॥

अखिल खिलै नहिं का कहि पंडित, कोइ न कहै समुझाई ।
अबरन बरन रूप नहिं जा के, कहँ लौ लाइ समाई ॥ टेक ॥
चंद सूर नहिं रात दिवस नहिं, धरनि अकास न भाई ।
करम अकरम नहिं सुभ असुभ नहिं, का कहि देहुँ बड़ाई ॥१॥
सीत बायु ऊसन नहिं सरबत*, काम कुटिल नहिं होई ।
जोग न भोग क्रिया नहिं जा के, कहौं नाम सत सोई ॥ २॥
निरंजन निराकार निरलेपी, निरबीकार निसासी ।
काम कुटिलता ही कहि गावैं, हरहर† आवै हाँसी ॥ ३ ॥
गगन‡ धूर§ धूप|| नहिं जा के, पवन पूर नहिं पानी ।
गुन निर्गुन कहियत नहिं जाके, कहो तुम बात सयानी ॥४॥
याही सोँ तुम जोग कहत हो, जब लग आस की पासी¶ ।
छुटै तबहि जब मिलै एकही, भन रैदास उदासी ॥ ५ ॥

॥ १२ ॥

नरहरि** चंचल है मति मेरी। कैसे भगति करूँ मैं तेरी ॥टेक॥
तूँ मोहिं देखै हाैं तोहि देखूँ, प्रीति परस्पर होई ॥ १ ॥
तूँ मोहिं देखै तोहि न देखूँ, यह मति सब बुधि खोई ॥ २ ॥

---

*पानी के पैसा हो कर चूना। †ठठाय के। ‡आकाश। §पृथ्वी। ||तेज, अग्नि। ¶फाँसी। **नरसिंह जो अर्थात ईश्वर के एक अवतार का नाम।

सब घट अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहिं जाना।
गुन सब तोर मोर सब औगुन, कृत उपकार न माना ॥ ३
मैं तैं तोरि मोरि असमझि सोँ, कैसे करि निस्तारा
कह रैदास कृस्न करुनामय, जै जै जगत अधारा ॥ ४

॥ १३ ॥

राम बिन संसय गाँठि न छूटै।
काम किरोध लोभ मद माया, इन पंचन मिलि लूटै ॥टेक॥
हम बड़ कबि कुलीन हम पंडित, हम जोगी संन्यासी।
ज्ञानी गुनी सूर हम दाता, याहु कहे मति नासी ॥ १ ॥
पढ़े गुने कछु समुझि न परई, जौं लैाँ भाव न दरसै।
लोहा हिरन* होइ धैाँ कैसे, जौं पारस नहिं परसै ॥ २ ॥
कह रैदास और असमुझ सी, चालि परे भ्रम भोरे।
एक अधार नाम नरहरि को, जिवन प्रान धन मोरे ॥ ३ ॥

॥ १४ ॥

जब राम नाम कहि गावैगा। तब भेद अभेद समावैगा ॥टेक॥
जे सुख ह्वै या रस के परसे, सो सुख का कहि गावैगा ॥ १ ॥
गुरुपरसाद भई अनुभैा मति, बिष अम्रित सम धावैगा ॥२॥
कहै रैदास मेटि आपा पर, तब वा ठैारहि पावैगा ॥ ३ ॥

॥ १५ ॥

संतो अनिन† भगति यह नाहीं।
जब लग सिरजत मन पाँचो गुन, ब्यापत है या माहीं ॥टेक॥
सोई आन अंतर कर हरि सोँ, अपमारग को आनै।
काम क्रोध मद लोभ मोह की, पल पल पूजा ठानै ॥१॥
सतय सनेह इष्ट अँग लावै, अस्थल अस्थल खेलै।
जो कछु मिलै आन आखत‡ सोँ, सुत दारा सिर मेलै ॥२॥

* सोना। † अनन्य। ‡ अक्षत, कुछ चावल।

हरिजन हरिहि और ना जानै, तजै आन तन त्यागी ।
कह रैदास सोई जन निर्मल, निसि दिन जो अनुरागी ॥ ३ ॥

॥ १६ ॥

भगती ऐसी सुनहु रे भाई। आइ भगति तब गई बड़ाई ॥टेक॥
कहा भयो नाचे अरु गाये, कहा भयो तप कीन्हे ।
कहा भयो जे चरन पखारे, जौं लौं तत्त्व न चीन्हे ॥ १ ॥
कहा भयो जे मूँड़ मुड़ायो, कहा तीर्थ ब्रत कीन्हे ।
स्वामी दास भगत अरु सेवक, परम तत्त्व नहिं चीन्हे ॥ २ ॥
कह रैदास तेरी भगति दूरि है, भाग बड़े सो पावै ।
तजि अभिमान मेटि आपा पर, पिपिलक* ह्वै चुनि खावै ॥३॥

॥ १७ ॥

अब कछु मरम बिचारा हो हरि ।
आदि अंत औसान राम बिन, कोइ न करै निवारा हो हरि ॥टेक॥
जब मैं पंक पंक† अमृत जल, जलहि सुद्ध होइ जैसे ।
ऐसे करम भरम जग बाँध्यो, छूटै तुम बिन कैसे हो हरि ॥१॥
जप तप बिधी निषेध नाम करूँ, पाप पुन्न दोउ माया ।
ऐसे मोहिं तन मन गति बीमुख, जनम जनम डँहकाया‡ हो हरि ॥२॥
ताड़न§ छेदन‖ त्रायन¶ खेदन**, बहु बिधि कर ले उपाई ।
लोनखड़ी†† संजोग बिना जस, कनक कलंक न जाई हो हरि ॥३॥
भन रैदास कठिन कलि के बल, कहा उपाय अब कीजै ।
भव बूड़त भय भीत जगत जन, करि अवलंबन‡‡ दीजै हो हरि ॥४॥

॥ १८ ॥

नरहरि प्रगटसि ना हो प्रगटसि ना हो ।
दीनानाथ दयाल नरहरे ॥ टेक ॥
जनमेउँ तोही ते बिगरान। अहो कछु बूझै बहुरि सयान ॥१॥

---

* पिपीलिका = चींटी । † कीचड़ । ‡ ठगाया । § मारना । ‖ काटना । ¶ रक्षा करना । ** शोक करना, त्याग करना । †† नौसादर । ‡‡ सहारा ।

॥ २१ ॥

कहाँ सूते मुग्ध नर काल के मँझ मुख।
तजिय बस्तु राम चितवत अनेक सुख ॥ टेक ॥
असहज धीरज लोप कृस्न उधरंत कोप,
मदन भुवंग* नाहिँ मंत्र जंता।
बिपम पावक ज्वाल ताहि वार न पार,
लोभ की अयनी† ज्ञान हंता ॥ १ ॥
बिपम संसार ब्याल* ब्याकुल तवै,
मोह गुन विपै सँग बंधभूता‡।
टेरि गुन गारुड़ी§ मंत्र स्रवना दियो,
जागि रे राम कहि कहि के सूता ॥ २ ॥
सकल सिम्रित‖ जिती सत मति कहै तिती,
हैं इनही परम गति परम बेता¶।
ब्रह्म ऋपि नारद संभु सनकादिक,
राम राम रमत गये पार तेता ॥ ३ ॥
जजन जाजन** जाप रटन तीरथ दान,
ओपधी रसिक गदमूल†† देता।
नागदवनि जरजरी राम सुमिरन वरी,
भनत रैदास चेत निमेता‡‡ ॥ ४ ॥

॥ २२ ॥

रामा हो जग जीवन मोरा।
तूँ न बिसारि राम मैं जन तोरा ॥टेक॥
सकट सोच पोच दिन राती।
करम कठिन मोरि जाति कुजाती ॥ १ ॥

---

*साँप। †सेना, फौज। ‡बँधा हुआ। §साँप के बिप उतारने का मंत्र। ‖धर्मशास्त्र। ¶जानने वाला। **यज्ञ करना और कराना। ††रोग की जड़ को पैदा करता है। ‡‡नियम करने वाला।

परिवारि विमुख मोहिँ लागि। कछु समुझि परत नहिँ जागि* ॥२॥
यह भौ विदेस कलिकाल। अहो मैँ आइ पर्यों जमजाल ॥३॥
कबहुक तोर भरोस। जो मैँ न कहूँ तो मोर दोस ॥ ४ ॥
अस कहिये तेऊ न जान। अहो प्रभु तुम सरबस मैँ सयान ॥५॥
सुत सेवक सदा असोच। ठाकुर पितहिँ सब सोच ॥ ६ ॥
रैदास विनवै कर जोरि। अहो स्वामी तुम मोहिँ न खोरि† ॥७॥
सु‡ तौ पुरबला अकरम मोर। बलि जाउँ करौ जिन कोर§ ॥८॥

॥ १८ ॥

त्यौँ तुम कारन केसवे, लालच जिव लागा।
निकट नाथ प्रापत नहीँ, मन मोर अभागा ॥ टेक ॥
सागर सलिल‖ सरोदिका¶, जल थल अधिकाई।
स्वाँति बुंद की आस है, पिउ प्यास न जाई ॥ १ ॥
जौँ रे सनेही चाहिये, चित्त बहु दूरी।
पंगुल फल न पहूँच ही, कछु साध न पूरी ॥ २ ॥
कह रैदास अकथ कथा, उपनिषद** सुनीजै।
जस तूँ तस तूँ तस तुहीँ, कस उपमा दीजै ॥ ३ ॥

॥ २० ॥

गोविंदे भवजल व्याधि अपारा।
ता मैँ सूझै वार न पारा ॥ टेक ॥
अगम घर दूर उरतर, बोलि भरोस न देहू।
तेरी भगति अरोहन संत अरोहन††, मोहिँ चढ़ाइ न लेहू ॥१॥
लोह की नाव पखान बोझी, सुकिरित भाव विहीना।
लोभ तरंग मोह भयो काला, मीन भयो मन लीना ॥२॥
दीनानाथ सुनहु मम बिनती, कवने हेत बिलंब करीजै।
रैदास दास संत चरनन, मोहिँ अब अवलंबन दीजै ॥ ३ ॥

---

*संसार या जगने पर। †दोष न विचारो। ‡सो। §कसर। ‖पानी।
¶तालाब का पानी। **वेद का एक अंग जिस में ब्रह्म का निरूपण है। ††सीढ़ी

॥ २१ ॥

कहाँ सूते मुग्ध नर काल के मँझ मुख ।
तजिय वस्तु राम चितवत अनेक सुख ॥ टेक ॥
असहज धीरज लोप कृस्न उधरंत कोप,
मदन भुवंग* नहिं मंत्र जंता ।
बिषम पावक ज्वाल ताहि वार न पार,
लोभ की अयनी† ज्ञान हंता ॥ १ ॥
विषम संसार व्याल* व्याकुल तवै,
मोह गुन विषै सँग बंधभूता‡ ।
टेरि गुन गारुड़ी§ मंत्र स्रवना दियो,
जागि रे राम कहि कहि के सूता ॥ २ ॥
सकल सिम्रित‖ जिती सत मति कहै तिती,
हैं इनही परम गति परम बेता¶ ।
ब्रह्म ऋषि नारद संभु सनकादिक,
राम राम रमत गये पार तेता ॥ ३ ॥
जजन जाजन** जाप रटन तीरथ दान,
ओषधी रसिक गदमूल†† देता ।
नागदवनि जरजरी राम सुमिरन वरी,
भनत रैदास चेत निमेता‡‡ ॥ ४ ॥

॥ २२ ॥

रामा हो जग जीवन मोरा ।
तूँ न बिसारि राम मैं जन तोरा ॥टेक॥
सकट सोच पोच दिन राती ।
करम कठिन मोरि जाति कुजाती ॥ १ ॥

---

*साँप । †सेना, फौज । ‡बँधा हुआ । §साँप के बिष उतारने का मंत्र । ‖धर्मशास्त्र । ¶जानने वाला । **यज्ञ करना और कराना । ††रोग की जड़ के पैदा करता है । ‡‡नियम करने वाला ।

हरहु बिपति भावै करहु सो भाव ।
चरन न छाँड़ों जाव सो जाय ॥ २ ॥
कह रैदास कछु देहु अलंबन ।
बेगि मिलो जनि करो बिलंबन ॥ ३ ॥

॥ २३ ॥

तेरा जन काहे को बोले ।
बोलि बोलि अपनी भगति को खोले ॥टेक॥
बोलत बोलत बढ़ै बियाधी, बोल अबोलै जाई ।
बोलै बोल अबोल कोप करै, बोल बोल को खाई ॥ १
बोलै ज्ञान मान परि बोलै, बोलै बेद बड़ाई ।
उर मैं धरि धरि जब ही बोलै, तब ही मूल गँवाई ॥ २
बोलि बोलि औरहि समझावै, तब लगि समझ न भाई
बोलि बोलि समझी जब बूझी, काल सहित सब खाई ॥ ३
बोलै गुरु अरु बोलै चेला, बोल बोल की परतिति आई
कह रैदास मगन भयो जबही, तबहि परमनिधि पाई ॥ ४

॥ २४ ॥

ऐसी भगति न होइ रे भाई ।
राम नाम बिन जो कुछ करिये, सो सब भरम कहाई ॥ टेक
भगति न रस दान भगति न कथै ज्ञान ।
भगति न बन मैं गुफा खुदाई ॥ १ ॥
भगति न ऐसी हाँसी भगत्ति न आसापासी ।
भगति न यह सब कुल कान गँवाई ॥२॥
भगति न इंद्री बाँधा भगति न जोग साधा ।
भगति न अहार घटाई ये सब करम कहाई ॥३॥
भगति न इंद्री साधे भगति न बैराग बाँधे ।
भगति न ये सब बेद बड़ाई ॥ ४ ॥

भगति न मूड़ मुड़ाये भगति न माला दिखाये।
भगति न चरन धुवाये ये सब गुनी जन कहाई ॥५॥
भगति न तौ लौं जाना आप को आप बखाना।
जोइ जोइ करै सो सो करम बड़ाई ॥ ६ ॥
आपो गयो तब भगति पाई ऐसी भगति भाई।
राम मिल्यो आपो गुन खोयो रिधि सिधि सबै गँवाई ॥७॥
कह रैदास छूटी आस सब तब हरि ताही के पास।
आतमा थिर भई तब सबही निधि पाई ॥ ८ ॥

॥ २५ ॥

है सब आतम सुख परकास साँचो।
निरंतर निराहार कल्पित ये पाँचो ॥टेक॥
आदि मध्य औसान* एक रस, तार बन्यो हो भाई।
थावर जंगम कीट पतंगा, पूरि रह्यो हरिराई ॥ १ ॥
सर्वेस्वर सर्वांगी सब गति, करता हरता सोई।
सिव न असिव न साध अस सेवक, उनै भाव नहिं होई ॥२॥
धरम अधरम मोच्छ नहिं बंधन, जरा मरन भव नासा।
दृष्टि अदृष्टि गेय† अरु ज्ञाना, एकमेक रैदासा ॥ ३ ॥

(राग गौरी)

॥ २६ ॥

कोई सुमार‡ न देखूँ ये सब उपल§ चोभा।
जा को जेता प्रकास ता को तेति ही सोभा ॥टेक॥
हम हिये सीखि सीखै हम हिये माड़े।
थोरे ही इतराइ चलै पतिसाही‖ छाड़े ॥ १ ॥
अतिही आतुर वह काची ही तोरे।
बूड़े जल पैसे¶ नहीं पड़े रे खोरे ॥ २ ॥

---

*अंत। †जानने योग्य। ‡गिनती। §पत्थर। ‖बादशाही। ¶पैठे।

थोरे थोरे मुसियत परायो धना।
कह रैदास सुन संत जना ॥ ३ ॥

॥ २७ ॥

मरम कैसे पाइव रे।
पंडित कौन कहै समुझाई, जा ते मेरो आवा गमन बिलाई ॥टेक
बहु बिधि धरम निरूपिये, करते देखै सब कोई।
जेहि धरमे भ्रम छूटिहै, सो धरम न चीन्हे कोई ॥१॥
करम अकरम बिचारिये, सुनि सुनि बेद पुरान।
संसा सदा हिरदे बसै, हरि बिन कौन हरै अभिमान ॥ २ ॥
बाहर मूँदि के खोजिये, घट भीतर बिबिध बिकार।
सुची* कौन बिधि होहिँगे, जस कुंजर बिधि ब्यौहार† ॥३॥
सतजुग सत त्रेता तप करते, द्वापर पूजा अचार।
तिहूँ जुगी तीनो द्रुष्टी, कलि केवल नाम अधार ॥४॥
रबि प्रकास रजनी जथा, योँ गत दीसै संसार।
पारस मलि ताँबौ छिपा, कनक होत नहिँ बार‡ ॥ ५ ॥
धन जोबन हरि ना मिलै, दुख दारुन अधिक अपार।
एकै एक वियोगियाँ, ता को जानै सब संसार ॥ ६ ॥
अनेक जतन करि टारिये, टारे न टरै भ्रम पास§।
प्रेम भगति नहिँ ऊपजै, ता ते जन रैदास उदास ॥ ७ ॥

(राग जंगली गौड़ी)

॥ २८ ॥

पहिले पहरे रैन दे बनिजरिया||, तैँ जनम लिया संसार बे
सेवा चूकी राम की, तेरी बालक बुद्धि गँवार बे ॥ १
बालक बुद्धि न चेता तूँ, भूला मायाजाल बे
कहा होइ पाछे पछिताये, जल पहिले न बाँधी पाल बे ॥

*पवित्र। †जैसे हाथी नहा कर फिर अपने ऊपर धूल डाल लेता है। ‡लोह पारस में लगाने से सोना हो जाता है, ताँबा बार भर भी सोना नहीं होता §फाँसी। ||बनजारा, ब्योपारी।

वीस वरस का भया अयाना, थाँभि न सक्का भाव वे ।
जन रैदास कहै वनिजरिया, जनम लिया संसार वे ॥३॥
दूजे पहरे रैन दे वनिजरिया, तूँ निरखत चाल्यौ छाँह वे ।
हरि न दमोदर ध्याइया वनिजरिया, तैँ लेय ना सका नाँव वे ॥४
नाँव न लीया औगुन कीया, जस जोवन दै तान वे ।
अपनी पराई गिनी न काई[*], मंद करम कमान[†] वे ॥५॥
साहिव लेखा लेसी तूँ भरि देसी, भीर परे तुझ ताँह वे ।
जन रैदास कहै वनिजरिया, तूँ निरखत चाला छाँह वे ॥६॥
तीजे पहरे रैन दे वनिजरिया, तेरे ढिलड़े पड़े पिय प्रान वे ।
काया रवनि का करै वनिजरिया, घट भीतर वसे कुजान वे ॥ ७ ॥
एक वसै कायागढ़ भीतर, पहला जनम गँवाय वे ।
अवकी वेर न सुकिरित कीया, वहुरि न यह गढ़ पाय वे ॥८॥
कंपी देह कायागढ़ खाना, फिरि लागा पछितान वे ।
जन रैदास कहै वनिजरिया, तेरे ढिलड़े पड़े परान वे ॥९॥
चौथे पहरे रैन दे वनिजरिया, तेरो कंपन लागो देह वे ।
साहिव लेखा माँगिया वनिजरिया, तेरी छाड़ि पुरानी थेह वे ॥१०॥
छाड़ि पुरानी जिद्द अजाना, वालदि[§] हाँकि सवेरियाँ वे ।
जम के आये वाँधि चलाये, वारी पूगी[‖] तेरियाँ वे ॥११॥
पंथ अकेला वराउ[¶] हेला, किस को देह सनेह वे ।
जन रैदास कसै वनिजरिया, तेरो कंपन लागो देह वे ॥१२॥

॥ २६ ॥

देवा हमन पाप करंत अनंता,
पतितपावन तेरा विरद क्योँ कहंता ॥टेक॥
तोहिं मोहिं मोहिं तोहिं अंतर ऐसा ।
कनक कटक[**] जल तरंग जैसा ॥ १ ॥

*कांई। †कमाया। ‡सहारा। §बरधो। ‖पारी पूरी हागई। ¶बराओ = चुनलो। **कड़ा।

मैं केई नर तुहिं अंतरजामी ।
ठाकुर थैं जन जानिये जन थैं स्वामी ॥
तुम सबन मैं सब तुम माहीं ।
रैदास दास असमझि सी कहै कहाँ हीं ॥३॥

॥ ३० ॥

या रामा एक तूँ दाना, तेरो आदि भेख ना ।
तूँ सुलतान सुलताना, वंदा सकिसता* अजाना ॥ टेक ॥
मैं बेदियानत न नजर दे, दरमंद† बरखुरदार‡ ।
बेअदब बदबखत बौरा, बेअकल बदकार ॥ १ ॥
मैं गुनहगार गरीब गाफिल, कमदिला दिलतार§ ।
तूँ कादिर‖ दरियावजिहावन,¶ मैं हिरसिया हुसियार ॥२॥
यह तन हस्त खस्त खराब, खातिर अंदेसाबिसियार** ।
रैदास दासहि बोलि†† साहिब, देहु अब दीदार ॥ ३ ॥

॥ ३१ ॥

अब हम खूब वतन घर पाया,
ऊँचा खेर‡‡ सदा मेरे भाया ॥ टेक ॥
बेगमपूर सहर का नाम ।
फिकर अँदेस नहीं तेहि ग्राम ॥ १ ॥
नहिं जहाँ साँसत लानत मार ।
हैफ न खता न तरस जवाल ॥ २ ॥
आब न जान रहम औजूद ।
जहाँ गनी§§ आप बसै माबूद‖‖ ॥ ३ ॥
जोई सैलि करै सोई भावै ।
महरम महल मैं को अटकावै ॥ ४ ॥

---

*टूटा हुआ, निर्बल । †दरमाँदा, आजिज़ । ‡अयाना । §सियाह दिल । ‖...। ¶भवसागर लंघाने या पार कराने वाला । **बहुत । ††बुला कर । ‡‡गाँव । §§बेपरवाह । ‖‖जिस की इबादत यने पूजा की जाय ।

कह रैदास खलास* चमारा,
जो उस सहर सो मीत हमारा ॥ ५ ॥

(राग आसावरी)

॥ ३२ ॥

केसवे बिकट माया तोर, ताते बिकल गति मति मोर ॥टेक॥
सुबिषंग सन कराल अहिमुख, ग्रसति सुटल सुभेप।
निरखि माखी बकै व्याकुल, लोभ कालर देख ॥ १ ॥
इंद्रियादिक दुक्ख दारुन, असंख्यादिक पाप ।
तोहि भजन रघुनाथ अंतर, ताहि त्रास न ताप ॥ २ ॥
प्रतिज्ञा प्रतिपाल प्रतिज्ञा चिन्ह, जुग भगति पूरन काम।
आस तोर भरोस है, रैदास जै जै राम ॥ ३ ॥

॥ ३३ ॥

बरजि हो बरजिबी उतूले† माया ।
जग खेया महाप्रबल सबही बस करि ये,
सुर नर मुनि भरमाया ॥ टेक ॥
बालक वृद्ध तरुन अरु सुंदर, नाना भेप बनावै ।
जोगी जती तपी सन्यासी, पंडित रहन न पावै ॥ १ ॥
बाजीगर के बाजी कारन, सब को कौतिग‡ आवै ।
जो देखै सो भूलि रहै, वा का चेला मरम जो पावै ॥ २ ॥
षट ब्रह्मंड लोक सब जीते, येहि बिधि तेज जनावै ।
सब ही का चित चोर लिया है, वा के पीछे लागे धावै ॥३॥
इन बातन से पचि मरियत है, सब को कहै तुम्हारी ।
नेक अटक किन राखो कैसो, मेटो बिपति हमारी ॥४॥
कह रैदास उदास भयो मन, भाजि कहाँ अब जैये ।
इत उत तुम गोबिंद गोसाईं, तुमही माहिं समैये ॥ ५ ॥

*खालिस । †अतुल्य । ‡कौतुक ।

॥ ३४ ॥

राम मैं पूजा कहा चढ़ाऊँ ।
फल अरु फूल अनूप न पाऊँ ॥ टेक ॥
थनहर दूध जो बछरू जुठारी ।
पुहुप भँवर जल मीन बिगारी ॥ १ ॥
मलयागिर बेधियो भुअंगा ।
विष अम्रित दोउ एकै संगा ॥ २ ॥
मनही पूजा मनही धूप ।
मनही सेऊँ सहज सरूप ॥ ३ ॥
पूजा अरचा न जानूँ तेरी ।
कह रैदास कवन गति मेरी ॥ ४ ॥

॥ ३५ ॥

तुझ चरनारबिंद भँवर मन ।
पान करत मैं पायो रामधन ॥ टेक ॥
संपति बिपति पटल माया घन ।
ता मैं मगन होइ कैसे तेरो जन ॥ १
कहा भयो जे गत तन छन छन,
प्रेम जाइ तौ डरै तेरो निज जन ॥ २
प्रेमरजा* लै राखो हृदै धरि,
कह रैदास छूटिबो कवन परि ॥ ३ ॥

॥ ३६ ॥

बंदे जानि साहिब गनी[1]।
समझि बेद कतेब बोलै काबे[2] मैं क्या मनी ॥ टेक ॥
स्याही सपेदी तुरँगी नाना रंग बिसाल वे ।
नापैद तैं पैदा किया पैमाल करत न बार वे ॥ १ ॥

*आशा या प्रेम का रज अर्थात् धूर । [1]परवाह, धनी । [2]मुसलमानों के तीर्थ ।

ज्वानी जुमी* जमाल सूरत देखिये थिर नाहिं वे ।
दम छ सै सहस इकइस† हर दिन खजाने थैं जाहिं वे ॥२॥
मनी मारे गर्व गाफिल वेमेहर वेपीर वे ।
दरी खाना‡ पड़ै चोवा§ होइ नहीं तकसीर वे ॥ ३ ॥
कुछ गाँठि खरची मिहर तोसा, खैर खुबीहा थोर वे ।
तजि वद्‌वा‖ वेनजर कमदिल, करि खसम कान वे ।
रैदास की अरदास सुनि, कछु हक हलाल पिछान वे ॥४॥

॥ ३७ ॥

सु कछु विचाख्यो तातैं मेरो मन थिर ह्वै गयो ।
हरि रँग लाग्यो तब वरन पलटि भयो ॥टेक॥

जिन यह पंथी पंथ चलावा ।
अगम गवन मैं गम दिखलावा ॥ १ ॥
अवरन वरन कहै जनि कोई ।
घट घट व्यापि रह्यो हरि सोई ॥
जेइ पद सुन नर प्रेम पियासा ।
सो पद रमि रह्यो जन रैदासा ॥ २ ॥

॥ ३८ ॥

माधो संगत सरति¶ तुमारी, जगजीवन किस्न मुरारी ॥टेक॥
तुम मखतूल** चतुरभुज, मैं वपुरो जस कीरा ।
पीवत डाल फूल फल अम्रित, सहज भई मति हीरा ॥१॥
तुम चंदन हम अरँड बापुरो, निकट तुमारी वासा ।
नीच विरिछ ते ऊँच भये हैं, तेरी वास सुवासन वासा ॥२॥

---

* जोबन । † इक्कीस हज़ार छ सैा स्वास दिन रात में चलते हैं । ‡ दरगाह ।
§ छड़ी की मार । ‖ दग़ा । ¶ भाती है । ** धंग ।

जाति भी ओछी जनम भी ओछा, ओछा करम हमा
हम रैदास रामराई को, कह रैदास विचारा ॥ ३ ॥

॥ ३६ ॥

माधो अविद्या हित कीन्ह,
ता ते मैं तोर नाम न लीन्ह ॥टेक॥
मृग मीन भृंग पतंग कुंजर, एक दोस विनास।
पंच व्याधि असाधि यह तन, कौन ता की आस* ॥ १
जल थल जीव जहाँ तहाँ लौं, करम न या सन जा
मोह पासी† अबंध बंध्यो, करिये कौन उपाई ॥ २
त्रिगुन जोनि अचेत भ्रम भरमे, पाप पुन्न न सोच।
मानुखा औतार दुरलभ, तहूँ संकट पोच ॥ ३ ॥
रैदास उदास मन भौ, जप न तप गुन ज्ञान।
भगत जन भवहरन कहिये, ऐसे परमनिधान ॥ ४ ॥

॥ ४० ॥

देहु कलाली एक पियाला, ऐसा अवधू है मतवाला ॥टे
हे रे कलाली तैं क्या किया, सिरका सा तैं प्याला दिया ॥ १
कहै कलाली प्याला देऊँ, पीवनहारे का सिर लेऊँ ॥ २
चंद सूर दोउ सनमुख होई, पीवै प्याला मरै न कोई ॥ ३
सहज सुन्न मैं भाठी सरवे, पावै रैदास गुरुमुख दरवे ॥ ४

॥ ४१ ॥

भाई रे सहज बंदो लोई, बिन सहज सिद्धि न होई।
लौन मन जो जानिये, तब कीट भृंगी होई ॥टेक॥
पर चीन्हे नहीं रे, और को उपदेस।
ते तुम आयो रे भाई, जाहुगे किस देस ॥ १

*हिरन, मछली, भौंरा, पतंगा, हाथी, इन का एक एक इंद्री के वेग से नाश
है तो तन जोकि पाँचो इन्द्रियों के वशीभूत उसका क्या ठिकाना। †फाँसी

कहिये तो कहिये काहि कहिये, कहाँ कौन पतियाइ।
रैदास दास अजान ह्वै करि, रह्यो सहज समाइ ॥ २ ॥

(राग सोरठ)

॥ ४२ ॥

ऐसी मेरी जाति विख्यात चमारं।
हृदय राम गोविंद गुनसारं ॥ टेक ॥
सुरसरि जल कृत बारुनी रे*,
जेहि संत जन नहिं करत पानं।
सुरा अपवित्र तिनि गंगजल आनिये,
सुरसरि मिलत नहिं होत आनं[†] ॥ १ ॥
ततकरा[‡] अपवित्र कर मानिये,
जैसे कागदगर[§] करत विचारं।
भगवत भगवंत जब ऊपरे लेखिये,
तब पूजिये करि नमस्कारं ॥ २ ॥
अनेक अधम जिव नाम गुन ऊधरे,
पतित पावन भये परसि सारं।
भनत रैदास ररंकार गुन गावते,
संत साधू भये सहज पारं ॥ ३ ॥

॥ ४३ ॥

पार गया चाहै सब कोई,
रहि उर वार पार नहिं होई ॥टेक॥
पार कहै उर वार से पारा।
बिन पद परचे भ्रमै गँवारा ॥ १ ॥

---

*गंगाजल से जो शराब बनाई जाय तो भी उसे साधु लोग नहीं पीयेंगे।
†अगर वही शराब गंगा में डाल दी जाय तो वह गंगाजल हो जाती है।
‡तत्काल। §लेखक।

पार परम पद मंझ मुरारी ।
ता मँ आप रमै वनवारी ॥ २ ॥
पूरन ब्रह्म वसै सव ठाइँ ।
कह रैदास मिले सुख साइँ ॥ ३ ॥

॥ ४४ ॥

बापुरे। संत रैदास कहै रे ।
ज्ञान बिचार चरन चित लावै, हरि की सरनि रहै रे ॥टेक
पाती तोड़े पूजि रचावै, तारन तरन कहै रे ।
मूरति माहिँ बसै परमेसुर, तौ पानी माहिँ तिरै रे ॥१
त्रिविध संसार कौन बिधि तिरबौ, जे दृढ़ नाव न गहे रे
नाव छाड़ि दे डूँगे* बसे, तौ दूना दुःख सहे रे ॥ २
गुरु को सबद अरु सुरति कुदाली, खोदत कोई रहै रे
राम कहहु कै न बाढ़ै आपो, सोने कूल वहै रे ॥ ३ ।
झूठी माया जग डहकाया, तौ तिन† ताप दहै रे ।
कह रैदास राम जपि रसना, काहु के सँग न रहै रे ॥४॥

॥ ४५ ॥

यह अँदेस सोच जिय मेरे । निसिबासर गुन गाऊँ तेरे ॥टेक॥
तुम चिंतत मेरी चिंतहु जाई । तुम चिंतामनि हौ इक नाईँ ॥१॥
भगत हेत का का नहिँ कीन्हा । हमरी बेर भये बलहीना ॥२॥
कह रैदास दास अपराधी । जेहि तुम द्रवौ सो भगति न साधी॥३॥

॥ ४६ ॥

रामराय का कहिये यह ऐसी । जन की जानत हौ जैसी तैसी ॥टेक॥
मीन पकरि काट्यो अरु फाट्यो, बाँटि कियो बहु बानी ।
खंड खंड करि भोजन कीन्हो, तहउँ न बिसर्यो पानी ॥ १ ॥
हमैं बाँधे मोह फाँसा से, हम तो को प्रेम जेवरिया बाँधे ।
छुटन के जतन करत हौँ, हम छूटे तो को आराधे ॥२॥

---

*डाँगी । †तीन ।

कह रैदास भगति इक बाढ़ी, अब का की डर डरिये ।
जा डर को हम तुम को सेवौं, सो दुख अजहूँ मरिये ॥ ३ ॥

॥ ४७ ॥

रे मन माछला संसार समुदे, तूँ चित्र विचित्र विचारि रे ।
जेहि गाले गलिये ही मरिये, सो सँग दूरि निवारि रे ॥ टेक ॥
जम छै डिगन* डोरि छै कंकन, पर तिया† लागो जानि रे ।
होइ रस लुबुध‡ रमै यों मूरख, मन पछितावै अजान रे ॥१॥
पाप गुलीचा§ धरम निबोली,‖ देखि देखि फल चीख रे ।
परतिरिया सँग भलो जौं होवै, तो राजा रावन देख रे ॥२॥
कह रैदास रतनफल कारन, गोविंद का गुन गाइ रे ।
काँचे कुंभ भरो जल जैसे, दिन दिन घटतो जाइ रे ॥३॥

॥ ४८ ॥

रे चित चेत अचेत काहे, बालक को देख रे ।
जाति ते कोई पद नहिं पहुँचा, रामभगति विसेख रे ॥टेक॥
खटक्रम सहित जे विप्र होते, हरिभगति चित दृढ़ नाहिं रे ।
हरि की कथा सुहाय नाहीं, सुपच तूलै ताहि रे¶ ॥१॥
मित्र शत्रु अजात सब ते, अंतर लावै हेत रे ।
लाग वा की कहाँ जानै, तीन लोक पवेत रे ॥ २ ॥
अजामिल गज गनिका तारी, काटी कुंजर की पास रे ।
ऐसे दुरमत मुक्त कीये, तो क्यों न तरै रैदास रे ॥ ३ ॥

॥ ४९ ॥

रथ को चतुर चलावन हारो ।
खिन हाँकै खिन उभटै** राखै, नहीं आन को सारो ॥टेक॥
जब रथ थकै सारथी थाकै, तब को रथहि चलावै ।
नाद बिंद ये सबही थाके, मन मंगल नहिं गावै ॥१॥

---

*बंसी लगाने वाला, मछली मारने वाला। †पराई स्त्री। ‡लुभाय कर। §एक मीठे फल का नाम। ‖नीम का फल जो कड़ुवा होता है। ¶वह डोम के तुल्य है। **दूसरे लोक पर।

कह रैदास प्रकास परम पद, का जप तप बिधि पूजा
एक अनेक अनेक एक हरि, कहौं कौन बिधि दूजा ॥४

॥ ५५ ॥

थोथो जनि पछोरो रे कोई।
जोइ रे पछोरो जा मैं निज कन होई ॥टेक॥
थोथी काया थोथी माया।
थोथा हरि बिन जनम गँवाया ॥ १ ॥
थोथा पंडित थोथी बानी।
थोथी हरि बिन सबै कहानी ॥ २ ॥
थोथा मंदिर भोग बिलासा।
थोथी आन देव की आसा ॥ ३ ॥
साचा सुमिरन नाम बिसासा*।
मन बच कर्म कहै रैदासा ॥ ४ ॥

—:o:—

(राग भैरो)

॥ ५६ ॥

ऐसा ध्यान धरौं बरो बनवारी,
मन पवन दै सुखमन नारी ॥टेक॥
सो जप जपौं जो बहुरि न जपना।
सो तप तपौं जो बहुरि न तपना ॥ १ ॥
सो गुरु करौं जो बहुरि न करना।
ऐसो मरौं जो बहुरि न मरना ॥ २ ॥
उलटी गंग जमुन मैं लावौं।
बिनहीं जल मंजन ह्वै पावौं ॥ ३ ॥
लोचन भरि भरि बिंब निहारौं।
जोति बिचारि न और बिचारौं ॥ ४ ॥

* बिदवास।

पिंड परे जिव जिस घर जाता ।
सबद अतीत अनाहद राता ॥ ५ ॥
जा पर कृपा सोई भल जानै ।
गूँगो साकर* कहा बखानै ॥ ६ ॥
सुन्न मँडल मैँ मेरा वासा ।
ता ते जिव मैँ रहौँ उदासा ॥ ७ ॥
कह रैदास निरंजन ध्यावौँ ।
जिस घर जावँ सो बहुरि न आवौँ ॥ ८ ॥

॥ ५७ ॥

अविगति नाथ निरंजन देवा ।
मैँ क्या जानूँ तुम्हरी सेवा ॥टेक॥
बाँधूँ न बंधन छाऊँ न छाया ।
तुमहीँ सेऊँ निरंजनराया ॥ १ ॥
चरन पताल सीस असमाना ।
सो ठाकुर कैसे सँपुट† समाना ॥ २ ॥
सिव सनकादिक अंत न पाये ।
ब्रह्मा खोजत जनम गँवाये ॥ ३ ॥
तोड़ूँ न पाती पूजूँ न देवा ।
सहज समाधि करूँ हरि सेवा ॥ ४ ॥
नख प्रसाद जाके सुरसरि‡ धारा ।
रोमावली अठारह भारा§ ॥ ५ ॥
चारो वेद जाके सुमिरत साँसा ।
भगति हेत गावै रैदासा ॥ ६ ॥

*शक्कर, चीनी । †डब्बा । ‡कथा है कि भगीरथ की तपस्या से विष्णु के अँगूठे से साठ हज़ार सगर के लड़कों के तारने के लिये गंगा पृथ्वी पर आई । §अठारह लोक ।

॥ ५८ ॥

भेष लियो पै भेद न जान्यो ।
अमृत लेइ विषै सो मान्यो ॥टेक॥
काम क्रोध मैं जनम गँवायो ।
साधु सँगति मिलि राम न गायो ॥ १ ॥
तिलक दियो पै तपनि न जाई ।
माला पहिरे घनेरी लाई ॥ २ ॥
कह रैदास मरम जो पाऊँ ।
देव निरंजन सत कर ध्याऊँ ॥ ३ ॥

—:०:—

(राग बिलावल)

॥ ५६ ॥

का तूँ सोवै जाग दिवाना ।
झूठो जिउन* सच्च करि जाना ॥ टेक ॥
जिन जनम दिया सो रिजक† उमड़ावै,
घट घट भीतर रहट चलावै ।
करि बंदगी छाड़ि मैं मेरा,
हृदय करीम सँभारि सवेरा ॥१॥
जो दिन आवै सो दुख मैं जाई,
कीजे कूच रह्यो सच नाहीं ।
संगि चली है हम भी चलना,
दूर गवन सिर ऊपर मरना ॥२॥
जो कछु बोया लुनिये‡ सोई,
ता मैं फेर फार कस होई ।
छाड़िय कूर भजै हरि चरना,
ताको मिटै जनम अरु मरना ॥३॥

*जीवन । †जीविका । ‡काटिये ।

आगे पंथ खरा है झीना,
खाँडे धार जैसा है पैना* ।
जिस ऊपर मारग है तेरा,
पंथी पंथ सँवार सवेरा ॥४॥
क्या तैं खरचा क्या तैं खाया,
चल दरहाल† दिवान बुलाया ।
साहिब तो पै लेखा लेसी,
भीड़ पड़े तूँ भरि भरि देसी ॥ ५ ॥
जनम सिराना किया पसारा,
सूझि पर्यो चहुँ दिसि अँधियारा ।
कह रैदास अज्ञान दिवाना,
अजहूँ न चेतहु नीफँद‡ खाना§ ॥ ६ ॥

॥ ६० ॥

खालिक सिकस्ता‖ मैं तेरा ।
दे दीदार उमेदगार , बेकरार जिव मेरा ॥टेक॥
औवल आखिर इलाह, आदम फरिस्ता बंदा ।
जिसकी पनह¶ पीर पैगंबर, मैं गरीब क्या गंदा ॥ १ ॥
तू हाजरा हजूर जोग इक, अवर नहीं है दूजा ।
जिसके इसक आसरा नाहीं, क्या निवाज क्या पूजा ॥ २ ॥
नालीदोज़** हनोज़†† बेवखत§§, कमिं‖‖ खिजमतगार तुम्हारा।
दरमाँदा दर ज्वाब न पावै, कह रैदास बिचारा ॥ ३ ॥

॥ ६१ ॥

मैं बेदनि कासनि¶¶ आखूँ,
हरि बिन जिव न रहै कस राखूँ ॥टेक॥

---

*तेज़ । †तुरत । ‡निर्बंध । §घर । ‖टूटा हुआ, निर्बल । ¶ पनाह, रक्षा ।
**जूता सीनेवाला यानी चमार । ††अब तक । §§अभागी । ‖‖कमीना ।
¶¶किस से ।

जिव तरसै इक दंग बसेरा,
करहु सँभाल न सुर मुनि मेरा।
बिरह तपै तन अधिक जरावै,
नींद न आवै भोज न भावै ॥ १ ॥
सखी सहेली गरब गहेली,
पिउ की बात न सुनहु सहेली।
मैं रे दुहागनि अघ कर जानी,
गया सो जोबन साध न मानी ॥ २ ॥
तू साईं औ साहिब मेरा,
खिजमतगार बंदा मैं तेरा।
कह रैदास अँदेसा येही,
बिन दरसन क्यौं जिवहिं सनेही ॥ ३ ॥

॥ ६२ ॥

हरि बिन नहिं कोइ पतित पावन, आनहिं ध्यावे रे।
हम अपूज्य पूज्य भये हरि ते, नाम अनूपम गावे रे ॥टेक॥
अष्टादस व्याकरन बखानैं, तीन काल षट जीता रे।
प्रेम भगति अंतरगति नाहीं, ता ते धानुक* नीका रे ॥१॥
ता ते भलो स्वान को सत्रू†, हरि चरनन चित लावै रे।
मुआ मुक्त वैकुंठ बास, जिवत यहाँ जस पावै रे ॥ २ ॥
हम अपराधी नीच घर जनमे, कुटुँब लोक करै हाँसी रे।
कह रैदास राम जपु रसना‡, कटै जनम की फाँसी रे ॥ ३ ॥

॥ ६३ ॥

गोविंदे तुम्हारे से समाधि लागी,
उर भुअंग भस्म अंग संतत वैरागी§ ॥ टेक ॥

---

*नाम एक नीच जाति का, धुनिया। †डोम। ‡जीभ। §शिव जी को "सदा जोगी" कहा है।

जाके तीन नैन अमृत बैन, सीस जटाधारी।
कोटि कलप ध्यान अलप, मदन अंतकारी* ॥ १ ॥
जाके लील बरन अकल ब्रह्म, गले रुंडमाला।
प्रेम मगन फिरत नगन, संग सखा बाला ॥ २ ॥
अस महेस बिकट भेस, अजहूँ दरस आसा।
कैसे राम मिलौं तोहि, गावै रैदासा ॥ ३ ॥

॥ ६४ ॥

सो कहा जानै पीर पराई।
जाके दिल मैं दरद न आई ॥ टेक ॥
दुखी दुहागिनि होइ पियहीना,
नेह निरति करि सेव न कीना।
स्याम प्रेम का पंथ दुहेला,
चलन अकेला कोइ संग न हेला ॥ १ ॥
सुख की सार सुहागिनि जानै,
तन मन देय अंतर नहिं आनै।
आन सुनाय और नहिं भाषै,
रामरसायन रसना चाखै ॥ २ ॥
खालिक तौ दरमंद† जगाया,
बहुत उमेद जवाब न पाया।
कह रैदास कवन गति मेरी,
सेवा बंदगी न जानूँ तेरी ॥३॥

—:o:—

(राग टोड़ी)

॥ ६५ ॥

[व]न जस माधो तेरा, तुम दारुन अघमोचन मेरा ॥ टेक ॥
[की]रति तेरी पाप बिनासे, लोक बेद यौं गावै।
[जौ]ँ हम पाप करत नहिँ भूधर, तौ तूँ कहा नसावै ॥ १ ॥

---

*अंत अर्थात नाश करनेवाले। †दरमांदा, आजिज़।

जब लग अंग पंक* नहिं परसे, तो जल कहा पखारै
मन मलीन विषया रस लंपट, तो हरि नाम सँभारै ॥ २
जो हम विमल हृदय चित अंतर, दोष कौन पर धरिहौ
कह रैदास प्रभु तुम दयाल हो, अबँध मुक्ति का करिहौ ॥३

—:o:—

(राग गौड़)

॥ ६६ ॥

आज दिवस† लेऊँ बलिहारा ।
मेरे घर आया राम का प्यारा ॥ टेक ॥
आँगन बँगला भवन भयो पावन ।
हरिजन बैठे हरिजस गावन ॥ १ ॥
करूँ डंडवत चरन पखारूँ ।
तन मन धन उन ऊपरि वारूँ ॥ २ ॥
कथा कहैं अरु अर्थ बिचारैं ।
आप तरैं औरन को तारैं ॥ ३ ॥
कह रैदास मिलैं निज दास,
जनम जनम कै काटै पास ॥ ४ ॥

॥ ६७ ॥

ऐसे जानि जपो रे जीव ।
जपि ल्यो राम न भरमो जीव ॥ टेक ॥
गनिका थी किस करमा जोग ।
परपूरुष सो रमता भोग ॥ १ ॥
निसि बासर दुस्करम कमाई ।
राम कहत बैकुंठे जाई ॥ २ ॥

*कीचड़ । †दिन ।

नामदेव कहिये जाति कै ओछ* ।
जाको जस गावै लोक ॥ ३ ॥
भगति हेत भगता के चले ।
अंकमाल ले बीठल मिले† ॥ ४ ॥
कोटि जग्य जो कोई करै ।
राम नाम सम तउ न निस्तरै ॥ ५ ॥
निरगुन का गुन देखो आई ।
देही सहित कबीर सिधाई‡ ॥ ६ ॥
मेर कुचिल जाति कुचिल मैं बास ।
भगत चरन हरिचरन निवास ॥ ७ ॥
चारिउ बेद किया खंडौति ।
जन रैदास करै डंडौति ॥ ८ ॥

—:o:—

(राग सारंग)

॥ ६८ ॥

जग मैं बेद बैद मानीजै ।
इन मैं और अकथ कछु औरै,
कहौ कौन परि कीजै ॥ टेक ॥
भौजल ब्याधि असाधि प्रबल अति,
परम पंथ न गहीजै ॥ १ ॥
पढ़े गुने कछु समुझि न परई,
अनुभव पद न लहीजै ॥ २ ॥

* नामदेव भक्त ओछी जाति के अर्थात छीपी थे। † बीठल भक्त जाति के माली थे एक दिन ध्यान में लगे रहने से राजा के पास हार न पहुँचा सके सो भगवान ने आप उन का रूप धर कर हार पहुँचा दिया। ‡ कथा है कि कबीर साहिब देह समेत परलोक को सिधारे [देखो कबीर साहिब का जीवन-चरित्र उन की शब्दावली के भाग १ में जो इस प्रेस में छपी है]

चखविहीन कर तारि चलतु हैं*,
तिनहिँ न अस भुज दीजै ॥ ३ ॥
कह रैदास विवेक तत्त बिनु,
सब मिलि नरक परीजै ॥ ४ ॥

—:o:—

(राग कानड़ा)

॥ ६९ ॥

माया मोहिला कान्हा, मैँ जन सेवक तेरा ॥ टेक ॥
संसार प्रपंच मैँ व्याकुल परमानंदा ।
त्राहि त्राहि अनाथ गोविंदा ॥ १ ॥
रैदास विनवै कर जोरी ।
अविगत नाथ कवन गति मोरी ॥ २ ॥

॥ ७० ॥

चल मन हरि चटसाल पढ़ाऊँ ॥ टेक ॥
गुरु की साटि ज्ञान का अच्छर ।
बिसरै तौ सहज समाधि लगाऊँ ॥ १ ॥
प्रेम की पाटी सुरति की लेखनि ।
ररौ ममौ लिखि आँक लखाऊँ ॥ २ ॥
येहि विधि मुक्त भये सनकादिक ।
हृदय विचार प्रकास दिखाऊँ ॥ ३ ॥
कागद कँवल मति मसि करि निर्मल ।
बिन रसना निसदिन गुन गाऊँ ॥ ४ ॥
राम भजु भाई ।
साखि दे बहुरि न आऊँ ॥ ५ ॥

* ... की ताली के इशारे पर चलते हैं यही हाल

(राग केदारा)

॥ ७१ ॥

कहु मन राम नाम सँभारि ।
माया के भ्रम कहा भूल्यो, जाहुगे कर झारि ॥ टेक ॥
देखि धौं इहाँ कौन तेरो, सगा सुत नहिं नारि ।
तोरि उतँग सब दूरि करिहैं, देहिंगे तन जारि ॥ १ ॥
प्रान गये कहो कौन तेरा, देखि सोच विचारि ।
बहुरि येहि कलि काल नाहीं, जीति भावे हारि ॥ २ ॥
यहु माया सब थोथरी रे, भगति दिस प्रतिहारि ।
कह रैदास सत बचन गुरु के, सो जिव ते न बिसारि ॥३॥

॥ ७२ ॥

हरि को टाँडो लादे जाइ रे, मैं बनिजारो राम को ।
रामनाम धन पाइयो, ता ते सहज करूँ ब्योहार रे ॥टेक॥
औघट घाट घनो घना रे, निरगुन बैल हमार रे ।
रामनाम धन लादियो, ता ते विषय लाद्यो संसार रे ॥ १ ॥
अंतेही धन धर्‍यो रे, अंतेहि ढूँढ़न जाइ रे ।
अनत को धरो न पाइये, ना ते चाल्यो मूल गँवाइ रे ॥ २ ॥
रैन गँवाई सोइ करि, दिवस गँवायो खाइ रे ।
हीरा यह तन पाइ करि, कौड़ी बदले जाइ रे ॥ ३ ॥
साधुसंगति पूँजी भई रे, वस्तु भई निर्मोल रे ।
सहज बरदवा* लादि करि, चहुँ दिसि टाँडो मोल रे ॥ ४ ॥
जैसा रंग कुसुंभ का रे, तैसा यह संसार रे ।
रमइया रंग मजीठ का, ता ते भन रैदास विचार रे ॥ ५ ॥

॥ ७३ ॥

प्रीति सुधारन आव ।
तेजसरूपी सकल सिरोमनि, अकल निरंजनराव ॥टेक॥

---

*बैल ।

पंच संगी मिलि पीड़ियो प्रान यों,
जाय न सक्यो वैराग भागा।
पुत्रवरग कुल बंधु ते भारजा,
भखै दसो दिसा सिर काल लागा ॥ २ ॥
भगति चितऊं तो मोह दुख व्यापही
मोह चितऊँ तो मेरी भगति जाई।
उभय संदेह मोहिं रैन दिन व्यापही,
दीनदाता करूँ कवन उपाई ॥ ३ ॥
चपल चेतो नहीं बहुत दुख देखियो,
काम बस मोहिहो करम फंदा।
सक्ति संबंध कियो ज्ञान पद हरि लियो,
हृदय विस्वरूप तजि भयो अंधा ॥ ४ ॥
परम प्रकास अविनासी अघ मोचना,
निरखि निज रूप बिसराम पाया।
बंदत रैदास वैराग पद चिंतना,
जपौ जगदीस गोविंद राया ॥ ५ ॥

॥ ७६ ॥

तेरी प्रीति गोपाल सों जनि घटै हो।
मैं मोलि महँगी लई तन सटै हो ॥ टेक ॥
हृदय सुमिरन करूँ नैन अवलोकनो
स्रवनों हरि कथा पूरि राखूँ।
मन मधुकर करौं चित्त चरना धरौं,
राम रसायन रसना चाखूँ ॥ १ ॥
साधु संगत विना भाव नहिं ऊपजै,
भाव भगति क्यों होइ तेरी।

वंदत रैदास रघुनाथ सुनु वीनती,
गुरुपरसाद कृपा करौ मेरी ॥ २ ॥

॥ ७७ ॥

कवन भगति ते रहै प्यारो पाहुनो रे ।
घर घर देखौं मैं अजब अभावनो रे ॥ टेक
मैला मैला कपड़ा केता एक धोऊँ ।
आवै आवै नींदहि कहाँ लों सोऊँ ॥ १ ॥
ज्यों ज्यों जोड़ै त्यों त्यों फाटै ।
झूठै सबनि जरै उठि गयो हाटै ॥ २ ॥
कह रैदास परो जब लेख्यो ।
जोई जोई कियो रे सोई सोई देख्यो ॥ ३ ॥

॥ ७८ ॥

मैं का जानूँ देव मैं का जानूँ ।
मन माया के हाथ विकानूँ ॥ टेक ॥
चंचल मनुवाँ चहुँ दिसि धावै ।
पाँचो इंद्री थिर न रहावै ॥ १ ॥
तुम तो आहि जगतगुरु स्वामी ।
हम कहियत कलिजुग के कामी ॥ २ ॥
लोक वेद मेरे सुकृत बड़ाई ।
लोक लीक मो पै तजी न जाई ॥ ३ ॥
इन मिलि मेरो मन जो बिगार्यो ।
दिन दिन हरि सों अंतर पार्यो ॥ ४ ॥
सनक सनंदन महामुनि ज्ञानी ।
सुक नारद व्यास यह जो बखानी ॥ ५ ॥
गावत निगम उमापति स्वामी ।
सेस सहस मुख कीरति गामी ॥ ६ ॥

जहाँ जाउँ तहाँ दुख की रासी।
जो न पतियाइ साधु हैं साखी ॥ ७ ॥
जम दूतन बहु विधि करि मार्यो।
तऊ निलज अजहूँ नहिं हार्यो ॥ ८ ॥
हरिपद विमुख आस नहिं छूटै।
ताते तृस्ना दिन दिन लूटै ॥ ९ ॥
हु विधि करम लिये भटकावै।
तुम्हैँ दोप हरि कौन लगावै ॥ १० ॥
ल रामनाम नहिं लीया।
संतति विपय स्वाद चित दीया ॥ ११ ॥
रैदास कहाँ लगि कहिये।
बेन जगनाथ बहुत दुख सहिये ॥ १२ ॥

॥ ७९ ॥

त्राहि त्राहि त्रिभुवनपति पावन।
अतिसय सूल सकल बलि जावन ॥ टेक ॥
काम क्रोध लंपट मन मोर।
कैसे भजन करूँ मैं तोर ॥ १ ॥
विपम विहंगम दुंद नकारी।
असरनसरन सरन भैहारी ॥ २ ॥
देव देव दरवार दुआरै।
राम राम रैदास पुकारै ॥ ३ ॥

॥ ८० ॥

दरसन दीजै राम दरसन दीजै।
दरसन दीजै विलंब न कीजै ॥ टेक ॥
दरसन तोरा जीवन मोरा।
बिन दरसन क्यों जिवै चकोरा ॥ १ ॥

नीचकर्म।

माधो सतगुरु सब जग चेला ।
अब के बिछुरे मिलन दुहेला ॥ २ ॥
धन जोबन की झूठी आसा ।
सत सत भाषे जन रैदासा ॥ ३ ॥

॥ ८१ ॥

जन को तारि तारि बाप रमइया ।
कठिन फंद पस्यो पंच जमइया ॥ टेक ॥
तुम बिन सकल देव मुनि ढूढ़ूँ ।
कहूँ न पाऊँ जमपास छुड़इया ॥ १ ॥
हम से दीन दयाल न तुम से ।
चरनसरन रैदास चमइया* ॥ २ ॥

—:o:—

(अथ आरती)

॥ ८२ ॥

आरती कहाँ लौं जोवै ।
सेवक दास अचंभो होवै ॥ टेक ॥
बावन कंचन दीप धरावै ।
जड़ बैरागी दृष्टि न आवै ॥ १ ॥
कोटि भानु जा की सोभा रोमै ।
कहा आरती अगनी होमै ॥ २ ॥
पाँच तत्त्व तिरगुनी माया ।
जो देखै सो सकल समाया ॥ ३ ॥
कह रैदास देखा हम माहीं ।
सकल जोति रोम सम नाहीं ॥ ४ ॥

॥ ८३ ॥

संत उतारैं आरती देव सिरोमनिये ।
उर अंतर तहाँ बैसे बिन रसना भनिये ॥ टेक

* चमार ।

मनसा मंदिर माहिँ धूप धुपइये ।
प्रेमप्रीति की माल राम चढ़इये ॥ १ ॥
चहुँ दिसि दियना बारि जगमग हो रहिये ।
जोति जोति सम जोती हिलमिल हो रहिये ॥ २॥
तन मन आतम बारि तहाँ हरि गाइये री ।
भनत जन रैदास तुम सरना आइये री ॥ ३ ॥

॥ ८४ ॥

नाम तुम्हारो आरतभंजन* मुरारे ।
हरि के नाम बिन झूठे सकल पसारे ॥ टेक ॥
नाम तेरो आसन नाम तेरो उरसा† ।
नाम तेरो केसरि लै छिड़का रे ॥ १ ॥
नाम तेरो अंमिला नाम तेरो चंदन ।
घसि जपै नाम ले तुझ कूँचा रे ॥ २ ॥
नाम तेरो दीया नाम तेरो बाती ।
नाम तेरो तेलै ले माहिँ पसारे ॥ ३ ॥
नाम तेरे की जोति जगाई ।
भयो उँजियार भवन सगरा रे ॥ ४ ॥
नाम तेरो धागा नाम फूल माला ।
भाव अठारह सहस जुहारे‡ ॥ ५ ॥
तेरो कियो तुझे का अरपूँ ।
नाम तेरो तुझे चँवर ढुला रे ॥ ६ ॥
अष्टादस अठसठ चारि खानि हू ।
बरतन है सकल संसारे ॥ ७ ॥
कह रैदास नाम तेरो आरति ।
अंतरगति हरि भोग लगा रे ॥ ८ ॥

* कष्ट हरता । † हुरसा चंदन घिसने का । ‡ प्रनाम ।

॥ ८५ ॥

जो तुम गोपालहि नहिं गैहौ ।
तौ तुम काँ सुख मैं दुख उपजै सुखहि कहाँ ते पैहौ ॥ टेक ॥
माला नाय सकल जग डहको झूठो भेख बनैहौ ।
झूठे ते साँचे तब होइहौ हरि की सरन जब ऐहौ ॥ १ ॥
कन रस* बत रस† और सबै रस झूठहि मूड़ डोलैहौ
जब लगि तेल दिया मैं बाती देखत ही बुझि जैहौ ॥ २ ॥
जो जन राम नाम रँग राते और रंग न सुहैहौ ।
कह रैदास सुनो रे कृपानिधि प्रान गये पछितैहौ ॥ ३ ॥

॥ ८६ ॥

अब कैसे छुटै नाम रट लागी ॥ टेक ॥
प्रभुजी तुम चंदन हम पानी ।
जाकी अँग अँग बास समानी ॥ १ ॥
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा ।
जैसे चितवत चंद चकोरा ॥ २ ॥
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती ।
जा की जोति बरै दिन राती ॥ ३ ॥
प्रभुजी तुम मोती हम धागा ।
जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ॥ ४ ॥
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा ।
ऐसी भक्ति करै रैदासा ॥ ५ ॥

॥ ८७ ॥

प्रभुजी संगति सरन तिहारी ।
जग जीवन राम मुरारी ॥ टेक ॥
गली गली को जल बहि आयो,
सुरसरि जाय समायो ।

---

* कान से सुनने का मज़ा । † ज़बान से बोलने का मज़ा ।

संगत के परताप महातम,
नाम गंगोदक पायो ॥ १ ॥
स्वाँति बूँद बरसै फनि* ऊपर,
सीस विषै† होइ जाई ।
ओही बूँद कै मोती निपजै,
संगति की अधिकाई ॥ २ ॥
तुम चंदन हम रेँड़ बापुरे,
निकट तुम्हारे आसा ।
संगत के परताप महातम,
आवै बास सुबासा ॥ ३ ॥
जाति भी ओछी करम भी ओछा,
ओछा कसब हमारा ।
नीचै से प्रभु ऊँच कियो है,
कह रैदास चमारा ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

*साँप । † ज़हर ।

संतबानी पुस्तकमाला

पुस्तक	मूल्य
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	।।।)
कबीर साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ नीसरा एडिशन ...	।।)
,, ,, ,, भाग २	।।)
,, ,, ,, भाग ३	।)
,, ,, ,, भाग ४	=)
,, ,, ज्ञान-गुदड़ी, रेख़्ते और झूलने	।)
,, ,, अखरावती	‑)।।
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	।=)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली मय जीवन-चरित्र भाग १ ...	।।।)
,, ,, ,, भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित ...	।।।)
,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ...	।।।=)
,, ,, घट रामायन दो भागों में, मय जीवन-चरित्र, भाग १ ...	१)
,, ,, भाग २ ...	१)
गुरु नानक साहिब की प्राण-संगली सटिप्पण, जीवन-चरित्र सहित भाग १ ...	१)
,, ,, ,, ,, भाग २ ...	१)
दादू दयाल की बानी, भाग १ [साखी] जीवन-चरित्र सहित ...	१‑)
,, ,, भाग २ [शब्द]	।।।‑)
सुंदर बिलास और सुंदरदास जी का जीवन-चरित्र ...	।।=)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलिया और जीवन-चरित्र	।।)
,, ,, भाग २—रेख़्ते, झूलने, अरिल, कवित्त और सवैया .	।।)
,, ,, भाग ३—रागों के शब्द या भजन और साखियाँ ..	।।)
जगजीवन साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ ...	।।‑)
,, ,, ,, भाग २	।।‑)
दूलन दास जी की बानी और जीवन-चरित्र ..	=)
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ..	।।)।।
,, ,, भाग २ ...	।=)।।
गरीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ..	।।।=)
रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र .	।‑)।।
दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरियासागर और जीवन-चरित्र	‑)
,, ,, के चुने हुए पद और साखी .	=)।।
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र	।)
भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र	।=)

गुलाल साहिब (भीखा साहिब के गुरू) की बानी और जीवन-चरित्र ...
बाबा मलूकदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ...
गुसाईं तुलसीदासजी की बारहमासी ... ...
यारी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र ... ...
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र ... ...
केशवदास जी की अमीघूँट और जीवन-चरित्र ... ...
धरनीदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ...
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र (दूसरा एडिशन) ...
सहजो बाई का सहज-प्रकाश जीवन-चरित्र सहित (तीसरा एडिशन विशेष शब्दों के साथ) ...
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ...
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी] प्रत्येक महात्मा के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित ...
" " भाग २ [शब्द] ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जिन की साखी भाग १ में नहीं दी हैं

दूसरी पुस्तकें

लोक परलोक हितकारी जिसमें १०२ स्वदेशी और विदेशी संतों, महात्माओं और विद्वानों और ग्रंथों के ४३५ चुने हुए वचन पहले भाग में और २३० दूसरे भाग में छापे गये हैं ॥) — ऐतिहासिक सूची सहित
ऐसा ग्रंथ जिस में महात्माओं और बुद्धिमानों की अनेक उपयोगी शिक्षा दी हैं .. ..
अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र अंग्रेज़ी पद्य में ... ...

बेलवेडियर प्रेस नागरी सिरीज़

सिद्धि अर्थात् जीवन-सुधार (लेखक श्रीमान् चन्द्रशेखर शर्मा)
दाम में डाक महसूल व वाल्यू-पेएबल कमिशन शामिल नहीं है वह अलग लिया जायगा।

बेलवेडियर प्रेस संस्कृत सिरीज

[illegible] — [illegible]
[illegible] — [illegible]
[illegible] — [illegible] ...

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद

मलूकदासजी की बानी

[जीवन-चरित्र सहित]

जिस में

उन महात्मा के चुने हुए शब्द, कवित्त और
साखियाँ छपी हैं
और गूढ़ शब्दों के अर्थ भी नोट में लिखे हैं ।

इलाहाबाद
बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुआ
सन् १९२० ई०

[द्वितीय एडिशन] [दाम ।)॥

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्मा की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं जो छपी थीं सो प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या छेपक और से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलि दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल क मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हाल सर्व-साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपि का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की ब है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के वृत्तांत और कौतुक संक्षेप फुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अंतिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् संतबानी संग्रह भाग [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीं जिन का नमूना देख कर महामहे पाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी वैकुंठ-वासी ने गद्गद होकर कहा था "न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के वचन की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१९ में छपी है जिस विषय में श्रीमान महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"यह उपकारी शिक्षा का अचरजी संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हम को कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे म दूर कर दिये जावें।

मैनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

सितम्बर सन् १९२० ई०

इलाहाबाद।

☞—THIS LIST CANCELS ALL PREVIOUS LISTS.

सूचना—कागज़ का दाम इधर और भी बढ़ जाने और छपाई तथा सिलाई बहुत बढ़ जाने से किताबों का दाम अब नीचे लिखे मुताबिक़ रखना ही पड़ा—

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

जीवन-चरित्र हर महात्मा के उन की बानी के आदि में दिया है

कबीर साहिब का साखी संग्रह	१=)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग पहला ॥।), भाग दूसरा .	॥।)
,, ,, ,, भाग तीसरा।≈), भाग चौथा ..	≡)
,, ,, ज्ञान-गुदड़ी, रेख़्ते और भूलने	।=)
,, ,, अखरावती	=)
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	॥-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र भाग प०	१≈)
,, ,, भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित	१≈)
,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ...	१।-)
,, ,, घट रामायन मय जीवन चरित्र, भाग १ ...	१॥)
,, ,, ,, ,, भाग २ ...	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली सटिप्पण, और जीवन-चरित्र, भाग पहिला	१॥)
,, ,, ,, भाग दूसरा	१॥)
दादू दयाल की बानी, भाग १ "साखी" १॥) भाग २ 'शब्द' ..	१।)
सुंदर बिलास	१-)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	॥।)
,, भाग २—रेख़्ते, भूलने, अरिल, कवित्त, सवैया ...	॥)
,, भाग ३—भजन और साखियाँ	॥)
जगजीवन साहिब की बानी भाग पहला ॥।-) भाग दूसरा	॥।-)
दूलन दास जी की बानी	।)॥
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग प० ॥।-), भाग दू० ...	॥।)
गरीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	१।-)
रैदास जी की बानी और जीवन-चरित्र . ..	॥)
दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरिया सागर और जीवन-चरित्र ...	।≤)॥
,, ,, के चुने हुए पद और साखी ...	।-)
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ...	।≤)
भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र	।≈)॥

गुलाल साहिब (भीखा साहिब के गुरु) की बानी और जीवन-चरित्र ...	॥
बाबा मलूकदास जी की बानी और जीवन चरित्र	)
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	
यारी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र	
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र	
केशवदास जी की अमीघूँट और जीवन-चरित्र	)
धरनीदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र	
सहजो बाई का सहज-प्रकाश और जीवन-चरित्र	)
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र	
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी]	१।
[प्रत्येक महात्मा के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित]	
,, ,, भाग २ [शब्द]	१।
[ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं दिये हैं]	
कुल	३३।

दूसरी पुस्तकें

लोक परलोक हितकारी सपरिशिष्ट [जिसमें ऐतिहासिक सूची व १०२ स्वदेशी और विदेशी संतों, महात्माओं और विद्वानों और ग्रंथों के अनुमान ६५० चुने हुए वचन १६२ पृष्ठों में छपे हैं]	तसवीर सहित	
	सजिल्द	१।
	बेजिल्द	॥
(परिशिष्ट लोक परलोक हितकारी)		
अहिल्याबाई का जीवन चरित्र अँग्रेज़ी पद्य में		
नागरी सीरीज़		
सिद्धि		।
उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा		।
"गायत्री सावित्री" स्त्रियों के लिए अत्यन्त उपयोगी और शिक्षाप्रद पुस्तक		॥

दाम में डाक महसूल व रजिस्टरी शामिल नहीं है वह इसके ऊपर आयगा।

[सन् १९२१] मनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।

मलूकदासजी का जीवन-चरित्र

बाबा मलूकदासजी ज़िला इलाहाबाद के कड़ा नामी गाँव में बैसाख बदी ५ सम्वत १६३१ विक्रमी में लाला सुन्दरदास खत्री कक्कड़ के घर प्रगट हुए। जब पाँच बरस के हुए तो मकान से बाहर गली में खेला करते थे और खेल के दर्मियान जो कुछ काँटा कूड़ा करकट गली में पड़ा होता उसे उठाकर एक कोने में डाल देते कि किसी के पाँव में लग कर कष्ट न हो। एक दिन की बात है कि जब वह मामूल मुवाफ़िक़ खेल रहे थे एक पूरे महात्मा उसी गली में आ निकले और उनको देखकर लोगों से पूछा कि यह किसका लड़का है और यह सुनकर कि यह सुन्दरदास का बेटा है बाप को बुलवाया और कहा कि अचरज है कि यह लड़का गली में इस तरह अकेला खेल रहा है इसकी आजानु बाहु यानी लम्बी भुजा इस बात की सूचक हैं कि या तो यह सात दीप का अखंड राजा हो या ऊँची साध गति को प्राप्त हो—बाबा मलूकदासजी की इतनी लम्बी बाँह थीं जो खड़े होने से घुटने के नीचे पहुँचती थीं। इस बात को सुनकर सुन्दरदास तो अचरज में आकर हक्के बक्के हो गये पर बाबा मलूकदास बोले कि महात्माजी आप ठीक कहते हैं।

मलूकदासजी साध सेवा लड़कपनही से बड़ी नेष्ठा से करते थे, जो साधू और भूखे आते उनका सन्मान और खाने पीने की फ़िकर रखते। एक दिन का ज़िकर है कि एक मंडली साधुओं की आई और भोजन माँगा। बाबाजी ने घर के भंडार घर में सेंध लगा कर जो कुछ सामग्री थी निकाल ली और साधुओं को खिला दिया। जब उनकी मा रसोई के समय सीधा निकालने गईं तो वहाँ कुछ न पाया बेचारी रोने लगी कि अब घर के लिये कहाँ से खाना बनाऊँ और बोलीं कि यह काम मल्लू का है। इसी दर्मियान में बाबा मलूकदासजी

आ पहुँचे और पूछा कि मा क्यों रोती है। मा बोली कि बेटा तुम्हारे करतूत पर रोती हूं कि भंडारे की सब सामग्री साधुओं को खिलाकर बाप मा को भूखा रक्खोगे। बाबाजी बोले कि मैं ने तो एक दाना नहीं लिया है जिस पर मा झुँझला कर उन्हें भंडारघर में पकड़ ले गई कि देख सब बर्तन तो ख़ाली पड़े हैं लेकिन वहाँ पहुँच कर जो देखा तो सब सामग्री ज्यों की त्यों भरी पाई।

जब इनकी अवस्था दस ग्यारह बरस की हुई तो बाप ने इन्हें ब्योपार में लगाना चाहा और कम्मल थोक में लेकर कहा कि इनको बाज़ार में बेच लाया करो। देहात में हर आठवें दिन पैंठ लगती है सो यह आठवें दिन कम्मल बेचने जाते थे और इस दर्मियान में कोई साधू या ग़रीब इनसे माँगता तो उसे योंही दे देते।

एक बार यह एक दूर के गाँव में कम्मल बेचने गये लेकिन उस दिन न तो कोई कम्मल बिका और न कोई मँगता मिला जिसे मुफ़्त दे देते, पूरा गट्ठर कम्मलों का कड़ी धूप में सिर पर लाद कर घर लाने में थक गये और इसलिये रास्ते में एक नीम के पेड़ की छाया में बैठ गये कि एक मज़दूर आया और कहा कि एक टका पर हम तुम्हारा गट्ठर घर पर पहुँचा देंगे। मज़दूर तेज़ चाल से आगे बढ़ गया और बाबाजी आप बेफ़िकर भजन करते हुए घर लौटे। मज़दूर के अकेले गठरी लाने पर इनकी मा को सन्देह हुआ कि कहीं कुछ कम्मल निकाल न लिये हों इसलिये उसे थोड़ा सा खाना देकर खिलाने के बहाने कोठरी में बन्द कर दिया कि जब बेटा आवे तो गठरी का माल सहेज कर उसे जाने दें। जब मलूकदासजी पहुँचे तो वह क्रोध से बोली कि ऐसी बेपरवाही क्यों करते हो अब गट्ठर खोलकर कम्मल गिन लो अगर पूरे निकलें तो कोठरी से मज़दूर को जाने दो मैंने उसे खाने को दे दिया है। बाबाजी घबराये हुए कोठरी खोल कर भीतर घुसे तो देखा कि मज़दूर ग़ायब है सिर्फ़ एक टुकड़ा रोटी का पड़ा है जिसे प्रसाद के भाव से बाबाजी ने उठाकर खा लिया और मा के चरनों पर गिरकर बोले कि तू बड़ी भाग्यमान है कि ईश्वर ने

तुझे मज़दूर के रूप में दर्शन दिया और मुझे बहका दिया अब मैं इसी कोठरी में बैठता हूँ जब तक न कहूँ मत खोलना और न शोर गुल करना। इस तरह बाबाजी भगवन्त के ध्यान में बैठ गये जब दूसरे या तीसरे दिन साक्षात दर्शन पाये तब बाहर निकले और मा के चरनों पर मत्था टेका। फिर इसी तरह ध्यान और भजन का नेम कर लिया।

अब तो बाबा मलूकदास की कीर्ति चारों ओर फैली और हज़ारों आदमी दूर २ से दर्शन को आने लगे और नित प्रति सतसंग और सत-उपदेश से अनेक जीव लाभ उठाने लगे।

बाबाजी के चमत्कार और करामत की ऐसीही और इससे बढ़ कर बहुत सी कथा प्रसिद्ध हैं जिन सब के यहाँ लिखने की ज़रूरत नहीं है लेकिन थोड़े से कौतुक जो उनके प्रेमी स्वग्रामी लाला रामचरनदासजी मेहरोत्रे खत्री ने लिख भेजे हैं वह संक्षेप में नीचे छापे जाते हैं, पाठक जन जैसा जिसका निश्चय हो मानें। इस में सन्देह नहीं कि पूरे साध और मालिक के सच्चे भक्त सर्व-समरथ हैं परन्तु वह अपनी शक्ति को कहाँ तक बाहर प्रगट करते हैं इसको हर एक अन्तर अभ्यासी जानता है:—

(१) कहा जाता है कि एक बार भारी अकाल पड़ा यहाँ तक कि पेड़ों में पत्ती तक खाने को नहीं रह गईं, हज़ारों आदमी वर्षा के लिये हाहाकार करते बाबाजी के चरनों पर आगिरे। बाबाजी ने पहिले तो अपनी असमरथता बहुत कुछ बयान की पर जब वह लोग किसी तरह न माने तो दयावन्त उनके साथ मैदान में प्रार्थना करने को चले। इस बीच में बाबाजी का एक गुरमुख चेला लालदास आया और अपने गुरू को गद्दी पर न पाकर हाल पूछा तो मालूम हुआ कि गाँव वालों के साथ बस्ती के बाहर पानी बरसने के लिये प्रार्थना करने गये हैं। यह सुनकर चेले को इन्द्र पर बड़ा क्रोध आया कि वह ऐसा अहंकारी है कि जब हमारे गुरू महाराज उठकर जायँ तब वह पानी बरसावे यह कह कर एक साधू का भंग-घोटना उठाकर बोला

कि अभी एक सोँटा इन्द्र को ऐसा लगाता हूँ कि इन्द्रासन सहित यहाँ गिरता है परन्तु भंग-घोटने का सोँटा उठातेही इन्द्र काँप उठा और उसी दम बड़े वेग से पानी बरसने लगा। बाबाजी अभी मैदान में न पहुँचे थे कि बर्षा देखकर रास्ते से अपने आश्रम को लौट आये और यहाँ सब वृत्तान्त सुनकर चेले पर बहुत अप्रसन्न हुए कि देवताओं पर इस तरह ज़ोर न चलाना चाहिये—उनसे राज़ी से काम लेना चाहिये। चेले ने बड़ी दीनता से छिमा माँगी जिस पर गुरूजी ने आज्ञा की कि जाकर पृथ्वी-परिक्रमा कर आओ तब तुम्हारा अपराध छिमा होगा। चेला यह आज्ञा पातेही गुरू को दंडवत करके रवाने हुआ और गङ्गा में कूद पड़ा और वहाँ से समुद्र में एक जहाज़ के पास जा निकला। ख़लासियों ने उसे बहता देख कर निकाल लिया और जहाज़ के मालिक सौदागर के पास लाये। सौदागर ने पूछा कि तुम्हारा जहाज़ कहाँ तबाह हुआ जिस पर इसने जवाब दिया कि कहीं नहीं हम अपने गुरू की आज्ञा से पृथ्वी-परिक्रमा को निकले हैं और इसके विशेष प्रश्न करने पर कुल हाल कह सुनाया और अपने गुरू का पूरा पता ठिकाना बतला दिया और फिर समुद्र में कूद कर ग़ोता मार कर ग़ायब हो गया। सौदागर अचरज में रह गया और उसके मन में गुरूजी की महिमा पूरे तौर पर समा गई।

(२) कुछ दिन पीछे सौदागर का जहाज़ बड़े ख़तरे में पड़ा तब उसने सङ्कल्प किया कि अगर जहाज़ बाबा मलूकदासजी की दया दृष्टि से बच जाय तो मैं चौथाई माल उनके चरणों में भेंट करूँगा। दया से जहाज़ बच गया और सौदागर बाबाजी की सेवा में चौथाई माल लेकर कड़ा में हाज़िर हुआ और सब हाल कह सुनाया। उस समय के बादशाह आलमगीर का वज़ीर बाबाजी के पास मौजूद था उसका मन मोती की एक क़ीमती माला देखकर बहुत ललचाया जिसे सौदागर बाबाजी के गले में पहिराने को हाथ में लिये था। बाबाजी सौदागर से बोले कि किसी का माल सेंत में लेना दोष की बात है पर हमने तुम्हारे जहाज़ को तबाही से बचाने में बड़ा परिश्रम किया है यह कह कर

अँगौछे को अपने कन्धे से उठा कर पीठ को दिखलाया जिस पर बहुत से दाग़ मौजूद थे। फिर माला को सौदागर के हाथ से लेकर वज़ीर के गले में डाल दिया।

(३) वज़ीर वहाँ से मगन होकर बादशाह के यहाँ आया और बाबा मलूकदास का सब हाल कह सुनाया और बड़ी महिमा गाई। आलमगीर ने जो बड़ा कट्टर था हुक्म दिया कि तीन अहदी तुर्त जायँ और बाबा मलूकदास को जिस तरह से बैठे हों लाकर हाज़िर करैं। उन तीन अहदियों में दो भले आदमी थे और एक लुच्चा जिसने हठ किया कि जिस सूरत में बाबाजी बैठे होंगे उसी दम पकड़ लावैंगे परन्तु मौज से वह तीसरा अहदी रास्तेही में मर गया। बाक़ी दो बाबाजी के आश्रम पर पहुँचे और बाबाजी के इस कहने को कि दूसरे दिन सवेरे उनके साथ चलैंगे मंजूर किया। लेकिन पहिलेही दिन साँझ को बाबाजी सतसंग से अन्तरध्यान हो कर दिल्ली जा पहुँचे और बादशाही महल में जहाँ बादशाह अपनी बेगम के साथ बैठे थे जा खड़े हुए। बादशाह ने घबराकर पूछा कि तुम कौन हो बाबाजी ने जवाब दिया कि मलूका जिसको आपने याद किया है। बेगम हट गईं और बादशाह ने बाबाजी को बड़े आदर से बैठाया और उनकी जाति पूछी बाबाजी ने जवाब दिया कि फ़क़ीरों के जात पाँत नहीं होती इस पर बादशाह ने उनके खाने को खिचड़ी पकाने का हुक्म दिया जब पक कर देगची आई और खोली गई तो उसमें से खिचड़ी के बदले कुत्ते के पिल्ले जीते हुए निकल आये जिन्हें देखकर बाबाजी ने बादशाह से पूछा कि आप यही खिचड़ी खाते हैं। बादशाह ने बावरची पर बहुत क्रोध कर दूसरी खिचड़ी बनाने का हुक्म दिया। इस बार देगची खोलने पर उसमें से राख निकली। बाबाजी बोले कि यह खाना फ़क़ीरों के योग्य है और उसमें से एक चिटकी राख लेकर फूंक दिया तो ऐसी आँधी पानी दिल्ली भर में आया कि शहर ग़ारत होने लगा। फिर बादशाह की प्रार्थना पर बाबाजी ने दया करके यह उत्पात हटा लिया। ऐसेही लिखा है कि आलमगीर ने कुएं के

मुँह पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ी जिसके जवाब में बाबाजी ने अधर में बेसहारे लटकते हुए भजन किया। इन सब चमत्कारों को देखकर शाह आलमगीर को विश्वास हुआ कि बाबा मलूकदास पूरे साहेब-कमाल हैं और उनसे बड़ी दीनता के साथ कुछ माँगने को कहा परन्तु बाबाजी ने इनकार किया, फिर बादशाह के बहुत गिड़गिड़ाने पर बोले कि अच्छा एक तो जज़िया टिकस जो हिन्दुओं पर लगा है उस को कड़ा के लिये माफ़ करदो, दूसरे दोनों अहदियों को एक २ सूबा बख़्श दो और परवाना लिख दो कि मुझको यहाँ न लावें। बादशाह ने उसी दम यह दोनों हुक्म लिखकर बाबाजी के हवाले किये जिनको लेकर बाबाजी सतसङ्ग में आधी रात को फिर प्रगट हुए और अँगौछा जिसको सिर से पैर तक डाले रहा करते थे उठाकर सतसंगियों से बोले कि आज बड़ी देर होगई अब तुम लोग अपने २ घर जाव। सबेरे दोनों अहदियों को शाही परवाना दिखलाया उनमें से एक तो सूबेदारी के लालच से लौट आया लेकिन दूसरे ने कहा कि मैं ऐसा दरबार छोड़कर बादशाहत मिले तो उसको भी धूल समझता हूँ—इस दूसरे अहदी की क़बर आज तक बाबाजी की समाधि के पास मौजूद है।

(४) बाबाजी अपना मकान बनवा रहे थे उसमें बहुत से मज़दूर दब गये जब निकाले गये तो सब जीते निकले और बयान किया कि बाबाजी की सूरत के एक आदमी ने हमारी दबी हुई दशा में प्रगट होकर रक्षा की।

(५) एक अहीरन का एकलौता लड़का मर गया मा के बहुत रोने और प्रार्थना करने पर बाबाजी ने अपनी ऊँगली चीर कर ज़रासा लोहू लड़के के मुँह में डाल कर जिला दिया।

बाबा मलूकदास के गुरू विट्ठलदास द्राविड़ देश के एक महात्मा थे। बाबाजी गृहस्त आश्रम में थे और उनके एक बेटी हुई, परन्तु थोड़ेही काल में स्त्री और पुत्री दोनों का देहान्त हो गया।

सम्वत १७३९ में १०८ बरस की अवस्था को प्राप्त होकर बाबाजी ने चोला छोड़ा। गुप्त होने के छः महीना पहिले उन्होंने अपने भतीजे रामस्नेही से कहा कि तुम हमारी गद्दी पर बैठो। उन्होंने अपनी असमरथता बयान की जिस पर बाबाजी ने ढारस दी कि ताकत बख्शी जायगी तब वह गद्दी पर बैठे और बाबाजी के बारहों गुरमुख चेलों ने जो एक से एक बढ़कर थे आकर उनको मत्था टेका और सेवा में आये।

जब बाबाजी के चोला छोड़ने का दिन आया तो उन्होंने अपने चेलों और कुटुम्बियों को बुलाकर कहा कि दोपहर को जब तुम लोगों के अंतर में घंटा और संख का शब्द गाजने लगे तब समझना कि हमने चोला छोड़ दिया और हमारे शरीर को गंगा में प्रवाह कर देना, जलाना मत, सो इस आज्ञा का पूरे तौर पर पालन किया गया और कड़े में उनकी समाधि बना दी गई।

कहते हैं कि बाबाजी का मृतक शरीर पहिले प्रयाग के घाट पर ठहरा और एक घाटिये से पीने को पानी माँगा और फिर डुबकी मार कर काशी में निकला और वहाँ भी पानी और फिर क़लम दवात माँगी जिससे लिख दिया कि मलूका काशी पहुँचा, वहाँ से ग़ोता लगाकर जगन्नाथपुरी में पहुँचा। जगन्नाथजी ने अपने पंडों को हुक्म दिया कि समुद्र तट पर एक रथी है उसे उठा लाओ। जब वह रथी आई तो पंडे उसे मूर्त्ति के सन्मुख धर कर आप बाहर निकल आये और मंदिर के पट आपसे आप बंद होगये। बाबाजी ने जगन्नाथजी से प्रार्थना की कि हमारे विश्राम को आपके पनाले के पास का स्थान और भोजन को आपके भोग के दाल चावल के पहरेदार टिक्कड़ का रोट और तरकारी के छीलन की भाजी मिले जगन्नाथजी ने स्वीकार करके आज्ञा दी कि हमारे भोग से बढ़कर सवार तुम्हारे भोग में होगा। जगन्नाथजी के पनाले के पास मलूकदासजी का स्थान अब तक मौजूद है और उनके नाम का रोट अब तक जारी है जो जात्रियों को जगन्नाथजी के भोग के साथ प्रसाद में मिलता है।

बाबा मलूकदासजी के पंथ की मुख्य गद्दियाँ मौज़ा कड़ा ज़िला प्रयाग, जैपुर, इस्फ़हाबाद, गुजरात, मुलतान, पटना (बिहार), सीताकोयल (दक्खिन), कलापुर, नैपाल और काबुल में हैं। उनके रचे हुए ग्रन्थ भी कितनेही हैं जिन में मुख्य रत्नखान और ज्ञानबोध समझे जाते हैं परन्तु वह ऐसे हिन्दी अक्षर में हैं जिन्हें उनके कुलवेवाले आप नहीं पढ़ सकते और न उनके पढ़ने का जतन करते छपवाने की बात तो दूर है।

यह थोड़े से चुने हुए शब्द और साखियाँ जो छापी जाती हैं हमको कृपा पूर्वक बाबाजी के परम भक्त लाला रामचरनदासजी मेहरोत्रे खत्री कड़ा वाले (बाबू शिवप्रशादजी अकौन्टन्ट इलाहाबाद बंक के पिता) ने बाबाजी के असल दस्तख़ती पुस्तक से नक़ल कराई हैं जिसके लिये हम उनको अनेक धन्यवाद देते हैं।

संत चरण-धूर,

एडिटर, संतबानी पुस्तक-माला

मलूकदासजी की बानी

सतगुरु और निज रूप की महिमा

॥ शब्द १ ॥

अब मैं सतगुरु पूरा पाया ।
जिन तैं जनम जनम डहकाया[1] ॥ १ ॥
कई लाख तुम रंडी[2] छाँड़ी, केते बेटी बेटा ।
केतने बैठे सिरदा[3] करते, माया जाल लपेटा ॥ २ ॥
केतने के तुम पित्र कहाये, केते पित्र तुम्हारे ।
गया बनारस कर कर थाके, देत देत पिंड हारे ॥ ३ ॥
कई लाख तुम लसकर जोड़े, केते घोड़े हाथी ।
तेऊ गये बिलाय छिनक मैं, कोई रहा न साथी ॥ ४ ॥
आवागवन मिटाया सतगुरु, पूजी मन की आसा ।
जीवन मुक्त किया परमेसुर, कहत मलूकादासा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

हमारा सतगुरु बिरले जानै ।
सुई के नाके सुमेर चलावै, सो यह रूप बखानै ॥ १ ॥
की तो जानै दास कबीरा, की हरिनाकस पूता ।
की तो नामदेव औ नानक, की गोरख अवधूता ॥२॥
हमरे गुरु की अद्भुत लीला, ना कछु खाय न पीवै ।
ना वह सोवै ना वह जागै, ना वह मरै न जीवै ॥३॥

---

(१) ठगाया । (२) स्त्री । (३) सिजदा, दंडवत ।

बिन तरवर फल फूल लगावै, सो तो वा का चेला।
छिन मेँ रूप अनेक धरत है, छीन मेँ रहै अकेला ॥४॥
बिन दीपक उँजियारा देखै, एँड़ी समुँद थहावै।
चींटी के पग कुंजर' बाँधै, जा को गुरू लखावै ॥५॥
बिन पंखन उड़ि जाय अकासे, बिन पंखन उड़ि आवै।
सोई सिष्य गुरू का प्यारा, सूखे नाव चलावै ॥ ॥६॥
बिन पायन सब जग फिरि आवै, सो मेरा गुरु भाई।
कहै मलूक ता की बलिहारी जिन यह जुगत बताई ॥७॥

॥ शब्द ३ ॥

नाम तुम्हारा निरमला, निरमोलक हीरा।
तू साहेब समरत्थ, हम मल मुत्र कै कीरा ॥ १ ॥
पाप न राखै देँह मेँ, जब सुमिरन करिये
एक अच्छर के कहत ही, भौसागर तरिये ॥ २ ॥
अधम-उधारन सब कहैँ, प्रभु बिरद तुम्हारा।
सुनि सरनागत आइया, तब पार उतारा ॥ ३ ॥
तुझ सा गरुवा औ धनी, जा मेँ बड़ई समाई
जरत उबारे पांडवा, ताती बाव' न लाई ॥ ४ ॥
कोटिक औगुन जन करै, प्रभु मनहिँ न आनै।
कहत मलूकादास को, अपना करि जानै ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हरि समान दाता कोउ नाहीं, सदा बिराजैं संतन माहीं ॥१॥
नाम बिसंभर बिस्व जियावैं, साँझ बिहान रिजक' पहुँचावैं ॥२॥
देइ अनेकन मुख पर ऐने', औगुन करै सो गुन कर मानैं ॥३॥

---

(१) हाथी। (२) गरम हवा। (३) [illegible] (४) [illegible]

काहू भाँति अजार¹ न देई, जाही को अपना कर लेई ॥४॥
घरी घरी देता दीदार, जन अपने का खिजमतगार ॥५॥
तीन लोक जाके औसाफ² जनका गुनह करै सब माफ़ ॥६॥
ऐसा ठाकुर है रघुराई, कहैं मलूक क्या करूँ बड़ाई ॥७॥

॥ शब्द ५ ॥

सदा सोहागिन नारि सो, जा के राम भतारा ।
मुख माँगे सुख देत हैं, जगजीवन प्यारा ॥ १ ॥
कबहुं न चढ़ै रँडपुरा,³ जानै सब कोई ।
अजर अमर अबिनासिया, ता को नास न होई ॥ २ ॥
नर दैंही दिन दोय की, सुन गुरजन मेरी ।
क्या ऐसों का नेहरा, मुए बिपति घनेरी ॥ ३ ॥
ना उपजै ना बीनसै, संतन सुखदाई ।
कहैं मलूक यह जानि के, मैं प्रीति लगाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

नैया मेरी नीके चलने लागी ।
आँधी मेँह तनिक नहिं डोलै साहु चढ़े बड़भागी ॥१॥
रामराय डगमगी छोड़ाई, निर्भय कड़िया⁴ लैया ;
गुन लहासि की हाजत⁵ नाहीं, आछा साज बनैया ॥२॥
अवसर पड़े तो पर्वत बोझै, तहूं न होवै भारी ।
धन सतगुरु यह जुगत बताई, तिन की मैं बलिहारी ॥३॥
सूखे पड़े तो कछु डर नाहीं, ना गहिरे का संसा ।
उलटि जाय तो बार न बाँकै, या का अजब तमासा ॥४॥
कहत मलूक जो बिन सिर खेवै, सो यह रूप बखाने ।
या नैया के अजब कथा, कोइ बिरला केवट जाने ॥५॥

---

(१) दुख । (२) गुण । (३) रँड़ापा । (४) जोड़ा । (५) ज़रूरत ।

भेद बानी

॥ शब्द १ ॥

मुरसिद मेरा दिल दरियाई, दिल गहि अंदर खो
जा अंदर में सत्तर काबा, मक्का तीसो रोजा ॥
साता तबक औलिया जा में, भेद न होय जुदाई।
सम्स कमर[1] ठाढ़े निमाज में, दरसै जहँ खोदाई।
हवा हिरिस खुदी[2] मैं खोवा, अनल हक्क जहँ जान
बिन चिराग रोसन सब खाना, तामें तख्त सुभानी[3]।
बिना आब[4] जहँ बहु गुल फूले, अब्र[5] बिना जहँ बरसै
नूर बिना सरोद[6] सब बाजै, चस्म बिना सब दरसै ॥
ता दरगाह मुसल्ला डारे, बैठा कादिर काजी।
न्याव करै सीने की जानै, सब को राखै राजी ॥ ५
जो देखै सो कमला होवै, तब कमाल पद पावै।
साहेब मिलि तब साहेब होवै, ज्यों जल बूँद समावै ॥६
तिस के पल[7] दीदार किये तैं, नादिर होय फकीरा।
मारे काल कलंदर दिल सौं, दरदमंद धर धीरा ॥ ७
ऐसा होय तब पीर कहावै, मनी मान जब खोवै।
तब मलूक रोसन-जमीर होय, पाँव पसारे सोवै ॥ ८

॥ शब्द २ ॥

अवधू का कहि तोहि बखानौं।
गगन मँडल में अनहद बोलै, जाति बरन नहिं जानौं ॥१॥
अहो अहो मैं कहा कहौं तोहि, नाँव न जानौं देवा।
सुन्न महल की जुगती बतावे, केहि बिधि कीजे सेवा ॥२॥

---

(१) सूरज और चाँद। (२) आशा, तृष्ना और अहंकार। (३) मालिक। (४) पानी। (५) बादल। (६) राग। (७) दिन मात्र।

तीरथ भरमैं बड़े कहावैं, वाद करत हैं सोई ।
अंधधुंध चलजात निरंजन, मर्म न जानै कोई ॥३॥
अविगत गति तुम्हरी अविनासी, घट घट रहत चलाया।
जहाँ तहाँ तेरी माया खोलै, सतगुरु मोहिं लखाया ॥४॥
वेद पढ़े पढ़ि पंडित भूले, ज्ञानी कथि कथि ज्ञाना ।
कह मलूक तेरी अद्भुत लीला, सो काहू नहिं जाना ॥५॥

बिनती

॥ शब्द १ ॥

अब तेरी शरन आयोराम ॥१॥
जबै सुनिया साधके मुख, पतित-पावन नाम ॥२॥
यही जान पुकार कीन्ही, अति सतायो काम ॥३॥
विषय सेती भयो आजिज[1], कह मलूक गुलाम ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

साँचा तू गोपाल, साँच तेरा नाम है ।
जहवाँ सुमिरन होय, धन्य सो ठाम है ॥१॥
साँचा तेरा भक्त, जो तुझको जानता ।
तीन लोक को राज, मनै नहिं आनता ॥२॥
झूठा नाता छोड़ि, तुझे लय लाइया ।
सुमिरि तिहारो नाम, परम पद पाइया ॥३॥
जिन यह लाहा[2] पायो, यह जग आइ कै ।
उतरि गयो भव पार, तेरो गुन गाइ कै ॥४॥
तुही मातु तुही पिता, तुही हितु बंधु है ।
कहत मलूकादास, बिना तुझ धुंध[3] है ॥५॥

---

(१) लाचार । (२) लाभ । (३) अँधियारा ।

॥ शब्द ३ ॥

एक तुम्हैं प्रभु चाहौं राज ॥ टेक ॥
भूपति रंक सेंति[1] नहिं पूछौं, चरन तुम्हार सँवारयो काज
पाँचो पंडव जरत उबारयो, द्रुपद सुताको राख्यो लाज
संत-विरोधी ऐसो मारो, ज्यों तीतर पर छूटे बाज़ ॥३॥
तुम्हैं छोड़ि जाने जो दूजा, तेहि पापी पर परि है गाज॥
कहै मलूक मेरो प्रान रमइया, तीन लोक ऊपर सिरताज॥५॥

प्रेम

॥ शब्द १ ॥

कौन मिलावै जोगिया हो, जोगिया बिन रह्यो नजाय॥टेक
मैं जो प्यासी पीव की, रटत फिरौं पिउ पीव ।
जो जोगिया नहिं मिलिहै हो, तो तुरत निकासूँ जीव १
गुरुजी अहेरी मैं हिरनी, गुरु मारैं प्रेम का बान ।
जेहि लागै सोई जानई हो, और दरद नहिं जान ॥ २ ॥
कहैं मलूक सुनु जोगिनी रे, तनहिं मैं मनहिं समाय ।
तेरे प्रेमके कारने जोगी सहज मिला मोहिं आय ॥ ३ ॥

॥ शब्द २ ॥

तेरा मैं दीदार-दिवाना ।
घड़ी घड़ी तुझे देखा चाहूँ, सुन साहेब रहमाना ॥१॥
हुआ अलमस्त खबर नहिं तन की, पिया प्रेम पियाला
ठाढ़ होउँ तो गिर गिर परता, तेरे रँग मतवाला ॥२॥
खड़ा रहूँ दरबार तुम्हारे, ज्यों घर का बंदाजादा[2] ।
नेकी की कुलाह[3] सिर दीये गले पैरहन[4] साजा ॥३॥

---

(१) मुफ्त । (२) गुलाम । (३) टोपी । (४) मेखली ।

तीजो और निमाज न जानूँ, ना जानूँ धरि रोजा ।
ाँग जिकर[1] तबही से बिसरी, जबसे यह दिल खोजा ॥४॥
कहैं मलूक अब कजा[2] न करिहौं, दिल ही सों दील लाया ।
मक्का हज्ज हिये मैं देखा, पूरा मुरसिद पाया ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

दर्द-दिवाने बावरे, अलमस्त फकीरा ।
एक अकीदा[3] लै रहे, ऐसे मन-धीरा ॥१॥
प्रेम पियाला पीवते, बिसरे सब साथी ।
आठपहर यों झूमते, ज्यों माता हाथी ॥२॥
उनकी नजर न आवते, कोइ राजा रंक ।
बंधन तोड़े मोह के, फिरते निहसंक ॥३॥
साहेब मिल साहेब भये, कछु रही न तमाई[4] ।
कहैं मलूक तिस घर गये, जहँ पवन न आई ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

मेरा पीर निरंजना, मैं खिजमतगार ।
तुहीं तुहीं निस दिन रटौं, ठाढ़ा दरबार ॥१॥
महल मियाँ का दिलहिं में, औ महजिद काया ।
छूरी देता ज्ञान की, जबतें लौ लाया ॥२॥
तसबी फेरौं प्रेमकी, हिया करौं निवाज ।
जहँ तहँ फिरौं दिदार को उसही के काज ॥३॥
कहैं मलूक अलेख के, अब हाथ बिकाना ।
नाहीं खबर वजूद[5] की मैं फकीर दिवाना ॥४॥

---

(१) सुमिरन । (२) छूटी हुई नमाज़ पढ़ना । (३) प्रतीत । (४) इच्छा, चाह ।
(५) आपा, शरीर ।

॥ शब्द ५ ॥

अब की लगी खेप हमारी ।
लेखा दिया साह अपने को, सहजै चीठी फारी ॥१॥
सौदा करत बहुत जुग बीते, दिन दिन टूटी आई ।
अब की बार बेबाक भये हम, जम की तलब छोड़ाई ॥२॥
चार पदारथ नफा भया मोहिं, बनिजै कबहुँ न जइहैं ।
अब डहकाय बलाय हमारी, घर ही बैठे खइहैं ॥३॥
बस्तु अमोलक गुप्ते पाई, ताती वायु न लाओं ।
हरि हीरा मेरा ज्ञान जौहरी, ताही सोँ परखाओं ॥४॥
देव पितर औ राजा रानी, काहू से दीन न भाखौं ।
कह मलूक मेरे रामै पूँजी, जीव बराबर राखौं ॥५॥

भक्त महिमा

॥ शब्द १ ॥

सोई सहर सुबस बसे, जहँ हरि के दासा ।
दरस किये सुख पाइये, पूजै मन आसा ॥ १ ॥
साकट के घर साधजन, सुपने नहिं जाहीं ।
तेइ तेइ नगर उजाड़ है, जहँ साधू नाहीं ॥ २॥
मूरत पूजैं बहुत मति, नित नाम पुकारैं ।
कोटि कसाई तुल्य हैं, जो आतम मारैं ॥ ३ ॥
पर दुख दुखिय भक्त है, सो रामहिं प्यारा ।
एक पलक प्रभु आप तें, नहिं राखैं न्यारा ॥ ४ ॥
दीन-बंधु करुना-मयी, ऐसे रघुराजा ।
कहैं मलूक जन आपने को, कौन नियाजा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

देव पितर मेरे हरि के दास । गाजत हौं तिन के बिस्वास १
साधू जन पूजौं चित लाई । जिनके दरसन हिया जुड़ाई २
चरन पखारत होइ अनंदा । जन्म जन्म के काटे फंदा ३
भाव भक्ति करते निस्काम । निसि दिन सुमिरैं केवल राम ४
घर बन का उनके भय नाहीं । ज्यौं पुरइनि रहता जल माहीं ५
भूत परेतन देंव बहाई । देवखर लीपै मोर बलाई ६
वस्तु अनूठी संतन लाऊँ । कहैं मलूक सब भर्म नसाऊँ ७

मन और माया के चरित्र

॥ शब्द १ ॥

माया काली नागिनी, जिन डसिया सब संसार हो ॥टेक॥
इन्द्र डसा ब्रह्मा डसा, डसिया नारद ब्यास ।
बात कहत सिव को डसा, जेहि घरि[1] एक बैठे पास हो ॥१॥
कंस डसा सिसुपाल डसा, उन रावन डसिया जाय ।
दस सिर दै लंका मिली, सो छिन में दई बहाय हो ॥२॥
बड़े बड़े गारुड़[2] डसे, कोउ इक थिर न रहाय ।
कच्छ[3] देस गोरख डसा, जा का अगम बिचार हो ॥३॥
चुनि चुनि खाये सूरमा, जा की करैं जग आस ।
हम से गरीबन को गनै, कहत मलूकादास हो ॥४॥

---

(१)घड़ी भर । (२) साँप के विष उतारने का मंत्र जानने वाले । (३) गोरखनाथ की जन्म भूमि ।

॥ शब्द २ ॥

क्या प्रपंच यह पंच रचा ॥ टेक ॥
आसा तृष्ना सब घट व्यापी, मुनि गंधर्व कोई न बचा।
उठे बिहान पेट का धंधा, माया लाय किया जग अं
तन मन छीन कुटुंबे लाया, छिप रही आप लोग भर्मा
औंधी खोपरी फिरैं बिचारे, भूले भक्ति छुधा के मा
बिनती करत मलूकादासा, थकित भया तेरा देख तमास

॥ शब्द ३ ॥

राम नाम क्यौं लीजै मन राजा ।
काहु भाँति मेरे हाथ न आवै, महा बिकट दल साजा॥
कई बार इन पैँड़े चलते, लस्कर लूटा मेरा ।
चहुँ जुग राज बिराजौ करता, अदब न मानै तेरा ॥२
येही सब घट दुंद मचावै, मारैं रैयत खासी ।
काहू नृप को नजर न आनै, एतै मान मवासी ॥ ३ ॥
कह मलूक जिय ऐसी आवै, छल बल करि येही गहिये
इसहि मारि काया गढ़ लेके, तब खासे घर रहिये ॥ ४

॥ शब्द ४ ॥

हम से जनि लागे तू माया ।
थोरे से फिर बहुत होयगी, सुनि पैहैं रघुराया ॥ १ ॥
अपने मैं है साहेब हमरा, अजहूँ चेतु दिवानी ।
काहू जन के बस परि जैहौ, भरत मरहुगी पानी ॥ २
तर ह्वै चितै[1] लाज करु जन की, डारु हाथ की फाँसी।
जन तें तेरो जोर न लहिहै,[2] रच्छपाल अबिनासी ॥३॥

(१) नीची निगाह कर देख। (२) चलेगा।

कहै मलूका चुप करु ठगनी, औगुन राखु दुराई ।
जो जन उबरे राम नाम कहि, तातें कछु न बसाई ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

माया के गुलाम, गीदी क्या जानैं बंदगी ॥ टेक ॥
साधुन से धूम धाम, करत चोरन के काम ।
द्विजन को पूजा देयँ, गरीबन से रिन्दगी ॥ १ ॥
कपट की माला लिये, छापा मुद्रा तिलक दिये ।
बगल में पोथी दाबे, लाये फरफंदगी ॥ २ ॥
कहत मलूकदास, छोड़ु दगाबाजी आस ।
भजहु गोबिन्द राय, मेटैं तेरो गंदगी ॥ ३ ॥

॥ चेतावनी ॥

॥ शब्द १ ॥

जा दिन का डर मानता, सोइ बेला आई ।
भक्ति न कीन्ही राम की, ठकमूरो[1] खाई ॥ १ ॥
जिन के कारन पचि मुवा, सब दुख की रासी ।
रोइ रोइ जन्म गँवाया, परी मोह की फाँसी ॥ २ ॥
तन मन धन नहिं आपना, नहिं सुत औ नारी ।
बिछुरत बार न लागई, जिय देखु बिचारी ॥ ३ ॥
मनुष जन्म दुर्लभ अहै, बड़े पुन्नं पाया ।
सोऊ अकारथ खोइया, नहिं ठौर लगाया ॥ ४ ॥
साध सँगत कब करोगे, यह औसर बीता ।
कहे मलूका नाँच में, बैरी एक न जीता ॥ ५ ॥

(१) मकचौंधी, हवास पैतरे हो जाना ।

॥ शब्द २ ॥

राम मिलन क्योँ पइये, मोहिँ राखा ठगवन घेरि हो ॥
क्रोध तो काला नाग है, काम तो परघट काल।
आप आप को खैँचते, मोहिँ कर डाला बेहाल हो ॥१॥
एक कनक और कामिनी, यह दोनोँ बटपार।
मिसरी की छुरी गर लाय के, इन मारा सब संसार हो ॥२॥
इन में कोई ना भला, सब का एक बिचार।
पैँड़ा मारैँ भजन का, कोइ कैसे के उतरै पार हो ॥३॥
उपजत बिनसत थकि पड़ा, जियरा गया उकताय।
कहैँ मलूक बहु भरमिया, मो पै अब नहिँ भरमो जाय हो ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

इन्द्री खाय गई जग सारा।
निस दिन चरा करै बन काया, कोई न हाँकनहारा ॥१॥
पीप रक्त करै तन भंझरा, सरबस जाय नसाई।
जैसी भाँति काठ घुन लागै, बहुरि रहै फोकलाई[1] ॥२॥
होता बीज औँट के लोहू, सो देँही का राजा।
ऐसी बस्तु अकारथ खोवै, अपना करै अकाजा ॥३॥
मनुवा मार भजै भगवंतहिँ, या मति कबहुँ न ठाना[2]।
जियरा दोय घरी के सुख को, कहत मलूक दिवाना ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

अजब तमासा देखा तेरा। ता तेँ उदास भया मन मेरा १
उतपति परलय नित उठ होई। जग में अमर न देखा कोई २
माटी के पुतरे माया लाई। कोइ कहे बहिन कोई कहे भाई ३

(१) छिलका। (२) दृढ़ किया।

झूठा नाता लोग लगावै । मन मेरे परतीत न आवै ॥४॥
जबहीं भेजे तबहिं बुलावै । हुकुम भया कोइ रहन न पावै५
उलटत पलटत जगकी अँचलो[१]। जैसे फेरै पान तमोली६
कहत मलूक रह्यो मोहिं घेरे। अब माया के जाउँ न नेरे७

॥ शब्द ५ ॥

देखा सब जग ब्याकुल राम। नित उठि दग्धै क्रोध औ काम१
तुम तो प्रभु जी रहे छिपाय। पाँच मवासी दियो लगाय२
एक घड़ी काहु कल ना देय। ज्ञान ध्यान आपुइ हरि लेय३
देंह धरे का बड़ा जँजाल । जहँ तहँ फिरता गिरसे काल४
आइ अचानक करत घात । जिव लै भागत कहत बात५
या पापी तें कोउ न बाच । नित उठि पेट नचावै नाच६
या का उत्तर देवो मोहिं । कैसे के कोउ मिलै तोहिं७
जियत नरक है गर्भ बास । उपजत बिनसत बड़ो त्रास८
कह मलूक यह बिनती मोरी । इन्हें छोड़ि बल जाऊँ तोरी९

॥ शब्द ६ ॥

बाबा मुरदे मूँड़ उठाया ।
लागी अंग बाय दुनियाँ की, राम राय बिसराया ॥१॥
आये पहिरि करम की बेड़ी, हाथ हाथ करि गाढ़ो ।
फूले फिरैं जनु अमर भये हैं, प्रीति बिषय सों बाढ़ी२
काहू के मन चार पाँच की, काहू के मन बीस ।
काहू के मन सात आठ की, सब बाँधे जगदीस ॥३॥
अब भये सौतिन[२] हाथ केरे, घर बोघा[३] सो कीन्ह ।
मेरी मेरी कहि उमर गँवाई, कबहुँ राम ना चीन्ह ॥४॥

---

(१) आँचल। (२) माया। (३) बिगड़ा।

दिना चार के घोड़े सोड़े, दिना चार के हाथी।
कहत मलूका दिना चार में, बिछुरि जायँगे साथी ॥५॥

॥ शब्द ७ ॥

मुवा सकल जग देखिया, मैं तो जियत न देखा कोय हो ॥टेक
मुवा मुई को ब्याहता रे, मुवा ब्याह करि देय।
मुए बराते जात हैं, एक मुवा बधाई लेय हो ॥ १ ॥
मुवा मुए से लड़न को, मुवा जोर लै जाय।
मुरदे मुरदे लड़ि मरे, एक मुरदा मन पछिताय हो ॥२॥
अंत एक दिन मरौगे रे, गलि गुलि जैहै चाम।
ऐसी झूठी देह तैं, काहें लेव न साँचा नाम हो ॥३॥
मरने मरना भाँति है रे, जो मरि जानै कोय।
राम दुवारे जो मरै, फिर बहुरि न मरना होय हो ॥४॥
इनकी यह गति जानिके, मैं जहँ तहँ फिरौं उदास।
अजर अमर प्रभु पाइया, कहत मलूकादास हो ॥५॥

॥ शब्द ८ ॥

सोते सोते जन्म गँवाया।
माया मोह में सानि पड़ो सो, राम नाम नहिं पाया ॥१॥
मीठी नींद सोये सुख अपने, कबहूँ नहिं अलसाने।
गाफिल होके महल में सोये, फिर पाछे पछिताने ॥२॥
अजहूँ उठो कहाँ तुम बैठे, बिनती सुनो हमारी।
चहूँ ओर में आहट्ट पाया, बहुत भई भुइँ भारी ॥३॥
बंदीछोर रहत घट भीतर, खबर न काहू पाई।
कहत मलूक राम के पहरा, जागो मेरे भाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

अवधू याही करो विचार ।
दस औतार कहाँ तेँ आये, किन रे गढ़े करतार ॥१॥
केहि उपदेस भये तुम जोगी, केहि बिधि आतम जारा ।
केहि कारन तुम काया सताई, केहि बिधि आतम मारा॥२॥
थोथे वाँट वाँधि के भोँदू, येहि बिधि जाव न पारा ।
ऋद्धि सिद्धि मेँ बूड़ि मरोगे, पकड़ो खेवनहारा ॥ ३ ॥
अगल बगल का पैँड़ा पकड़ा, दिन दिन चढ़ता भारा ।
कहत मलूक सुनो रे भोँदू, अविगत मूल बिसारा ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

नाम हमारा खाक है, हम खाकी बंदे ।
खाकहिँ ते पैदा किये, अति गाफिल गंदे ॥ १ ॥
कबहुँ न करते बन्दगी, दुनिया मेँ भूले ।
आसमान को ताकते, घोड़े चढ़ि फूले ॥ २ ॥
जोरू लड़के खुस किये, साहेब बिसराया ।
राह नेकी की छोड़ि के, बुरा अमल कमाया ॥ ३ ॥
हरदम तिस को याद कर, जिन वजूद सँवारा ।
सबै खाक दर खाक है, कुछ समुझ गँवारा ॥ ४ ॥
हाथी घोड़े खाक के, खाक खानखानी[1] ।
कहैँ मलूक रहि जायगा, औसाफ निसानी ॥ ५ ॥

---

(१) बादशाहत ।

॥ उपदेश ॥

॥ शब्द १ ॥

अब तो अजपा जपु मन मेरे ॥ टेक ॥
सुर नर असुर टहलुवा जा के, मुनि गंधर्व जा के चेरे ॥१॥
दस औतार देखि मत भूलो, ऐसे रूप घनेरे ॥२॥
अलख पुरुष के हाथ बिकाने, जब तें नैन निहारे ॥३॥
अबिगत अगम अगोचर अवधू, संग फिरत हैं तेरे ॥४॥
कह मलूक तू चेत अचेता, काल न आवै नेरे ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

ऐ अजीज ईमान तू, काहे को खोवै।
हिय राखै दरगाह में, तो प्यारा होवै ॥१॥
यह दुनिया नाचीज के, जो आसिक होवै।
भूले जात खोदाय को, सिर धुन धुन रोवै ॥२॥
इस दुनियाँ नाचीज के, तालिब हैं कुत्ते।
लज्जत में मोहित हुए, दुख सहे बहूते ॥३॥
जब लगि अपने आप को, तहकीक न जानै।
दास मलूका रब्ब को, क्योंकर पहिचानै ॥४॥

॥ शब्द ३ ।

साधो भाई अपनी करनी नाहीं ॥ टेक ॥
जो करनी का करैं भरोसा, ते जम के घर जाहीं ॥१॥
ना जानूँ धौं कहाँ मुए थे, ना जानूँ कहँ आये।
ना जानूँ हरि गर्भ बसेरा, कौने भाँति बनाये ॥२॥
महा कठिन यह हरि की माया, या तें कौन बचावै।
कहै जड़ मूलहिं त्यागी, तिन को हाथ लगावै ॥३॥

यह संसार बड़ो भौसागर, प्रलय काल ते भारी ।
बूड़त तें या सोई बाचै, जेहि राखै करतारी ॥ ४ ॥
लच्छ गऊ दे अन्न खात थे, राजा नृग से प्यारे ।
पुन्न करत जमा और गँवाई, लै गिरगिट कै डारे ॥ ५ ॥
गौतम नारि बड़ी पतिबरता, बहुते कीन्हे दाना ।
करनी करि बैकुंट न पैठी, काहे भई पपाना ॥ ६ ॥
मारहु मान छेम करि बैठो, छोड़ो गर्ब गुमाना ।
आपा मेटो राम भजो तुम, कहत मलूक दिवाना ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

आपा खोज रे जिय भाई ।
आपा खोजे त्रिभुवन सूझै, अंधकार मिटि जाई ॥ १ ॥
जोई मन सोई परमेसुर, कोई बिरला अवधू जानै ।
जौन जोगीसुर सब घट व्यापक, सो यह रूप बखानै ॥ २ ॥
सब्द अनाहद होत जहाँ तें, तहाँ ब्रह्म कर बासा ।
गगन मँडल में करत कलोलै, परम जोति परगासा ॥ ३ ॥
कहत मलूका निरगुन के गुन, कोइ बड़भागी गावै ।
क्या गिरही औ क्या बैरागी, जेहि हरि देयँ सो पावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

किरपा कर गुरु जुगत बताई। आपा खोजो भरम नसाई१
आपा खोजे त्रिभुवन सूझै। गुरु परताप काल से जूझै२
सब्द ब्रह्म का करै विचार। सोई चलै जियत होइ छार३
संतन की सेवा चित लावे। पाहन पूजि न मन भरमावै४
कामिनी कनक कलह का भंडा। इन ठगनिन सारा जग डंडा५
होत न हँसै मरत ना रोवै। ता को रंड कबहुं न बिगोवै६
परम तत्त जो दृढ़ कर रहै। माया मोह में कबहुँ न बहै७

गुरु के वचन करै परतीत। सोई सिद्ध जाय जग जीत ८
सत संतोष हिये में राखै। सो जन नाम रसायन चाखै९
काटे कटै न जारे जरै। अर्ध नाम भजन करि तरै १०
न्यारे होयँ पिता और माई। अगिनि बुझै सीतल होइ जाई११
मनुवाँ मारि करै नौ खंड। कबहुँ न सहै देँह का दंड१२
गुरु गोविंद सार मत दीन्ह। भला भया जो आतम चीन्ह १३
बड़े भाग से आतम जागा। कहत मलूक सकल भ्रम भागा१४

॥ शब्द ६ ॥

आपा मेटि न हरि भजे, तेइ नर डूबे।
हरि का मर्म न पाइया, कारन कर ऊबे ॥१॥
करैं भरोसा पुन्न का, साहेब बिसराया।
बूड़ गये तरबोर[1] को, कहुँ खोज न पाया ॥ २ ॥
साध मंडली बैठि के, मूढ़ जाति बखानी।
हम बड़ हम बड़ करि मुए, बूड़े बिन पानी ॥ ३ ॥
तब के बाँधे तेई नर, अजहूँ नहिं छूटे।
पकरि पकरि भलि भाँति से, जमदूतन लूटे ॥ ४ ॥
काम क्रोध सब त्यागि के, जो रामै गावै।
दास मलूका यों कहै, तेहिं अलख लखावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

गर्व न कीजे बावरे, हरि गर्व प्रहारी।
गर्वहिं तें रावन गया, पाया दुख भारी ॥ १ ॥
जरन खुदी[2] रघुनाथ के, मन नाहिं सोहाती।
जा के जिय अभिमान है, ता की तोरत छाती ॥ २ ॥

---

१ अथाह। २ ईर्षा और आपा।

एक दया और दीनता, ले रहिये भाई ।
चरन गहो जाय साध के, रीझैं रघुराई ॥३॥
यही बड़ा उपदेस है, परद्रोह न करिये ।
कह मलूक हरि सुमिर के, भौसागर तरिये ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

ना वह रीझै जप तप कीन्हे, ना आतम को जारे ।
ना वह रीझै धोती टाँगे, ना काया के पखारे ॥१॥
दाया करै धरम मन राखै, घर मैं रहै उदासी ।
अपना सा दुख सब का जानै, ताहि मिलै अविनासी ॥२॥
सहै कुसब्द बादहू त्यागै, छाँड़ै गर्व गुमाना ।
यही रीझ मेरे निरंकार की, कहत मलूक दिवाना ॥३॥

॥ शब्द ६ ॥

सबसे लालच का मत खोटा ।
लालच तें बैपारी सिट्ठी, दिन दिन आवे टोटा[1] ॥१॥
हाथ पसारे आँधर जाता, पानी परहि न भाई ।
माँगे तें मुक मीच भली, अस जीने कौन बड़ाई ॥२॥
माँगे तें जग नाक सिकोरे, गोबिंद भला न मानै ।
अनमाँगे राम गले लगावै, बिरला जन कोइ जानै ॥३॥
जब लग जिव का लोभ न छूटै, तब लग तजै न माया ।
घर घर द्वार फिरै माया के, पूरा गुरु नहिं पाया ॥४॥
यह मैं कही जे हरि रँग राते, संसारी को नाहीं ।
संसारी तो लालच बंधा, देस देसान्तर जाहीं ॥५॥
जो माँगे सो कछू न पावै, बिन माँगे हरि देता ।
कहैं मलूक निःकाम भजै जे, ते आपन करि लेता ॥६॥

---

[1] घाटा ।

॥ शब्द १० ॥

मन तैं इतने भरम गँवावो ।
चलत बिदेस बिप्र जनि पूछो, दिन का दोष न लावो ॥१॥
संझा होय करो तुम भोजन, बिनु दीपक के बारे ।
जौन कहैं असुरन की बेरिया, मूढ़ दई के मारे ॥२॥
आप भले तो सबहि भलो है, बुरा न काहू कहिये ।
जा के मन कछु बसै बुराई, ता सोँ भागे रहिये ॥३॥
लोक बेद का पैंड़ा औरहि, इनकी कौन चलावै ।
आतम मारि पषानै पूजैं, हिरदै दया न आवै ॥४॥
रहो भरोसे एक राम के, सूरे का मत लीजै ।
संकट पड़े हरज नहिं मानो, जिय का लोभ न कीजै ॥५॥
किरिया करम अचार भरम है, यही जगत का फंदा ।
माया जाल मैं बाँधि अँड़ाया[1], क्या जानै नर अंधा ॥६॥
यह संसार बड़ा भौसागर, ता को देखि सकाना[2] ।
सरन गये तोहिं अब क्या डर है, कहत मलूक दिवाना ॥७॥

॥ शब्द ११ ॥

है हजूर नहिं दूर, हमा-जा भर पूर ।
ज़ाहिरा जहान, जा का जहूर पुर नूर ॥१॥
बेसबूह बेनमून, बेचगून ओस्त ।
हमा ओस्त हमा अज़ोस्त, जान-जानाँ दोस्त ॥२॥
शबो रोज़ ज़िकर, फ़िकर ही मैं मशगूल ।
तेहो दरगाह बीच, पड़े हैं क़बूल ॥३॥
साहेब है मेरा पीर, क़ुदरत क्या कहिये ।
कहता मलूक बंदा, तक पनाह रहिये ॥४॥

---

१ गिराया । २ डरा ।

॥ शब्द १२ ॥

न कहो राम कहो राम कहो बावरे।
असर न चूक भोंदू, पायो भला दाँव रे ॥१॥
ान तो को तन दीन्हो, ता को न भजन कीन्हो।
नम सिरानो जात, लोहे कैसो ताव रे ॥२॥
मजो को गाय गाय, रामजो को रिझाव रे।
मजी के चरन कमल, चित्त माहिं लाव रे ॥३॥
हत मलूकदास, छोड़ दे तैं झूठी आस।
ानँद मगन होइ के, हरि गुन गाव रे ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

त रे निर्गुन राग से, गावै कोइ जाग्रत जोगी।
लग रहै संसार से, सो (इस) रस का भोगी ॥१॥
रम करम सब छाँड़, अनूठा यह मत पूरा।
हजै धुन लागी रहै, बाजै अनहद तूरा ॥२॥
हरैं उठतीं ज्ञान की, बरसै रिमझिम मोती।
गन गुफा मैं बैठ के, देखै जगमग जोती ॥३॥
ाव नगरी आसन किया, सुन ध्यान लगाया।
ीनों दसा बिसार के, चौथा पद पाया ॥४॥
ानुभय उपजा भय गया, हद तज बेहद लागा।
ाट उँजियारा होइ रहा, जब आतम जागा ॥५॥
ाय रँग खेलै सम रहै, दुबिधा मनहिं न आनै।
कह मलूक सोइ रावला, मेरे मन मानै ॥६॥

॥ शब्द १४ ॥

बाजीगरे पसारी बाजी। भूल भुलायो सब का जी ॥१॥
देखा मैं मुल्ला बौराना। नाहक पढ़े किताब कुराना ॥२॥

है हजूर वह दूर बतावै। बाँग जिकिर धौं किसे सुनावै
रोजा करै निमाज गुजारै। उरुस' करै और आतम मा
वो भी मुल्ला बड़ा कसाई। जिन तुझको तदवीर सिखा
है बेपीर औ पीर कहावै। करि मुरीद तदवीर सिखावै
ऐसा मुर्सिद कबहुं न करिये। खून करावै तिसतें डरिये
अपने मूड़ अजाब चढ़ावै। पैगम्बर का धोखा लावै ॥
ऐसा मुर्सिद करै जो कोई। दोजख जाय परैगा सोई ॥
दरदमंद दुरवेस कहावै। जो मोहिं राम की रीझ बतावै
साहेब को बैठे लौ लाई। काहू की नहिं करै तमाई'
पाँच तत्त से रहै नियारा। सो दुर्वेस खोदा का प्यारा॥१
जो प्यासे को देवै पानी। बड़ी बंदगी मोहमद मानी॥१३
जो भूखे को अन्न खवावै। सो सिताब' साहेब को पावै॥१४
अपने मन तदबीर कराई। साहेब के दर होय बड़ाई॥१५
जो फकीर ऐसा कोइ होय। फिरै बेबाक न पूछे कोय॥१६
छोड़ै गुस्सा जीवत मरै। तेहिं इजराइल सिजदा करै॥१७
अपना सा दुख सब का जानै। दास मलूका ताको मानै॥१८

॥ मिश्रित ॥

॥ शब्द १ ॥

ाब मैं अनुभव पदहिं समाना ॥ टेक ॥
ाब देवन को भर्म भुलाना, अविगति हाथ बिकाना १
ाहिला पद है देई देवा, दूजा नेम अचारा ।
ाीजे पद मैं सब जग बंधा, चौथा अपरम्पारा ॥ २ ॥
ान्न महल मैं महल हमारा, निरगुन सेज बिछाई ।
ोला गुरु दोउ सैन करत हैं, बड़ी असाइस' पाई ॥ ३ ॥
ाक कहै चल तीरथ जइये, (एक) ठाकुरद्वार बतावै ।
ारम जोति के देखे संतो, अब कछु नजर न आवै ॥४॥
ाावा गवन का संसय छूटा, काटी जम की फाँसी ।
ाहै मलूक मैं यही जानिके, मित्र कियो अविनासी ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

सबहिन के हम सबै हमारे। जीव जंतु मोहिं लगैं पियारे१
तीनौं लोक हमारी माया। अंत कतहुँ से कोइ नहिं लाया २
छत्तिस पवन हमारी जात। हमहीं दिन और हमहीं रात ३
हमहीं तरवर कीट पतंगा। हमहीं दुर्गा हमहीं गंगा ४
हमहीं मुल्ला हमहीं काजी। तीरथ बरत हमारी बाजी ५
हमहीं पंडित हमीं बैरागी। हमहीं सूम हमीं हैं त्यागी ६
हमहीं देव औ हमहीं दानौ। भावै जाको जैसा मानौ ७
हमहीं चोर हमहीं बटपार। हम ऊँचे चढ़ि करैं पुकार ८
हमहिं महावत हमहीं हाथी। हमहीं पाप पुन्न के साथी९
हमहिं अस्व' हमहीं असवार। हमहिं दास हमहीं सरदार१०

(१) आराम, मारम। (२) घोड़ा।

हमहीं सूरज हमहीं चंदा । हमहीं भये नन्द के नन्दा १
हमहीं दसरथ हमहीं राम । हमरे क्रोध हमारे काम १
हमहीं रावन हमहीं कंस । हमहीं मारा अपना वंस १
हमहिं जियावैं हमहीं मारैं हमहीं बोरैं हमहीं तारैं १
जहाँ तहाँ सब जोति हमारी । हमहिं पुरुष हमहीं है नारी१
ऐसी बिधि कोई लव लावै । सो अविगत से टहल करावै१
सहै कुसब्द और सुमिरै नाँव। सब जग देखै एकै भाव१
या पद का कोई करै निबेरा । कह मलूक मैं ता का चेरा१

॥ शब्द ३ ॥

बाबा मन का है सिर तले ॥ टेक ॥
माया के अभिमान भूले, गर्व ही में गले ॥ १ ॥
जिभ्या कारन खून कीये, बाँधि जमपुर चले ॥ २ ॥
रामजी सोँ भये बेमुख, अगिन अपनी जले ॥ ३ ॥
हरि भजे से भये निरभय, टारहू नहिं टरे ॥ ४ ॥
कह मलूका जहँ गरीबी, तेई सब से भले ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

तू साहेब लीये खड़ा, बंदा नासबूरा ।
जैसा जिसको चाहिये, देता भरपूरा ॥ १ ॥
लाख करोड़ जो गाँठि में, तौ भी यह रोवै ।
मरता मारे फिकिर के, सुख कबहुं न सोवै ॥ २ ॥
आँखैं फेरै बुरी भाँति, देखत डर लागै ।
लेखा जो कौड़ी चले, दिन चारक जागै ॥ ३ ॥
बिन संतोष दुखी भया, बहुते भरमाया ।
कहत मलूक यह जानकर, सरनागति आया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

राम मैं ससा भयो तन धरि के ।
प्रभु की सरन मैँ कीन्ह बिलावट आनि घुसा मैं डरिके ॥१॥
कुकरा पाँच पचीस कुकरिया सदा रहैं मोहिं घेरे ।
ठाढ़ होउँ तौ पिंडुरी पकरैं बैठे आँखि गुरेरैं ॥ २ ॥
कलुवा कबरा मोतिया झबरा बुचवा मोहिं डेरवावे ।
जब तैं लियो तिहारो पीछा कोऊ निकट न आवे ॥३॥
इन पाँचो मैं देखा विष ही एकौ नहिँ मन माना ।
काटि काटि मैं कीन्ह अहेरा कहत मलूक दिवाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

बन्दे दुनियाँ को दीन गँवाया[1] ।
सो दुनियाँ तेरे संग न लागी, मूड़ अजाब चढ़ाया ॥१॥
करम जो लागा बदी खलक की, किन तुझको फर्माया ।
गुनहगार तूँ हुआ सरासर, दोजख बाँध चलाया ॥२॥
खाक सेती जिन पैदा कीन्हा सो साहेब बिसराया ।
मोहकम[2] मार पड़ी गुरजन की, तब कछु उपाब न आया॥३
अब किसहूँ को दोष न दीजै, गंदा अमल कमाया ।
कह मलूक जब खिजमत पहुँचा, सोई नतीजा पाया ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

मन नाहिं तौले यार, का रे तौले बनियाँ ॥ टेक ॥
पाट बाट सोध लेइ, सम रहैं नकुनियाँ[3] ।
बिसरे ना सुरति, नाहिं फेरि होय तनियाँ ॥१॥

(१) [illegible] के लिये परमार्थ खोया । (२) भारी । (३) डंडी के सिरे ।

पाँच औ पचीस चोर लूटिहैं दुकनियाँ ।
सुनहि ना गोहार कोउ, हाकिम हैरनियाँ ॥ २ ॥
कहत मलूकदास, तोलै जब चार रास ।
साहेब मिल साहु होय, मिलै तब दमनियाँ[1] ॥ ३ ॥

॥ शब्द ८ ॥

दीन-बंधु दीना-नाथ मेरी तन हेरिये ॥ टेक ॥
भाई नाहिँ बंधु नाहिँ कुटुम परिवार नाहिँ,
ऐसा कोई मित्र नाहिँ जाके ढिग जाइये ॥ १
सोने की सलैया नाहिँ रूपे का रुपैया नाहिँ,
कौड़ी पैसा गाँठ नहीं जासे कछु लीजिये ॥ २
खेती नाहिँ बारी नाहिँ बनिज ब्यौपार नाहिँ,
ऐसा कोई साहु नाहिँ जासाँ कछु माँगिये ॥ ३
कहत मलूकदास छोड़दे पराई आस,
राम धनी पाय के अब का की सरन जाइये ॥ ४

कवित्त

(१)

परम दयाल राया राय परसोत्तम जी,
ऐसो प्रभु छाँड़ि ओर कौन के कहाइये ॥ १ ॥
सीतल सुभाव जा के तामस को लेस नहीं,
मधुर बचन कहि राखै समझाइये ॥ २ ॥

---

(१) ग्राम।

भक्त-बछल गुन-सागर कला-निधान,
जाको जस पाँत नित बेदन में गाइये ॥ ३ ॥
कहत मलूक बल जाउँ ऐसे दरस की,
अधम- उधार जा के देखे सुख पाइये ॥ ४ ॥

२

जौन कोई भूखा गोपाल की मोहब्बत का।
तौन दुर्वेसन का पैंड़ा निराला है ॥ १ ॥
रहते महजूज[1] वे तो साहेब की सूरत पर।
दुनियाँ को तर्क[2] मार दीन को सम्हाला है ॥ २ ॥
किसो से न करैं स्वाल उनका कुछ और ख्याल।
फिरते अलमस्त वजूद[3] भी बिसारा है ॥ ३ ॥
कहता मलूक उन्हें सूझना है बेचुगून[4]।
किसी की गरज नहीं अन्दर अँधियारा है ॥ ४ ॥

३

माला कहाँ औ कहाँ तसबीह,
अब चेत इनहिं कर टेक न टेकै ॥ १ ॥
काफिर कौन मलेच्छ कहावन,
संध्या निवाज समय करि देखै ॥ २ ॥
है जमराज कहाँ जबरील है,
काजी है आप हिसाब के लेखै ॥ ३ ॥
पाप औ पुन्य जमा कर बूझत
देत हिसाब कहाँ धरि फेकै ॥ ४ ॥
दास मलूक कहा भरमो तुम,
राम रहीम कहावत एकै ॥ ५ ॥

---

१ परे दूर। २ त्याग कर। ३ देह। ४ बेचून। ५ देनिपत।

(४)

माला कहाँ और कहाँ तसबीह,
अय चेत इनहिं कर टेक न टेकी ॥ १ ॥
बाँधे डोल अकास पताल लौं,
झूलन जात कहे हरि सेती ॥ २ ॥
लोक की लाज में होत अकाज है,
कौन सहै मेरे साँसत एती ॥ ३ ॥
दास मलूक दिन दुइ की बात है,
पायो राम छुट्यो जम सेती ॥ ४ ॥

(५)

बीर रघुवीर पैगम्बर खोदा मेरे,
कादिर करीम काजी माया मत खोई है ॥ १ ॥
राम मेरे प्रान रहमान मेरे दीन इमान,
भूल गयो भैया सब लोक लाज धोई हैं ॥ २ ॥
कहत मलूक मैं तो दुविधा न जानौं दूजी,
जोई मेरे मन में नैनन में सोई है ॥ ३ ॥
हरि हजरत मोहिं माधव मकुन्द की सौं,
छाँड़ि केसवराय मेरी दूसरो न कोई है ॥ ४ ॥

(६)

जिस के दीदार को मुसाफिरी को दिल हुआ ।
बहुत खूब ऐसा जो नगीच[1] कर पाइये ॥ १ ॥
खाब की दुनियाँ को दिल कौन करै सात पाँच[2] ।
बंदे हैं जिसके क्यों न तिसके कहलाइये ॥ २ ॥

---

१ पास । २ हैरान, डाँवाडोल ।

अगम अगोचर सबहिन में रहता नियार।
जा को जस नीत वर्त्त संतन बार बार गाइये ॥ ३ ॥
कहता मलूक महबूब पिया खूब यार।
सिर लगाय जमीं में सिरदा[1] कराइये ॥ ४ ॥

७

बार बार करता हूँ नसीहत मैं तेरी तईं।
क्यों वे हरामखोर साँईं तू बिसारा है ॥ १ ॥
जिसका नित नोन खात मुतलक भी ना डरात।
अच्छा वजूद पाय औरत से हारा है ॥ २ ॥
कौल से बेकौल हुआ किसी की न लेत दुआ।
दोजख[2] के लिये दिल कौन कौन मारा है ॥ ३ ॥
कहता मलूक अब तोबा कर साहेब से।
छाँड़ दे कुराह जिन जारे पर जारा है ॥ ४ ॥

८

बंदा तैं गंदा गुनाह करै बार बार
साँईं तू सिरजनहार मन में न आनिये ॥ १ ॥
हाथ कछु मेरे नहीं हाथ सब तेरे साँईं।
खलक के हिसाब बीच मुझको मत सानिये ॥ २ ॥
रहम की नजर कर कुरहम दिल से दूर कर।
किसी के कहे सुने चुगली मत मानिये ॥ ३ ॥
कहता मलूक मैं रहता पनाह तेरी।
दाता दयाल मुझे अपना कर जानिये ॥ ४ ॥

---

[1] सिजदा। [2] पेट।

९

गाफिल है बंदा गुनाह करै बार बार।
काम पड़े साहेब धौं कैसा फरमावैगा ॥ १ ॥
आखिर जमाने को डरता है मेरा दिल।
जब जबरील[1] हाथ गुर्ज लिये आवेगा ॥ २ ॥
खाब सी दुनियाँ दिल को न करै सात पाँच।
काली पीली आँखैं कर फिरिस्ता दिखलावैगा ॥ ३ ॥
कहता मलूक किसी मुल्क में बचाव नहीं।
अब कीजै किरपा तब मेरे मन भावैगा ॥ ४ ॥

१०

भील कद करी थी भलाई जिया आप जान।
फील कद हुआ था मुरीद कहु किसका ॥ १ ॥
गीध कद ज्ञान की किताब का किनारा छुआ।
व्याध और बधिक निसाफ[2] कहु तिसका ॥ २ ॥
नाग कद माला लैके बंदगी करी थी बैठ।
मुझको भी लगा था अजामिल का हिसका ॥ ३ ॥
एते बदराहों की बदी करी थी माफ।
जन मलूक अजाती पर एती करी रिस का ॥ ४ ॥

११

मेहर की कफनी औ कुलाह भी मेहर का।
मेहर का मुतंगा[3] इस कमर में लगाइये ॥ १ ॥

---

१ मौत का फिरिश्ता। २ इन्साफ। ३ मूँझ की करधनी जो साधू लोग पहिनते हैं।

मेहर का जामा और तोमा[1] भी मेहर का ।
मेहर का आपा इस दिल को पिलाइये ॥ २ ॥
मेहर का आसा[2] और तमासा भी मेहर का ।
मेहर के महल बिच मेहरबान को मनाइये ॥ ३ ॥
कहता मलूक बन्दे कहर की लहर में ।
कोटिक बह गये बिन मेहर मेहरबान किस राह से पाइये ४

(१२)

अदम कबित्त का जिसकी कबिताई करूँ,
याद करूँ उसको जिन पैदा मुझे किया है ॥१॥
गर्भ बास पाला आतस मैं नहिं जाला,
तिसको मैं बिसारूँ तो मैं किसकी आस जियाहूँ ॥२॥
लानत इस दुनियाँ को जो दीन से बेदीन करे,
खाक ऐसे खाने जिन ईमान बेंच लिया है ॥३॥
कहता मलूक मैं बिकाना हरि मूरत पर,
जिस के दीदार से जुड़ाता मेरा हिया है ॥४॥

(१३)

सुपने के सुक्ख देख मोह रहे मूढ़ नर,
जानत हमारे दिन ऐसहिं बिहायँगे ॥ १ ॥
क्या करेंगे भोग अच्छो सुन्दरी रमैंगे नित्त,
छाँह को लै चारि जून खूँद खूँद खायँगे ॥ २ ॥
सोकरा सो काल है फलसरो[3] सो लपेट लेहैं,
चंगुल के तले दबे चिचयायँगे ॥ ३ ॥
कहत मलूकदास लेखा देत होइहैं दुक्ख,
पड़े दरबार जाय अन्त पछितायँगे ॥ ४ ॥

---

१ तोबा । २ डंडा, छड़ी । ३ मादा चिड़िया ।

(१५)

दीन-दयाल सुनी जब तें तब तें हिया में कछु ऐसी बसी है।
तेरो कहाय के जाऊँ कहाँ मैं तेरे हित की पट[1] खैंच कसी है ॥१॥
तेरोई एक भरोस मलूक को तेरे समान न दूजो जसी है।
एहो मुरारि पुकारि कहौं अब मेरी हँसी नहिं तेरो हँसी है॥

साखी

॥ गुरुदेव ॥

जीती बाजी गुर प्रताप तें, माया मोह निवार।
कहँ मलूक गुरु कृपा तें, उतरा भवजल पार ॥१॥
सुखद पंथ गुरुदेव यह, दीन्हो मोहिं बताय।
ऐसो ऊपट[2] पाय अब, जग मग चलै बलाय ॥२॥
भ्रम भागा गुरु वचन सुनि, मोह रहा नहिं लेस।
तब माया छल हित किया, महा मोहनी भेस ॥३॥
ता को आवत देखि कै, कही बात समुझाय।
अब मैं आया हरि सरन, तेरी कछु न बसाय ॥४॥
मलुका सोई पीर है, जो जानै पर पीर।
जो पर पीर न जानही, सो फकीर बेपीर ॥५॥
बहुतक पीर कहावते, बहुत करत हैं भेस।
यह मन कहर खोदाय का, मारे सो दुरवेस ॥६॥

---

१ पटका। २ उपरवार।

पीर पीर सब कोई कहै, पीरै चीन्हत नाहिं ।
जिन्दा पीर को मारि के, मुरदहिं ढूँढ़न जाहिं ॥७॥

॥ साध जन ॥

जहाँ जहाँ बच्छा फिरै, तहाँ तहाँ फिरै गाय ।
कहैं मलूक जहाँ संत जन, तहाँ रमैया जाय ॥८॥
भेष फकीरी जे करै, मन नहिं आवै हाथ ।
दिल फकीर जे हो रहे, साहिब तिनके साथ ॥९॥

॥ नाम ॥

जीवहुं तें प्यारे अधिक, लागैं मोहीं राम ।
बिन हरि नाम नहीं मुझे, और किसी से काम ॥१०॥
कह मलूक हम जबहिं तें, लीन्हो हरि की ओट ।
सोवत हैं सुख नींद भरि, डारि भरम की पोट ॥११॥
उहाँ न कबहूँ जाइये, जहाँ न हरि का नाम ।
डोगंबर[1] के गाँव में, धोबी का क्या काम ॥१२॥
राम राम के नाम को, जहाँ नहीं लवलेस ।
पानी तहाँ न पीजिये, परिहरिये सो देस ॥१३॥
गाँठी सत्त कुपीन[2] में, सदा फिरै निःसंक ।
नाम अमल माता रहै, गिनै इन्द्र को रंक ॥१४॥
राम नाम जिन जानिया, तेई बड़े सपूत ।
एक राम के भजन बिन, काँगा[3] फिरै कपूत ॥१५॥

(१) नागा । (२) लँगोटी । (३) कंगाल ।

राम नाम एकै रती, पाप के कोटि पहाड़ ।
ऐसी महिमा नाम की, जारि करै सब छा
राम नाम औषध करो, हिरदै राखो याद ।
संकट में लौ लाइये, दूर करै सब व्याध
धर्म हिँ का सौदा भला, दाया जग व्योहार ।
राम नाम की हाट ले, बैठा खोल किवा
रहूँ भरोसे राम के, बनिजे' कबहुँ न जावँ ।
दास मलूका योँ कहै, हरि बिड़वे' मैं खाव
साहेब मेरा सिर खड़ा, पलक पलक सुधि ले ।
जबहीं गुरु किरपा करैँ, तबहिँ राम कछु दे
मोदी सब संसार है, साहेब राजा राम ।
जा पर चिट्ठी ऊतरे, सोई खरचे दाम ॥
औरहिँ चिन्ता करन दे, तू मत मारे आह ।
जा के मोदी राम से, ताहि कहा परवाह

॥ बिनती ॥

नमो निरंजन निरंकार, अविगति पुरुष अलेख ।
जिन संतन के हित धर्यो, जुग जुग नाना भेख
हरि भक्तन के काज हित, जुग जुग करी सहाय ।
सो सिव सेस न कहि सकै, कहा कहूँ मैं गाय
राम राय असरन सरन, मोहिँ आपन करि लेहु ।
संतन सँग सेवा करौँ, भक्ति मजूरी देहु ॥
भक्ति मजूरी दीजिये, कीजै भवजल पार ।
घेरत है माया मुझे, गहे बाँह बरियार ॥

(१) व्यौपार को । (२) कमाय ।

॥ प्रेम ॥

प्रेम नेम जिन ना कियो, जीतो नाहीं मैन[1] ।
अलख पुरुष जिन ना लख्यो, छार परो तेहि नैन ॥२७॥
कठिन पियाला प्रेम का, पिये जो हरि के हाथ ।
चारो जुग माता रहै, उतरै जिय के साथ ॥ २८ ॥
बिना अमल माता रहै, बिन लस्कर बलवंत ।
बिना बिलायत साहेबी, अंत माहिँ बेअंत ॥ २९ ॥
रात न आवै नीँदड़ी, थरथर काँपै जीव ।
ना जानूँ क्या करैगा, जालिम मेरा पीव ॥ ३० ॥
करै भक्ति भगवंत की, करै कबहुँ नहिँ चूक ।
हरि रस मेँ राचो रहै, साँची भक्ति मलूक ॥ ३१ ॥
मलूक सो माता सुंदरी, जहाँ भक्त औतार ।
और सकल बाँझि भई, जनमे खर कतवार ॥ ३२ ॥
सोई पूत सपूत है, जो भक्ति करे चित लाय ।
जरा मरन तेँ छुटि परै, अजर अमर होइ जाय ॥ ३३ ॥
सब बाजे हिरदे बजैँ, प्रेम पखावज तार ।
मंदिर ढूँढ़त को फिरै, मिल्यो बजावनहार ॥ ३४ ॥
करै पखावज प्रेम का, हृदय बजावै तार ।
मनै नचावै मगन होय, तिन का मता अपार ॥ ३५ ॥

॥ ज्ञान ॥

जब लग थो अँधियार घर, मूस थके सब चोर ।
जब मंदिर दीपक बरचो बहो चोर धन मोर ॥ ३६ ॥

(१) कामदेव ।

मन मिरगा बिन मूड़ का, चहुँदिस चरने जाय।
हाँक ले आया ज्ञान तब, बाँधा ताँत लगाय ॥ ३७ ॥

॥ गुप्त की महिमा ॥

जो तेरे घट प्रेम है, तो कहि कहि न सुनाव।
अंतरजामी जानिहै, अंतरगत का भाव ॥ ३८ ॥
गुप्त प्रगट जेती करी, मेरे मन की खूम।
अंतरजामी रामजी, सब तुम को मालूम ॥ ३९ ॥
सुमिरन ऐसा कीजिये, दूजा लखै न कोय।
ओंठ न फरकत देखिये, प्रेम राखिये गोय ॥ ४० ॥
माला जपों न कर जपों, जिभ्या कहौं न राम।
सुमिरन मेरा हरि करै, मैं पाया बिसराम ॥ ४१ ॥

॥ मूर्त्ति पूजा तीर्थ भ्रमन कर्म्म धर्म्म ॥

साधो दुनियाँ बावरी, पत्थर पूजन जाय।
मलूक पूजै आतमा, कछु माँगे कछु खाय ॥ ४२
जेती देखे आतमा, तेते सालिगराम।
बोलनहारा पूजिये, पत्थर से क्या काम ॥ ४३
आतम राम न चीन्हहीं, पूजत फिरै पषान।
कैसेहु मुक्ति न होयगी, कोटिक सुनो पुरान ॥ ४४
किरतिम देव न पूजिये, ठेस लगे फुटि जांय।
कहँ मलूक सुभ आतमा, चारो जुग ठहराय ॥ ४५ ॥
देवल पुजे कि देवता, की पूजे पाहाड़।
पूजन को जाँता भला, जो पीस खाय संसार ॥ ४६ ॥

हम जानत तीरथ बड़े, तीरथ हरि की आस।
जिनके हिरदे हरि बसे, कोटि तिरथ तिन पास ॥ ४७ ॥
संध्या तर्पन सब तजा, तीरथ कबहुँ न जाउँ।
हरि हीरा हिरदे बसे, ताही भीतर न्हाउँ ॥ ४८ ॥
मक्का मदिना द्वारका, बद्री और केदार।
बिना दया सब झूठ है, कहैं मलूक बिचार ॥ ४९ ॥
राम राय घट में बसे, ढूँढ़त फिरैं उजाड़।
कोई कासी कोई प्राग में, बहुत फिरैं झख मार ॥ ५० ॥

॥ दया ॥

दुखिया जन कोई दूखवै, दुखए अति दुख होय।
दुखिया रोय पुकारि है, सब गुड़ माटी होय ॥ ५१ ॥
हरी डारि ना तोड़िये, लागै छूरा बान।
दास मलूका यों कहै, अपना सा जिव जान ॥ ५२ ॥
जे दुखिया संसार में, खोवो तिन का दुक्ख।
दलिद्दर सौंप मलूक को, लोगन दीजै सुक्ख ॥५३॥

॥ हिंसा ॥

पीर सभन की एक सी, मूरख जानत नाहिं।
काँटा चूभे पीर होय, गला काटे कोउ खाय ॥५४॥
कुंजर चींटी पशू नर, सब में साहेब एक।
काटै गला खोदाय का, करै सूरमा लेख ॥५५॥
सब कोउ साहेब बन्दते, हिन्दू मूसलमान।
साहेब तिन को बन्दता, जिसका ठौर इमान ॥५६॥

॥ दया ॥

दया धर्म हिरदे बसे, बोले अमृत बैन।
तेई ऊँचे जानिये, जिन के नीचे नैन ॥५७॥
सब पानी की चूपरी, एक दया जग सार।
जिन पर-आतम चीन्हिया, तेही उतरे पार ॥५८॥

॥ दुर्जन ॥

मलूक बाद न कीजिये, क्रोधे देव बहाय।
हार मानु अनजान तैं, बक बक मरे बलाय ॥
कल्पि डाहि' जे लेत हैं, या तैं पाप न और।
कह मलूक तेहि जीव को, तीन लोक नहिं ठौर ॥
मूरख को का बोधिये, मन में रहो बिचार।
पाहन मारे क्या भया, जहँ टूटै तरवार ॥६
चार मास घन बरसिया, महा सुखम घन नीर।
ऐसी मोहकम बख्तरी, लगा न एको तीर ॥६
दाग जो लागा लील का, सौ मन साबुन धोय।
कोटि बार समझाइया, कौवा हंस न होय ॥६
दुर्जन दुष्ट कठोर अति, ता की ज़ात न ऐंड़।
स्वान पूँछ सुधरै नहीं, अंत टेढ़ की टेढ़ ॥६१
चार पहर दिन होत रसोई, तनिक न निकसत टूक।
कह मलूक ता मँदिल में, सदा रहत हैं भूत ॥६
दुखदाई सब तैं बुरा, जानत है सब कोय।
कह मलूक कंटक मुवा, धरती हलकी होय ॥६६

(१) कल्पा और सता कर।

॥ मन ॥

जो मन गया तो जान दे, दृढ़ करि राखु सरीर ।
बिन जिह[1] चढ़ी कमान का, क्या लागेगा तीर ॥६७॥
कोई जीति सकै नहीं, यह मन जैसे देव ।
याके जीते जीत है, अब मैं पायो भेव ॥६८॥
मन जीते बिन जो करै, साधन सकल कलेस ।
तिन का ज्ञान अज्ञान है, नाहिं गुरू उपदेस ॥६९॥
तैं मत जानै मन मुवा, तन करि डारा खेह ।
ता का क्या इतबार है, जिन मारे सकल बिदेह ॥७०॥

॥ माया ॥

माया मिसरी की छुरी, मत कोई पतियाय ।
इन मारे रसबाद के, ब्रह्महिं ब्रह्म लड़ाय ॥७१॥
माया मगन महंत के, तुम मत बैठो पास ।
कौड़ो कारन लड़ि मरै, कथनी कथै पचास ॥७२॥
नारी नाहि निहारिये, करै नैन की चोट ।
कोई एक हरि जन ऊबरे, पारब्रह्म की ओट ॥७३॥
नारी घेँटी अमल की, अमली सब संसार ।
कोइ ऐसा सूफी ना मिला, जो सँग उतरै पार ॥७४॥

॥ चेतावनी ॥

जागो रे अब जागो भैया, सिर पर जम की धार ।
ना जानूँ कौने घरी, केहि ले जैहै मार ॥ ७५ ॥

(१) चिल्ला या धनुष की डोरी ।

गर्व भुलाने दँह के, रचि रचि बाँधे पाग।
सो दँही नित देखिके, चोँच सँवारे काग ॥७६॥
सुंदर दँही पाय के, मत कोइ करै गुमान।
काल दरेरा खायगा, क्या बूढ़ा क्या ज्वान ॥७७॥
सुंदर दँही देखिके, उपजत है अनुराग।
मढ़ो न होती चाम की, तो जीवत खाते काग ॥७८॥
उतरे आय सराय में, जाना है बड़ कोह।
अटका आकिल काम बस, ली भठियारी मोह ॥७९॥
जेते सुख संसार के, इकट्ठे किये बटोर।
कन थोरे काँकर घने, देखा फटक पछोर ॥८०॥
इस जीने का गर्व क्या, कहाँ दँह की प्रीत।
बात कहत ढह जात है, बारू की सी भीत ॥८१॥
मलूक कोटा झाँझरा, भीत परी भहराय।
ऐसा कोई ना मिला, जो फेर उठावै आय ॥८२॥
दँही होय न आपनी, समुझ परी है मोहिँ।
अबहीं तैं तजि राख तूं, आखिर तजिहै तोहिँ ॥८३॥

॥ मिश्रित ॥

काम मिलावै राम को, जो राखै यह जीत।
दास मलूका योँ कहै, जो मन आवै परतीत ॥ ८४ ॥
वहाँ न कोई पहूँचा, जहाँ बसत हैं राम।
महा बिकट वो पंथ है, पैंड़ा मारै काम ॥ ८५ ॥
जहाँ जहाँ दुख पाइया, गुरु को थापा सोय।
[illegible] सिर टक्कर लगै, तब हरि सुमिरन होय ॥ ८६ ॥

आदर मान महत्व सत, बालापन को नेह।
यह चारो तबहीं गये, जबहिं कहा कछु देह ॥ ८७ ॥
हरि रस में नाहीं रचा, किया काँच व्योहार।
कह मलूक वोही पचा, प्रभुता को संसार ॥ ८८ ॥
प्रभुताही को सब मरै, प्रभु को मरै न कोय।
जो कोई प्रभु को मरै, तो प्रभुता दासी होय ॥ ८९ ॥
मानुष बैठे चुप करे, कदर न जानै कोय।
जबहीं मुख खोलै कली, प्रगट बास तब होय ॥ ९० ॥
सब कलियन में बास है, बिना बास नहिं कोय।
अति सुचित्त में पाइये, जो कोइ फूली होय ॥९१॥

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

जीवन-चरित्र हर महात्मा के उन की बानी के आदि में दिया है

गुलाल साहिब (भीखा साहिब के गुरू) की बानी और जीवन-चरित्र ...	॥=)॥
बाबा मलूकदास जी की बानी और जीवन चरित्र	≈)
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	)॥
यारी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र	=)॥
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र	≈)॥
केशवदास जी की अमीघूंट और जीवन-चरित्र	=)
धरनीदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	।)
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र	।=)॥
सहजो बाई की बानी और जीवन-चरित्र	।=)
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र	≈)॥
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी]	१)

[प्रत्येक महात्मा के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित]

,, ,, भाग २ [शब्द]	१)

[ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं दी है]

दूसरी पुस्तकें

लोक परलोक हितकारी [जिसमें १०२ स्वदेशी और विदेशी संतों, महात्माओं और विद्वानों और ग्रंथों के अनुमान ६५० चुने हुए वचन १६२ पृष्ठों में छपे हैं] — ऐतिहासिक और परिशिष्ट स — जिल्द बँधी १ / बेजिल्द ॥

(परिशिष्ट लोक परलोक हितकारी) ≈)

अहिल्याबाई का जीवन चरित्र अँग्रेज़ी पद्य में ... ...

नागरी सीरीज़

सिद्धि ... ...

उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा ... ...

दाम में डाक महसूल व वेल्यू-पेएबल कमिशन शामिल नहीं है वह इर ऊपर लिया जायगा।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।

Printed at The Belvedere Steam Printing Works, Allahabad, by E. Hall

दूलनदासजी की बानी

(जीवन-चरित्र सहित)

जिस में उन परम भक्त के चुने हुए पद और साखियाँ छपी हैं और फुटनोट में गूढ़ शब्दों के अर्थ और संकेत दिये हैं।

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुई।

सन् १९१४

दाम ≠)

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व-साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैं, कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के संक्षेप वृत्तांत और कौतुक फुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत ख़र्च होता है तो भी सर्व-साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ (रायल) से अधिक नहीं रक्खा गया है।

मोनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

नवंबर १६१४ ई०

इलाहाबाद।

पृष्ठ

ड

त

द

ध

न

प

ब

ह

साखी

जीवन-चरित्र
महात्मा दूलनदास जी का

महात्मा दूलनदास जी के जीवन का प्रमाणिक वृत्तान्त भी कितने ही प्रसिद्ध साधों और भक्तों की भाँति नहीं मिलता। यह जगजीवन साहिब के गुरमुख चेले थे जो थोड़े बरस अट्ठारहवें शतक विक्रमीय के पिछले भाग में और विशेष काल तक उन्नीसवें शतक के अगले भाग में वर्त्तमान थे।

यह जाति के सोम-वंशी ठाकुर थे जिनका जन्म समेसी गाँव ज़िला लखनऊ में एक ज़मींदार के घर हुआ। जगजीवन साहिब से मौज़ा सरदहा में उपदेश लेने पर यह बहुत काल तक उन के संग कोटवा में रहे फिर ज़िला रायबरेली में धर्म्मे नाम का एक गाँव बसाया जहाँ आकर बिश्राम किया और बहुत काल तक परमार्थ का सदाव्रत बाँट कर चोला छोड़ा।

इन के चमत्कार की कथाओं में एक कथा यह प्रसिद्ध है कि बाराबंकी के उमापुर गाँव में एक साधू नेवलदासजी बिराजते थे जिन के पास एक मुसल्मान फ़क़ीर रहा करता था। एक दिन नेवलदासजी ने उस फ़क़ीर से कहा कि तेरे जीवन का काग़ज़ फटाही चाहता है दस दिन और रह गये हैं। यह सुन कर फ़क़ीर ने सोचा कि इसी मीआद में जगजीवन साहिब की चौदहो गद्दियों और चारो पायों का दर्शन करलूँ, सो सिवाय महात्मा दूलनदास जी के पाये के, सब गद्दियाँ और तीन पायों के दर्शन किये ते सब ने नेवलदास जी साधू के बचन के सकारा, पर जब वह महात्मा दूलनदास जी के पास नवें दिन पहुँचा और हाल कह कर भभूत माँगी ते महात्माजी बोले कि नेवलदास ने मिथ्या नहीं कहा था परंतु काग़ज़ तेरे "जीवन" का नहीं फटा है बरन तेरे दारिद्र का। फिर उसकी प्रार्थना पर उसे दूसरे दिन तक अपने चरनों में रहने की आज्ञा दी। जब मरने का दिन बीत गया ते वह फ़क़ीर ख़ुश ख़ुश

नेवलदास साधू के पास गया और अपना वृत्तान्त कहा जिस पर वह साधू हँ
कर बोला कि दूलन दफ़्तर का मालिक है अपने सामर्थ से तेरे जीवन के काग़
की जगह तेरे दरिद्र का कागज़ फाड़ दिया अब जा कर निःशंक भजन में लग

दूलनदास जी गृहस्थ आश्रम ही में रहे, जाहिर में ज़मींदारी के काम के
नहीं छोड़ा और यही मर्य्यादा जगजीवन साहिब के समस्त गद्दियों और पाये
की है।

दूलनदास जी के पदों और साखियों के हम कई बरस से खोज में थे औ
कोटवा के गुरुधाम से बहुत जतन करके मँगाना चाहा परंतु न मिले। थोड़े दिन हुए
राजा पृथ्वीपाल सिंह साहिब रईस ज़िला बाराबंकी ने कृपा करके थोड़े से पद भेजे
फिर ठाकुर गंगा बख़्श सिंह जी ज़मींदार मौज़ा टँडवा ज़िला फ़ैज़ाबाद ने विशेष
शब्द अनुग्रह करके भेजे और कुछ और इधर उधर से इकट्ठा करके यह पुस्तक
छापी जाती है। इन दोनों महाशयों को हम हृदय से धन्यवाद देते हैं॥

इलाहाबाद, अगहन, सम्वत १९७१ } अधम, एडिटर, संतबानी पुस्तक-माला।

दूलनदास जी
की
बानी

नाम महिमा ।

॥ शब्द १ ॥

नाम सुमिरु मन मुरुख अनारी ।
छिन छिन आयू घटत जातु है, समुझि गहहु सत डोरि सँभारी ॥१
यह जीवन सुपने को लेखा, का भूलसि झूठी संसारी ।
अंत काल कोइ काम न अइहै, मातु पिता सुत बंधू नारी ॥२॥
दिवस चारि को जगत सगाई, आखिर नाम सनेह करारी ॥
रसना सत्त नाम रटि लावहु, उघरि जाइ तोरि कपट किवारी ॥३॥
नामकि डोरि पोढ़ि धरनी धरु, उलटि पवन चढ़ु गगन अटारी ।
तहँ संत साहिब अलख रूप वै, जन दूलन करु दरस दिदारी ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

मन सत्य नाम रट लाउ रे ॥ टेक ॥
राति माति रहु नाम रसायन, अवर सबहिं बिसराउ रे॥१॥
त्रिकुटी तिरथ प्रेम जल पूरन, तहाँ सुरति अन्हवाउ रे ॥२॥
करि अस्नान होहु तुम निर्मल, दुरमति दूरि बहाउ रे ॥३॥
दूलनदास सनेह डोरि गहि, सुरति चरन लपटाउ रे ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

कोइ बिरला यहि विधि नाम कहै ॥ टेक ॥

मंत्र अमोल नाम दुइ अच्छर, बिनु रसना रट लागि रहै ॥१॥
होठ न डोलै जीभ न बोलै, सूरत धरनि दिढ़ाइ गहै ॥२॥
दिन औ राति रहै सुधि लागी, यह माला यह सुमिरन है ॥३॥
जन दूलन सत गुरन बतायो, ता की नाव पार निबहै ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

रहु मन नाम को डोरि सँभारे ।

धृग जीवन नर नाम भजन बिनु, सब गुन वृथा तुम्हारे ॥१॥
पाँच पचीसो के मद माते, निस दिन साँझ सकारे ।
बंदी-छोर नाम सुमिरन बिनु, जन्म पदारथ हारे ॥२॥
अजहुँ चेत करु हेत नाम तैं, गज गनिका जिन्ह तारे ।
चाखि नाम रस मस्त मगन ह्वै, बैठहु गगन दुवारे ॥३॥
यहि कलि काल उपाइ अवर नहिं, बनि है नाम पुकारे ।
जगजीवन साईं के चरनन, लागे दास दुलारे ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

यह नइया डगमगि नाम बिना । लाइ ले सत्त नाम रटना ॥१॥
इत उत भौजल अगम बना । अहै जरूर पार तरना ॥२॥
मैं निगुनी गुन एकौ नाहीं । माँझ धार नहिं कोउ अपना ॥३॥
दिहेउँ सीस सतगुरु चरना । नाम अधार है दुलन जना ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

रहु तोइँ राम राम रट लाई ।

जाइ रटहु तुम नाम अच्छर दुइ, जैानी बिधि रटि जाई ॥१॥
राम राम तुम रटहु निरंतर, खोजु न जतन उपाई ।
जानि परत मोहिं भजन पंथ की, यही अरुझनि भाई ॥२॥

बालमीकि उलटा जप कीन्हेउ, भयौ सिद्ध सिधि पाई ।
सुवा पढ़ावत गनिका तारी, देखु नाम प्रभुताई ॥३॥
दूलनदास तू राम नाम रटु, सकल सबै बिसराई ।
सतगुरु साईं जगजीवन के, रहु चरनन लपटाई ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

बाजत नाम नौबति आजु ।
ह्वै सावधान सुचित्त सीतल, सुनहु गैब अवाजु ॥१॥
सुख कंद अनहद नाद धुनि सुनि, दुखदुरित[1] क्रमभ्रम भाजु ।
सत लोक बरसो पानि धुनि, निर्बान यहि मन बाजु ॥२॥
तोइँ चेतु चित दै प्रेम मगन, अनंद आरति साजु ।
घर राम आये जानि, भइनि[2] सनाथ बहुरा[3] राजु ॥३॥
जगजिवन सतगुरु कृपा पूरन, सुफल भे जन काजु ।
धनि भाग दूलन दास तेरे, भक्ति तिलक बिराजु ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

मन वहि नाम की धुनि लाउ ।
रटु निरंतर नाम केवल, अवर सब बिसराउ ॥ १ ॥
साधि सूरत आपनो, करि सुवा[4] सिखर[5] चढ़ाउ ।
पोषि प्रेम प्रतीत तैं, कहि राम नाम पढ़ाउ ॥ २ ॥
नामही अनुरागु निसु दिन, नाम के गुन गाउ ।
बनी तै। का अबहिं, आगे और बनी बनाउ ॥ ३ ॥
जगजिवन सतगुरु बचन साचे, साच मन माँ लाउ ।
करु बास दूलनदास सत माँ, फिरि न यहि जग आउ ॥४॥

(१) दूर हुए, भागे। (२) हुई। (३) पलटा, लौटा। (४) तोता। (५) पहाड़ की चोटी।

॥ शब्द ६ ॥

जब गज अरध नाम गुहरायो ।
जब लगि आवै दूसर अच्छर, तब लगि आपुहि धायो ॥१॥
पाँय पियादे भे करुनामय, गरुड़ासन बिसरायो ।
धाय गजंद गोद प्रभु लीन्हो, आपनि भक्ति दिढ़ायो ॥२॥
मीरा को बिष अमृत कीन्हो, बिमल सुजस जग छायो ।
नामदेव हित कारन प्रभु तुम, मिर्तक गाय जियायो ॥३॥
भक्त हेत तुम जुग जुग जनमेउ, तुमहिं सदा यह भायो ।
बलि बलि दूलनदास नाम की, नामहि ते चित लायो ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

द्रुपदी राम कृस्न कहि टेरी ।
सुनत द्वारिका तें उठि धायो, जानि आपनी चेरी ॥१॥
रही लाज पछितात दुसासन, अंबर[1] लाग्यो ढेरी ।
हरि लीला अवलोकि चकित चित, सकल सभा भुइँ हेरी[2] ॥
हरि रखवार सामरथ जा के, मूल अचल तेहि केरी ।
कबहुँ न लागति ताति बाव तेहि, फिरत सुदरसन[3] फेरी ॥३॥
अब मोहिं आसा नाम सरन की, सीस चरन दियो तेरी ।
दूलनदास के साईं जगजीवन, इतनी बिनती मेरी ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

भजहु नाम मोरि लगन सुधारन,
पूरन ब्रह्म अखिल[4] जग कारन ॥ १ ॥
अर्ध नाम की सुरति करत मन,
करुना-कंद[5] गजंद-उबारन ॥ २ ॥
लाउ जिकिरि[6] मन फिकिरि फरक करु ।
नाम सदा जन संकट टारन ॥३॥

(१) वस्त्र । (२) ज़मीन की ओर देखना सोच का निशान है । (३) विष्णु का शस्त्र । (४) पूर्ण । (५) दया के मूल । (६) सुमिरन ।

द्रुपदी लज्या के रखवारे,
जन प्रह्लाद कि पैज सँभारन[1] ॥ ४ ॥
होहु निडर मन सुमिरि नाम अस,
सर्म रु कर्म कुअंक भिजारन[2] ॥ ५ ॥
दूलनदास के साईं जगजीवन,
दिहिन नाम आवागवन निवारन ॥ ६ ॥

॥ शब्द १२ ॥

रसना राम नाम न लिया ।
मनहिं ज्ञान विचार गुरु के, चरन सीस न दिया ॥१॥
रक्त पानि समोइ कै, जिन्ह अजब जामा सिया ।
तेहि बिसारि गँवार काहे, रखत पाहन[3] हिया ॥२॥
अहो अंध अचेत मुग्धा, समुझि काम न किया ।
अछत[4] नाम पियूष[5] पासहिं, मोह माहुर[6] पिया ॥३॥
गये गर्भ बिनास काहे न, कौल कारन जिया ।
दूलन हरि की भक्ति बिनु, यह जिन्दगानी छिया ॥४॥

भेद का अंग ।

॥ शब्द १ ॥

साईं तेरो गुप्त मर्म हम जानी ।
कस करि कहौं बखानी ॥ टेक ॥
सतगुरु संत भेद मोहिं दीन्हा, जग से राखा छानी ।
निज घर का कोउ खोज न कीन्हा, करम भरम अटकानी ॥१

(१) प्रह्लाद भक्त के राम नाम की टेक या प्रण को सँभालने वाले । (२) खोटे धम (किया) और कर्म के अंक को मेटने वाले । (३) पत्थर या मूरत पत्थर की । (४) अछत—मौजूद होते । (५) अमृत । (६) विष ।

निज घर है वह अगम अपारा, जहाँ बिराजै स्वामी।
ता के परे अलोक अनामी, जा का रूप न नामी ॥२॥
ब्रम्ह रूप धरि सृष्टि उपाई, आप रहा अलगानी।
वेद कितेब की रचन रचाई, दस औतार धरानी ॥ ३ ॥
निज माता सीता सोइ राधा, निज पितु राम सुवामी।
दोउ मिलि जीवन बंद छुड़ाया, निज पद मैं दिया ठामी ॥४॥
दूलनदास के साईं जगजीवन, निज सुत जक्त पठानी।
मुक्ति द्वार की कूँची दीन्ही, ता तैं कुलुफ[१] खुलानी ॥५॥

॥ दोहा ॥

दूलन यह मत गुप्त है, प्रगट न करो बखान।
ऐसे राखु छिपाय मन, जस बिधवा औधान[२] ॥

॥ शब्द २ ॥

देख आयों मैं तो साईं की सेजरिया।
साईं की सेजरिया सतगुरु की डगरिया ॥ १ ॥
सबदहि ताला सबदहि कुंजी, सबद की लगी है जँजिरिया॥
सबद ओढ़ना सबद बिछौना, सबद की चटक चुनरिया॥
सबद सरूपी स्वामी आप बिराजैं, सीस चरन मैं धरिया॥
दूलनदास भजु साईं जगजीवन, अगिन से अहँग उजरिया॥

चितावनी

॥ शब्द १ ॥

पछितात क्या दिन जात बीते, समुझ करु नर चेत रे।
अंध तेरे कंध सिर पर, काल डंका देत रे ॥ १ ॥
हुसियार है गुन गाव प्रभु के, ठाढ़ रहु गुरु खेत रे।
ताके रहै छूटै नहीं, जिमि राहु रवि ससि केत रे ॥२॥

(१) ताला। (२) गर्भ, हमल।

जम द्वार तर सब पीसिगे, चर अचर निन्दक जेत रे ।
नहिं पियत अमृत नाम रस, भरि स्वास सुरत सचेत रे ॥३
मद मोह महुवा दाख दुख, विष का पियाला लेत रे ।
जग नात गोत बिसारि सब, हर दम गुरू से हेत रे ॥४॥
सगलौ सुपन अपना वही, जिस रोज परत सँकेत रे ।
यह आइ सिरजनहार हरि, सतनाम भो जल सेत रे ।
जन दुलन सतगुरु चरन बंदत, प्रेम प्रीति समेत रे ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

तू काहे को जग में आया, जो पै नाम से प्रीति न लाया रे॥टेक
तृष्ना काम सवाद घनेरे, मन से नहिं बिसराया ।
भोग बिलास आस निस बासर, इत उत चित भरमाया रे ॥१
त्रिकुटी तिरथ प्रेम जल निर्मल, सुरत नहीं अन्हवाया ।
दुर्मति करम मैल सब मन के, सुमिरि सुमिरि न छुड़ाया रे ॥२
कहँ से आये कहँ को जैहे, अंत खोज नहिं पाया ।
उपजि उपजि के बिनसि गये सब, काल सबै जग खाया रे ३
कर सतसंग आपने अंतर, तजि तन मोह औ माया ।
जन दूलन बलि बलि सतगुरु के, जिन मोहिं अलख लगाया रे ॥४

उपदेश का अंग ।

॥ शब्द १ ॥

बोल मनुआँ राम राम ॥ टेक ॥
सत्त जपना और सुपना, जिक्र लावो अष्ट जाम ॥ १ ॥
समुझि बूझि बिचारि देखो, पिंड पिंजरा धूम धाम ॥ २ ॥
बाल्मीकि हवाल पूछो, जपत उलटा सिद्ध काम ॥ ३ ॥
दास दूलन आस प्रभु की, मुक्ति-करता सत्त नाम ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

राम नाम दुइ अच्छरै, रटै निरंतर कोय ।
दूलन दीपक वरि उठै, मन प्रतीति जो होय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

जागु जागु आतमा, पुरान दाग धोउ रे ।
कर्म भर्म दूर करु, कीच काम खोउ रे ॥ १ ॥
अपनी सुधि भूलि गई, और की क्या टोउ रे ।
सत्त बात झूठ करै, झूठ ही को गोउ[1] रे ॥ २ ॥
इहै बात जानि जानि, द्वार द्वार रोउ रे ।
सत्तर पानी साबुन का, प्रेम पानी मोउ[2] रे ॥ ३ ॥
लाग दाग धोय डारु, वाह वाह होउ रे ।
दूलन बेकूफ काम, गाफिल ह्वै न सोउ रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मन तुम रहौ चरनन लगे ।
बिनु चरन कँवल सनेह, अवर बिधान सब डगमगे ॥१॥
सब देँह धरि धरि गये मरि मरि, जीव बिरले जगे ।
नर जनम उत्तम पाइ, चरन सनेह बिन सब ठगे ॥ २ ॥
का अन्न तजि पय पिये, का भुज दंड देँही दगे ।
का तजे घर घरनी[3], जो चरन सनेह नाम न रँगे ॥ ३ ॥
जन दुलन सतगुरु चरन जानहु, हित सनेही सगे ।
धरि ध्यान लै सत सुरति संगम, रहहु छबि रस पगे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

चलो चढ़ो मन यार महल अपने ॥ टेक ॥
चौक चाँदनी तारे झलकैँ, बरनत बनत न जात गने ॥१॥
हीरा रतन जड़ाव जड़े जहँ, मोतिन कोटि कितान बने ॥२

(१) छिपा कर रखना, पकड़े रहना । (२) थोड़े पानी से भिँगाना । (३) स्त्री ।

सुखमन पलँगा सहज बिछौना, सुख सोवो को करै मने[1] ॥३॥
दूलनदास के साईं जगजीवन, को आवै यह जगसुपने ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

जोगी चेत नगर मेँ रहो रे ॥ टेक ॥
प्रेम रंग रस ओढ़ चदरिया, मन तसबीह[2] गहो रे ॥१॥
अन्तर लाओ नामहि की धुनि, करम भरम सब धो रे ॥२॥
सूरत साधि गहो सत मारग, भेद न प्रगट कहो रे ॥३॥
दूलनदास के साईं जगजीवन, भवजल पार करो रे ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

अइलेहु यहि देसवाँ, मनुवाँ के मइल धुवैतेहु ।
सतगुरु घाट काया कै सौँदन, नाम साबुन लपटैतेहु ॥१॥
धोये मलहिँ मिटै कस कलिमल, दुबिधा दूरि बहैतेहु ।
ज्ञान बिचार ताहि करि धोबी, प्रेम कै पाट बनैतेहु ॥२॥
स्वारथ छाड़ि नाम आसा धरि, बिषय बिकार बहैतेहु ।
भ्रम तजि अगुन सगुन करि मनतेँ, भवसागर तरि जैतेहु ॥३
सुत तिय परिवारहिँ अरु धन तजि, इनके बस न भुलैतेहु ।
अनमिलना मिलना काहू से, हित अनहित न चिन्हैतेहु ॥४
चौरासी चित मोह बिसरतेहु, हरि पद नेह लगैतेहु ।
दूलनदास बंदगी गावै, बिना परिस्रम जैतेहु ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

अब काहे भूलहु हो भाई, तूँ तो सतगुरु सबद समइलेहु ॥ टेक
ना प्रभु मिलिहै जोग जाप तेँ, ना पथरा के पूजे ।
ना प्रभु मिलिहै पउआँ पखारे, ना काया के भूँजे ॥ १ ॥

(१) कौन बरज सकता है। (२) माला।

दया धरम हिरदे मेँ राखहु, घर मेँ रहहु उदासी ।
आन के जिव आपन करि जानहु, तब मिलिहै अविनासी॥२॥
पढ़ि पढ़ि के पंडित सब थाके, मुलना पढ़े कुराना ।
भस्म रमाइ के जोगिया भूले, उनहूँ मरम न जाना ॥ ३ ॥
जोग जाप तहिया से छाड़ल, छाड़ल तिरथ नहाना ।
दूलनदास बंदगी गावै, है यह पद निर्बाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

प्रानी जपि ले तू सतनाम ॥ टेक ॥
मात पिता सुत कुटुम कबीला, यह नहिँ आवैँ काम ।
सब अपने स्वारथ के संगी, संग न चलै छदाम ॥ १ ॥
देना लेना जो कुछ होवै, करिले अपना काम ।
आगे हाट बजार न पावै, कोइ नहिँ पावै ग्राम ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह ने, आन बिछाया दाम[1] ।
क्योँ मतवारा भया बावरे, भजन करो निःकाम ॥ ३ ॥
यह नर देही हाथ न आवै, चल तू अपने धाम ।
अब की चूक माफ नहिँ होगी, दूलन अचल मुकाम ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

जो कोइ भक्ति किया चहे भाई ॥ टेक ॥
करि बैराग भसम करि गोला, सो तन मनहिँ चढ़ाई ॥ १ ॥
ओढ़ि के बैठ अधिनता चादर, तज अभिमान बड़ाई ॥ २ ॥
प्रेम प्रतीत धरै इक तागा, सो रहै सुरत लगाई ॥ ३ ॥
गगन मँडल बिच अभरन[2] झलकत, क्योँ न सुरत मन लाई ४
सेस सहस मुख निसु दिन बरनत, बेद कोटि गुन गाई ॥ ५ ॥
सिव सनकादि आदि ब्रम्हादिक, ढूँढ़त थाह न पाई ॥ ६ ॥

(१) जाल । (२) भूषन, जवाहिर ।

नानक नाम कबीर मता है, सो मोहिँ प्रगट जनाई ॥ ७ ॥
ध्रुव प्रह्लाद यही रस माते, सिव रहे ताड़ी लाई ॥ ८ ॥
गुरु की सेवा साध की संगत, निसु दिन बढ़त सवाई ॥ ९ ॥
दूलनदास नाम भज बन्दे, ठाढ़ काल पछिताई ॥ १० ॥

॥ शब्द १० ॥

जग में जै दिन है जिंदगानी ॥ टेक ॥
लाइ लेव चित गुरु के चरनन, आलस करहु न प्रानी ॥ १ ॥
या देही का कौन भरोसा, उभसा[1] भाठा[2] पानी ॥ २ ॥
उपजत मिटत बार नहिँ लागत, क्या मगरूर गुमानी ॥ ३ ॥
यह तो है करता की कुदरत, नाम तू ले पहिचानी ॥ ४ ॥
आज भलो भजने को औसर, काल की काहु न जानी ॥ ५ ॥
काहु के हाथ साथ कछु नाहीं, दुनियाँ है हैरानी ॥ ६ ॥
दूलनदास बिस्वास भजन करु, यहि है नाम निसानी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११ ॥

तैँ राम राम भजु राम रे, राम गरीब निवाज हो ॥ टेक ॥
राम कहे सुख पाइहो, सुफल होइ सब काज ।
परम सनेही राम जी, रामहिँ जन की लाज हो ॥ १ ॥
जनम दीन्ह है राम जी, राम करत प्रतिपाल ।
राम राम रट लाव रे, रामहिँ दीनदयाल हो ॥ २ ॥
मात पिता गुरु राम जी, रामहिँ जिन बिसराव ।
रहो भरोसे राम के, तैँ रामहिँ से चित चाव हो ॥ ३ ॥
घर बन निसु दिन राम जी, भक्तन के रखवार ।
दुखिया दूलनदास को रे, राम लगइहैँ पार हो ॥ ४ ॥

(१) बढ़ा । (२) घटा ।

अपने अंतर अंबर[1] डोरी, गहु तेहि काहुहिं ना डरु रे ॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, अब दै सीस चरन परु रे ॥४॥

विनय का अंग

॥ शब्द १ ॥

साईं हो गरीब निवाज ॥ टेक ॥
देखि तुम्हैं घिन लागत नाहीं, अपने सेवक के साज ॥१॥
नाहिं अस निलज न यहि जग कोऊ, तुम ऐसे प्रभु लाज जहाज॥२॥
और कछू हम चाहित नाहीं, तुम्हरे नाम चरन तें काज ॥३॥
दुलनदास गरीब निवाजहु, साईं जगजीवन महराज ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

साईं दरस माँगौं तोर, आपनो जन जानि साईं मान राखहु मोर ॥१॥
अपथ[2] पंथ न सूझि इत उत, प्रबल पाँचो चोर ।
जतन केहि बिधि करौं साईं, चलत नाहीं जोर ॥ २ ॥
बात लाइ दुरात[3] काहे, पतित जन की दौर ।
बचन अवधि[4] अधार मेरे, आसरा नहिं और ॥ ३ ॥
हेरिये करि कृपा जन तन, ललित[5] लोचन कोर ।
दास दूलन सरन आयो, राम बंदी-छोर ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साईं तेरे कारन नैना भये बैरागी ।
तेरा सत दरसन चहैं, कछु और न माँगी ॥ १ ॥
निसु बासर तेरे नाम की, अंतर धुनि जागी ।
फेरत हैं माला मनौं, अँसुवन झरि लागी ॥ २ ॥

---

(१) आकाश । (२) कुराह । (३) हटाते हो । (४) प्रतिज्ञा । (५) सुंदर, मोहनी ।

पलक तजी इत उक्ति तें,[१] मन माया त्यागी ।
दृष्टि सदा सत सनमुखी, दरसन अनुरागी ॥ ३ ॥
मदमाते राते मनौं, दाधे बिरह आगी ।
मिलु प्रभु दूलन दास के, करु परम सुभागी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सुनहु दयाल मोहिं अपनावहु ॥ टेक ॥
जन मन लगन सुधारन साईं, मोरि बनै जो तुमहिं बनावहु१
इत उत चित्त न जाइ हमारा, सूरत चरन कमल लपटावहु ॥२॥
तबहूँ अब मैं दास तुम्हारा, अब जिनि बिसरौ जिनि बिसरावहु ॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, हमहूँ काँ भक्तन माँ लावहु॥४

॥ शब्द ५ ॥

साईं सुनहु बिनती मोरि ॥ टेक ॥
बुधि बल सकल उपाय-हीन मैं, पाँयन परौं दोउ कर जोरि१
इत उत कतहूँ जाइ न मनुआँ, लागि रहै चरनन माँ डोरि॥२
राखहु दासहिं पास आपने, कस को सकिहै तोरि ॥३॥
आपन जानि कै मेटहु मेरे, औगुन सब क्रम भ्रम खोरि[२] ॥४॥
केवल एक हितू तुम मेरे, दुनियाँ भरी लाख करोरि ॥५॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, माँगौं सत दरस निहोरि॥६॥

॥ शब्द ६ ॥

साईं भजन ना करि जाइ ।
पाँच तसकर संग लागे, मोहिं हटकत[३] धाइ ॥ १ ॥
चहत मन सतसंग करनो, अधर बैठि न पाइ ।
चढ़त उतरत रहत छिन छिन, नाहिं तहँ ठहराइ ॥२॥
कठिन फाँसी अहै जग की, लियो सबहि बझाइ ।

---

(१) इधर अर्थात संसार की चतुरता (उक्ति) की ओर से आँख मूँद ली।
(२) खराब (शाप), कसर। (३) रोकते हैं।

पास मन मनि नैन निकटहिं, सत्य गयो भुलाइ ॥ ३ ॥
जगजिवन सतगुरु करहु दाया, चरन मन लपटाइ ।
दास दूलन बास सत माँ, सुरत नहिं अलगाइ ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

साईं तेरो भजन ना हम जाना, ता तेँ बार बार पछिताना ॥टेक॥
भजन करंते दास मलूका, नाम भजन जिन्ह जाना ।
दीनदयाल भक्तहितकारी, लैहौ रे परवाना ॥ १ ॥
गोपी ग्वाल भजन कहि गोकुल, सुरपति इन्द्र रिसाना ।
दीनदयाल सरन की लज्या, छत्र गोबर्धन ताना ॥२[1]॥
कुतबदीन भजि भयो औलिया, औ मनसूर दिवाना ।
तेरे नाम भजन के कारन, बलख तजा सुलताना ॥३॥
भजन बखानत सुनत सबद, इक भइ अवाज असमाना।
दूलनदास भजन करि निर्भय, रहु चरनन लपटाना ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

प्रभु तुम किहेउ कृपा बरियाईं[2] ।
तुम कृपाल मैं कृपा अलायक[3], समुझि निवजतेहु साईं ॥१॥
कूकुर धोये होइ न बाछा[4], तजै न नीच निचाईं ।
बगुला होइ न मानस-वासी[5], बसहि जे विषै तलाईं ॥२॥
प्रभु सुभाउ अनुहारि चाहिये, पाय चरन सेवकाईं[6] ।
गिरगिट पौरुष करै कहाँ लगि, दौरि कँडौरे[7] जाईं ॥ ३ ॥

---

(१) जब गोकुल के बासियों ने इन्द्र की पुरातन पूजा श्रीकृष्ण के उपदेश से छोड़ कर कृष्ण की पूजा तो इन्द्र ने कोप करके मेघ को आज्ञा की कि घोर वर्षा करके गोकुल को जड़ से बहा दो उस समय ब्रजबासियों ने श्रीकृष्ण को टेरा जिन्हों ने गोबर्धन पहाड़ को उँगली पर उठा कर छाया करली और ब्रज को बचा लिया। (२) ज़बरदस्ती। (३) नालायक़। (४) गऊ का बच्चा। (५) मान सरोवरबासी। (६) ईश्वर सरीखा स्वभाव बन जाय तब उसके चरनों में बासा मिले। (७) कंडा या उपले का ढेर—मसल है "गिरगिट के दौड़ कँडौरे लैं"।

अब नहिं बनत बनाये मेरे, कहत अहौं गुहराई ।
दुलनदास के साईं जगजीवन, समरथ लेहु बनाई ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

काह कहौं कछु कहि नहिं आवे ॥ टेक ॥
गुन विहीन मैं बौरी बिचारी, पिय गुन देय तौ पिय गुन गावै ॥१॥
काहु क राखि लीन्ह चरनन तर, काहू को इत उत भरमावै॥२
भाग सुहाग हाथ उनहीं के, रोये कोऊ राज न पावै ॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, बिनती करि जन तुम्हँ सुनावै४

॥ शब्द १० ॥

राम तोरी माया नाचु नचावै ।
निसुबासर मेरो मनुआँ ब्याकुल, सुमिरन सुधि नहिं आवै॥१
जोरत तूरै[1] नेह सूत मेरो, निरवारत अरुझावै ।
केहि बिधि भजन करौं मोरे साहिब, बरबस मोहिं सतावै॥
सत सन्मुख थिर रहे न पावै, इत उत चितहिं डुलावै
आरत[2] पवरि[3] पुकारौं साहिब, जन फिरियादिहिं[4] पावै॥
थाकेउँ जन्म जन्म के नाचत, अब मोहिं नाच न भावै ।
दुलनदास के गुरु दयाल तुम, किरपहिं तैं बनि आवै ॥४॥

प्रेम का अंग ।

॥ शब्द १ ॥

धन मोरि आज सुहागिन घड़िया ॥ टेक ॥
आज मोरे अँगना सन्त चलि आये, कौन करौं मिहमनिया१
निहुरि निहुरि मैं अँगना बुहारौं, माती मैं प्रेम लहरिया ॥२

(१) तोड़े । (२) दीन आधीन । (३) द्वारे पर । (४) नालिश की सुनवाई ।

भाव के भात प्रेम के फुलका, ज्ञान की दाल उतरिया ॥३
दुलनदास के साईं जगजीवन, गुरु के चरन बलिहरिया ॥४

॥ शब्द २ ॥

जागु री मोरि सुरत पियारी ।
चरन कमल छवि झलक निहारी ॥ १ ॥
बिसरि जाइ दे यह संसारी ।
धरहु ध्यान मन ज्ञान बिचारी ॥ २ ॥
पाँच पचीसो दे झझकारी[1] ।
गहहु नाम की डोरि सँभारी ॥ ३ ॥
साईं जगजीवन अरज हमारी ।
दूलनदास को आस तुम्हारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सतनाम तेँ लागी अँखिया, मन परिगै जिकिर[2] जँजीर हो १
सखि नैना बरजे ना रहैँ, अब ठिरे[3] जात वोहि तीर[4] हो ॥२
नाम सनेही बावरे, दृग भरि भरि आवत नीर हो ॥३॥
रस-मतवाले रस-मसे[5], यहि लागी लगन गँभीर हो ॥४॥
सखि इस्क पिया से आसिकाँ, तजि दुनिया दौलत भीर[6] हो॥५
सखि गोपीचन्दा भरथरी, सुलताना भयो फकीर हो ॥६
सखि दूलन का से कहै, यह अटपटि[7] प्रेम की पीर हो ॥७

॥ शब्द ४ ॥

रट लागि हिये रमई रमई ॥ टेक ॥
गुरु अंतर डोरी पोढ़ि दई ।
नित बाढ़न लागी प्रीति नई ॥ १ ॥

---

(१) फटकार या डाँट । (२) स्मरण या सुमिरन । (३) पिछाँह ग्रांवतना से भ्रम जाने को "ठिरना" कहते हैँ–प्रतिलिपि मेँ "टरे" है जिसके अर्थ खिंचने के हैं । (४) पास । (५) रस में पगे । (६) प्रेमी जन जिन की प्रीति प्रीतम से लगी है उन्हें संसार और धन माल की चिन्ता नहीं रहती । (७) अड़बड़, अनोखी ।

जनि मानै बैर बिरोध कोई ।
जग माँ जिंदगानी है थोरई[१] ॥ २ ॥
दुनियाँ दुचिताई भूलि गई ।
हम समुझि गरीबी राह लई ॥ ४ ॥
चरनाँ रज अंजन नैन दई ।
जन दूलन देखत राम-मई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

पिया मिलन कब होइ, अँदेसवा लागि रही ॥ टेक ॥
जब लग तेल दिया मेँ बाती, सूझ पड़ै सब कोइ ।
जरिगा तेल निपटि गइ बाती, लै चलु लै चलु होइ ॥१॥
बिन गुरु मारग कौन बतावै, करिये कौन उपाय ।
बिना गुरू के माला फेरै, जनम अकारथ जाय ॥२॥
सब संतन मिलि इक मत कीजै, चलिये पिय के देस ।
पिया मिलैं तो बड़े भाग से, नहिं तो कठिन कलेस ॥३॥
या जग ढूढ़ूँ वा जग ढूढ़ूँ, पाऊँ अपने पास ।
सब संतन के चरन बन्दगी, गावै दूलनदास ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

हुआ है मस्त मंसूरा, चढ़ा सूली न छोड़ा हक़ ।
पुकारा इश्क़बाज़ोँ को, अहै मरना यही बरहक़ ॥१॥
जो बोले आशिक़ाँ याराँ, हमारे दिल मेँ है जो शक ।
अहै यह काम सूरोँ का, लगाये पीर से अब तक ॥२॥
शम्सतबरेज़ की सीफ़त, जहाँ मेँ ज़ाहिरा अब तक ।
निज़ामुद्दीन सुल्ताना, सभी मेटे दुनी के धक ॥३॥

(१) थोड़ीही ।

निरख रहे नूर अल्लह का, रहे जीते रहे जब तक।
हुआ हाफ़िज़ दिवाना भी, भये ऐसे नहीं हर यक ॥४॥
सुना है इश्क़ मजनूँ का, लगी लैला कि रहती झक[1]।
जलाकर ख़ाक तन कीना, हुए वह भी उसी माफ़िक़ ॥५॥
दुलन जन को दिया मुरशिद, पियाला नाम का थक़थक[2]।
वही है शाह जगजीवन, चमकता देखिये लक़ लक़[3] ॥६॥

॥ शब्द ७ ॥

अब तो अफ़सोस मिटा दिल का, दिलदार दीद में आया है।
संतों की सुहबत में रह कर, हक़ हादी को सिर नाया है ॥१
उपदेश उग्र गहि सत्त नाम, सोइ अष्ट जाम धुनि लाया है।
मुरशिद की मेहर हुई यों कर, मज़बूत जोश उपजाया है ॥२
हर वक़्त तसौवर में सूरत, मूरत अंदर झलकाया है।
बूअली क़लंदर औ फ़रीद, तबरेज़ वही मत गाया है ॥३
कर सिद्क़ सबूरी लामकान, अल्लाह अलख दरसाया है।
लखि जन दूलन जगजिवन पीर, महबूब मेरे मन भाया है॥
ख़ाविन्द ख़ास ग़ैबी हुज़ूर, वह दिल अंदर में आया है ॥४

॥ शब्द ८ ॥

ऐसा रँग रँगैहौं, मैं तो मतवालिन होइहौं ॥ टेक ॥
भट्ठी अधर लगाइ, नाम की सोज[4] जगैहौं।
पौन सँभारि उलटि दै झोंका, करकट कुमति जलैहौं ॥१॥
गुरुमति लहन[5] सुरति भरि गागरि, नरिया नेह लगैहौं।
प्रेम नीर दै प्रीति पुचारी, यहि विधि मदवा चुवैहौं ॥२॥

---

(१) झोंक। (२) लबालब भरा हुआ। (३) नूरानी, चमचम। (४) सोज़ — जलन, विरह। (५) ज़ामन जिस से शराब का ख़मीर जल्द उठ आता है।

अमल अगारी नाम खुमारी, नैनन छबि निरतैहौं।
दै चित चरन भयूँ सत सन्मुख,बहुरि न यहि जग ऐहौं॥३॥
ह्वै रस मगन पियौं भर प्याला, माला नाम डोलैहौं।
कह दूलन सतसाईं जगजीवन,पिउ मिलि प्यारी कहैहौं॥

करुणा का अंग।

॥ शब्द १ ॥

हमारे तो केवल नाम अधार।
पूरन काम नाम दुइ अच्छर, अंतर लागि रहै खुटकार॥१
दासन पास बसै निसु बासर, सोवत जागत कबहुँ न न्यार।
अरध नाम टेरत प्रभु धाये, आय तुरत गज गाढ़ निवार॥२
जन मन-रंजन सब दुख-भंजन, सदा सहाय परम हित प्यार।
नाम पुकारत चीर बढ़ायो, द्रुपदी लज्या के रखवार॥३
गौरि गणेस रु सेस रटत जेहिं,नारद सुक[१] सनकादि पुकार।
चारहुँ मुख जेहिं रटत बिधाता[२],मंत्र राज सिव मन सिंगार४

॥ शब्द २ ॥

भक्तन नाम चरन धुनि लाई॥ टेक॥
चारिहु जुग गोहारि प्रभु लागे,जब दासन गोहराई॥१॥
हिरनाकुस रावन अभिमानी, छिन माँ खाक मिलाई॥२॥
अबिचल भक्ति नाम की महिमा,कोउ न सकत मिटाई॥३॥
कोउ उसवास[३] न एकौ मानहु, दिन दिन की दिनताई॥४॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, है सतनाम दुहाई॥५॥

---

(१) सुकदेव। (२) ब्रह्मा। (३) संशय।

विवेक ज्ञान।

कहत सो अहैँ पुकारी । सुनि साधो लेहु बिचारी ॥ १ ॥
सबद कहै परमाना । जिन्ह प्रतीत मन आना ॥ २ ॥
सबद कहै सो करई । बिन बूझे भ्रम माँ परई ॥ ३ ॥
सबद कहै बिस्तारा । सबदै सब घट उजियारा ॥ ४ ॥
सबद बूझि जेहि आई । सहजे माँ तिनहीं पाई ॥ ५ ॥
सहज समान न आना । सहजे मिलि कृपानिधाना ॥ ६ ॥
सहज भजन जो करई । सो भवसागर तरई ॥ ७ ॥
भवसागर अपरम्पारा । सूझत वार न पारा ॥ ८ ॥
रहै चरन सरनाई । तब भवसागर तरि जाई ॥ ९ ॥
भवसागर तरि पारा । तब भयो सबन तेँ न्यारा ॥१०॥
है न्यारा गुन गावै । तेहि गति कोउ न पावै ॥ ११ ॥
पदुम[1] पात्र ज्योँ नीरा । अस मन रहै तेहि तीरा ॥१२॥
मगन भयो मस्ताना । सो साधू मे निरवाना ॥ १३ ॥
अब कछु कहा न जाई । कलि देखि कै कहैँ सुनाई ॥१४
बहु प्रपंच अधिकारा । जग जानि करत अपकारा ॥१५॥
असुभ कर्म सब करहीं । ते जाइ नर्क माँ परहीं ॥ १६ ॥
साध कि निंदा करहीं । सो कबहूँ नहिँ निस्तरहीं ॥१७
संत सबद कहत है बानी । सुखित जन अस्तुति आनी ॥१८॥
जिन्ह दियो संत काँ माथा । तेहि कीन्हेउ राम सनाथा ॥१९
सो नाहीं दुख पावै । जो सीस संत काँ नावै ॥ २० ॥
पंडित की पँडिताई । अब तिन्ह की कहैँ सुनाई ॥२१॥
बेद ग्रंथ पढ़ि भूले । मैं त्वैं करिकै फूले ॥ २२ ॥

---

(१) कँवल।

पंडित भला निमाना[१] । जिन्ह राम नाम पहिचाना ॥२३॥
कलिजुग के कवि ज्ञानी । कथहीं बहुत बखानी ॥ २४ ॥
मनमत ज्ञान कथाहीं । मन भजन करत है नाहीं ॥२५॥
जे रहहिँ नाम तेँ लीना । सो ज्ञानी परवीना ॥ २६ ॥
सो आहै सत ज्ञानी । जेहि सुरत चरन लपटानी ॥२७॥
सत्य ज्ञान तत सारा । जिन्ह के है नाम अधारा ॥ २८ ॥
भेप बहुत अधिकारी । मैँ तिन्ह की कहैाँ पुकारी ॥ २९ ॥
भसम केस वहु भेसा । ते भ्रमत फिरहिँ चहुँ देसा ॥३०॥
बहु गुमान अहंकारी । इन्ह डारेउ सकल बिसारी ॥३१॥
बहुत फिरहिँ गफिलाई[२] । करि आसा अरुझाई ॥ ३२ ॥
केहू तपस्या ठाना । कोइ नगन भयो निर्बाना ॥ ३३ ॥
कोइ तीरथ बहुत अन्हाई । कोइ कंद मूरि खनि[३] खाई ॥३४॥
केहु करि घींचहिँ तूरा[४] । केहु सतगुरु मिल्यो न पूरा ॥३५॥
झूलै मुख अगिनि झकाही । कोइ ठाढ़े बैठे नाहीं ॥३६॥
भूले करि देखी देखा । है न्यारा नाम अलेखा ॥ ३७ ॥
कोटि तिरथ यह काया । तेहि अंत न केहू पाया ॥ ३८॥
पाँचैा जिन्ह घट जानी । जन दूलन सो निरबानी ॥३९॥
राम अच्छर जेहि माहीं । जग तेहि समान कोउ नाहीं ॥४०॥

---o---

झूलना ।

(१)

पंखा चँवर मुरछल ढुरैँ, सूआ सवै खिजमति करैँ ।
जरबफ़ का तंबू तन्यो, बैठक बन्यो मसनंद का ॥

(१) दीन, उत्तम । (२) ग़ाफ़िल । (३) खोद कर । (४) पद्मासन बैठकर छाती में चिबुक लगाना ।

दिन राति झाँगरि बाजती, सुथरी सहेली नाचती।
पिलसूज[1] आगे योँ जलै, उजियार मानो चंद का॥
एकै अतर चोवा चमेली, बेला खुसबोई लिये।
एकै कटोरे मैँ किये, सरबत सलोना कंद का॥
हिन्दू तुरुक दुइ दीन आलम, आपनी तावीन[2] मेँ।
यह भी न दूलन खूबहै, करु ध्यान दसरथ-नंद का॥

(२)

बर[3] जे अठारह बरन मेँ, बितपन्य[4] हैँ ब्याकरन मेँ।
पहिरे खराऊँ चरन मेँ, जानैँ न स्वाद सरीर का॥
कुस मुद्रिका कर राखते, जे देव-बानी भाखते।
नहिँ अन्न आमिप[5] चाखते, नित पान करते छीर का॥
धोती उपरना अंग मेँ, रत बेद बिद्या रंग मेँ।
बिद्यारथी बहु संग मेँ, जिन्ह बास तीरथ तीर का॥
सूतहिँ सदा भुइँ सेज जे, पूरे तपस्या तेज के।
यह भी न दूलन खूब है, करु ध्यान स्री रघुबीर का॥

(३)

राखे जटा जिन्ह माथ मेँ, बीभूति लाये गात मेँ।
तिरसूल तोँबी हाथ मेँ, छोड़ेउ सकल सुख धाम का॥
भावै जहाँ जावैँ तहाँ, पुर बीच मेँ आवैँ नहीँ।
रुद्राच्छ का माला गरे, आला बिछावन चाम का॥
दसहूँ दिसा जिन्ह घूमि कै, कीन्हेउ प्रदच्छिन[6] भूमि कै।
फिरि मैान होइ बैठेउ तज्यो, मजकूर दैालति दाम का[7]॥

(१) पलील-सोज़ यानी चैामुखी दीयट। (२) तावेदारी। (३) श्रेष्ठ। (४) प्रवीन, कुशल। (५) मांस। (६) फेरी। (७) फिर मौन (चुप) साध कर बैठे और धन दौलत की चर्चा छोड़ दी।

करि जोग देहीं जारते, हरतार पारा मारते ।
यह भी न दूलन खूब है, करु ध्यान स्यामा स्याम का ॥

(४)

देखे जे साहूकार हैं, करते सकल वैपार हैं ।
पूरा भरा भंडार है, कूबेर के सामान का ॥
सुथरी हवेली योँ बनी, लागी जवाहिर की कनी ।
आकाल छोड़ेउ देस जिन्ह की देखि संपति सान[1] काँ ॥
सारा[2] जिन्हैँ की बात का, दरियाव के उस पार लैाँ ।
सो सक्स[3] है नाहीं कहूँ, जो ना करै परमान काँ ॥
एता बड़ा विस्तार है, धन का न वारा पार है ।
यह भी न दूलन खूब है, करु ध्यान श्री भगवान का ॥

(५)

ढोलक मजीरा बाजते, तेहि बीच नाउत[4] गाजते ।
संध्या समय तेँ भोर लैाँ, करि जोर झिटकैँ माथ काँ ॥
अभुवात[5] हैँ अभिमान तेँ, बारहिँ दिया जो पानि तेँ[6] ।
करि कोप मारैँ बान तेँ, वैताल भाजै साथ का ॥
करि आस आलम सेवता, विस्वास कारे देव[7] का ।
सो धन्य मानै आप काँ, बीरा जो पावै हाथ का ॥
संसार की जादू पढ़ै, मरजाद जाही से बढ़ै ।
यह भी न दूलन खूब है, करु ध्यान श्री रघुनाथ का ॥

---

(१) शान—महिमा, प्रताप । (२) साख । (३) आदमी । (४) ओझाइत । (५) सिर हिलाते हैं जैसे भूत सिर पर आया हो । (६) ऐसी महिमा है कि उन का दीया तेल की जगह पानी से बलता है । (७) ओझाइत काले देव की पूजा कराते हैं और उस पर सूअर का बच्चा और शराब चढ़वाते हैं ।

फुटकल ।

॥ शब्द १ ॥

साहिब अपने पास हो, कोइ दरद सुनावै ॥ टेक ॥
साहिब जल थल घट घट व्यापत, धरती पवन अकास हो १
नौषी अटरिया की ऊँची दुवरिया, दियना बरत अकास हो२
सखिया इक पैठी जल भीतर, रटत पियास पियास हो ॥३
मुख नहिं पिये चिरुआ नहिं पीयै, नैनन पियत हुलास हो४
साईं सरवर[1] साईं जगजीवन[2], चरनन दूलनदास हो ॥५

॥ शब्द २ ॥

भजन करना है कर्रा काम ॥ टेक ॥
मोही भूले मोह के बस मैं, क्रोधी भूले पड़ि हंकार ॥१॥
कामी भूले काम अगिन मैं, लोभी भूले जोरत दाम ॥२॥
जोगी भूले जोग जुगत मैं, पंडित भूले पढ़त पुरान ॥३॥
दूलनदास ओही जन तरिगे, आठ पहर जिन सुमिरा नाम४

॥ शब्द ३ ॥

सुरत बौरी कातै निरमल ताग ॥ टेक ॥
तन का चरखा नाम का टेकुआ, प्रेम की पिउनी करि अनुराग१
सतगुरु धोबी अलख जुलाहा, मलि मलि धोवैं करम के दाग२
इतना पहिरि मन मानिक साजो, पिय अपने पर सबै सिंगार३
दूलनदास अचल गुरु साहिब, गुरु के चरन पर मनुआँ लाग४

॥ शब्द ४ ॥

जोगी जोग जुगत नहिं जाना ॥ टेक ॥
गेरू घोरि रँगि कपरा जोगी, मन न रँगे गुरु ज्ञाना ॥१॥
पढ़ेहु न सत्त नाम दुइ अच्छर, सीखहु सो सकल सयाना २

(१) तालाब, अधिष्ठाता। (२) जगत का आधार।

साची प्रीति हृदय बिनु उपजे, कहुँ रीझत भगवाना ॥३॥
दूलनदास के साइँ जगजीवन, मो मन दरस दिवाना ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

सुमिरौं मैं रामदूत हनुमान ।
समरथ लायक जन सुख-दायक, कर मुसकिल औसान[१] ॥१॥
सील सुजस बल तेज अमित[२] जाके, छबि गुन ज्ञान निधान[३]।
भक्ति तिलक जा के सीस बिराजत, बाजत नाम निसान॥२
जो कछु मो मन सोच होत तब, धरौं तुम्हारो ध्यान ।
तब तुम निकटहिं अहो सहायक, कहँ लगि करौं बखान ॥३
रहौं असंक भरोस तुम्हारे, निसु दिन साँझ बिहान ।
दूलन दास के परम हितू तुम, पवन-तनय[४] बलवान ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

इस नगरी हम अमल न पाया ॥ टेक ॥
साहिब भेजा नाम तसीलन[५], एकौ फौज न संग पठाया ।
आइ पड़े इस कठिन देस मैं, लूटन को सब मोहिं तकाया॥१।
राजा तीन मनासिब[६] भारी, पाँच गढ़ी मजबूत बनाया ।
तिस मैं बसते दस भट[७] भारी, तिन यह मुलुक जगीरिन्ह खाया२
अस सुबिस्त[८] जब कतहुं न देखा, धाय के सतगुरु सरन मैं आया
दीन जानि गुरु पाछे राखा, लड़ने की मोहिं जुगत बताया ३
दीन्हा तोप सलाखा[९] भारी, ज्ञान के गोला बरूत भराया ।
सुरत पलीता डारि के मारा, टूटी गढ़ी फौज बिचलाया ॥४
फौजदार मनुआँ हू बैठा, जब थिर भये तो पकरि बुलाया ।
पाँच पचीसो को बस करि के, नाम तसील खजाने आया॥५

(१) सहज । (२) बेहद । (३) ख़ज़ाना । (४) पवन के पुत्र अर्थात हनुमान ।
(५) तहसील करने । (६) अधिकारी । (७) योधा । (८) सुबीता । (९) तोप भरने का गज़ ।

साहिब पूर दीन दुनिया के, खबर पाय मोहिं बेग बुलाया।
दुलनदास के साईं जगजीवन, रीझि के भक्ति खिलत[1] पहिराया॥६

॥ शब्द ७ ॥

नीक न लागे बिनु भजन सिँगरवा ॥ टेक ॥
का कहि आयो हियाँ बरत्यो नाहीं, भूलि गयल तोरा कौल कररवा॥१
साचा रँग हिये उपजत नाहीं, भेप बनाय रँग लीन्हो कपरवा॥२
बिन रे भजन तोरी ई गति होइ है, बाँधल जैबे तू जम के दुवरवा॥३॥
दुलनदास के साईं जगजीवन, हरि के चरन पर हमरि लिलरवा॥४

(१) खिलअत।

॥ साखी ॥

गुरु महिमा ।

गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु हैं, गुरु संकर गुरु साध ।
दूलन गुरु गोविन्द भजु, गुरुमत अगम अगाध ॥ १
ब्रह्मा बिस्नु ता पर ढुरैं[1], ढुरो भवानी ईस ।
दूलनदास दयाल गुरु, हाथ दीन्ह जेहिं सीस ॥ २ ॥
पति सनमुख सो पतिब्रता, रन सनमुख सो सूर ।
दूलन सत सनमुख सदा, गुरुमुख गनी[2] सो पूर ॥ ३ ।
सतगुरु साहिब जगजिवन, इच्छा फल के दानि ।
राखहु दूलनदास की, सुरत चरन लपटानि ॥ ४ ॥
दूलन दुइ कर जोरि कै, याँचै सतगुरु दानि ।
राखहु सुरति हमारि दिढ़, चरन कँवल लपटानि ॥ ५
श्रीसतगुरु मुख चंद्र तेँ, सबद सुधा झरि लागि ।
हृदय सरोवर राखु भरि, दूलन जागे भागि ॥ ६ ॥
सतगुरु तौ मन माँ अहैं, जो मन लागै साथ ।
दूलन चरन कमल गहि, दिहे रहौ दिढ़ माथ ॥ ७ ॥
दुइ पहिया के रथ चढ़ेउँ, गुरू सारथी मोर ।
दूलन खेलत प्रेम पथ, आड़ि जक्त की झोर[3] ॥ ८ ॥
दूलन गुरु तेँ विषै बस, कपट करहिं जे लोग ।
निर्फल तिन की सेव है, निर्फल तिन का जोग ॥ ९ ॥
छठवाँ माथा चक्र सोइ, अरुझनि गगन दुवार ।
दूलन बिन सतगुरु मिले, बेधि जाय को पार ॥ १० ॥

---

(१) अनुकूल होँ। (२) धनी, बेपरवाह। (३) झकझोर।

नाम महिमा ।

दूलनदास जिन के हृदय, नाम वास जो आय ।
अष्ट सिद्धि नौ निद्धि विचारी, ताहि छाड़ि कहँ जाय ॥१॥
गावै सूरत सुन्दरी, बैठी सत अस्थान ।
जन दूलन मन मोहिनी, नाम सुरंगी तान ॥ २ ॥
दूलन यहि जग जनमि कै, हर दम रटना नाम ।
केवल नाम सनेह बिनु, जन्म समूह[1] हराम ॥ ३ ॥
स्वास पलक माँ नाम भजु, वृथा स्वास जिनि खोउ ।
दूलन ऐसी स्वास से, आवन होउ न होउ ॥ ४ ॥
स्वास पलक माँ जातु है, पलकहिँ माँ फिरि आउ ।
दूलन ऐसी स्वास से, सुमिरि सुमिरि रट लाउ ॥ ५ ॥
डौंडी[2] बाजै नाम की, बरन भेष की नाहिँ ।
दूलनदास विचारि अस, नाम रटहु मन माहिँ ॥ ६ ॥
रसना रटि जेहि लागिगे, चाखि भयो मस्तान ।
दूलन पायो परम पद, निरखि भयो निर्वान ॥ ७ ॥
पैठेउँ मन होइ मरजिया, ढूँढ़ेउँ दिल दरियाउ ।
दूलन नाम रतन्न काँ, भागन कोउ जन पाउ ॥ ८ ॥
सुनत चिकार पिपील की, ताहि रटहु मन माहिँ ।
दूलनदास बिस्वास भजु, साहिब बहिरा नाहिँ ॥ ९ ॥
चितवन नीचो ऊँच मन, नामहिँ जिकिर लगाय ।
दूलन सूझै परम पद, अंधकार मिटि जाय ॥ १० ॥

(१) समस्त । (२) ढिंढोरा ।

दूलन चाख्यो नाम रस, विधि सिव मन आधार।
जन्म जन्म जेहि अमल की, लागी रहै खुमार ॥ ११ ॥
ताति वाउ लागै नहीं, आठौ पहर अनंद।
दूलन नाम सनेह तें, दिन दिन दसा दुचंद ॥ १२ ॥
दूलन केवल नाम धुनि, हृदय निरंतर ठानु।
लागत लागत लागिहै, जानत जानत जानु ॥ १३ ॥
दूलन केवल नाम लै, तिन भेंटेउ जगदीस।
तन मन छाकेउ दरस रस, थाकेउ पाँच पचीस ॥ १४ ॥
सीतल हृदय सुचित्त होइ, तजि कुतर्क कुविचार।
दूलन चरनन परि रहै, नाम कि करत पुकार ॥ १५ ॥
कर्मन दृष्टि मलीन भे, मैं त्वैं परिगा फेरु।
दूलन साईं फेरि मिलु, नाम निरंतर टेरु ॥ १६ ॥
गुरू वचन विसरै नहीं, कबहुँ न टूटै डोरि।
पियत रहै सहजै दुलन, नाम रसायन घोरि ॥ १७ ॥
दुलन नाम पारस परसि, भयो लोह तें सोन।
कुन्दन होइ कि रेसमी, बहुरि न लोहा होन ॥ १८ ॥
दुलन भरोसे नाम के, तन तकिया धरि धीर।
रहै गरीब अतीम[१] होइ, तिन कौं कही फकीर ॥ १९ ॥
अंध कूप संसार तें, सूरत आनहु फेरि।
चरन सरन बैठारि कै, दुलन नाम रहु टेरि ॥ २० ॥
तबही सत सुधि बुद्धि सब, सुभ गुन सकल सलूक।
दूलन जो सत नाम तें, लाउ नेह निस्तूक[२] ॥ २१ ॥

(१) जिसके मा बाप मर गये हैं। (२) पक्के तौर पर, निश्चय करके।

अरुझि अरुझि टूटी जुरत, निगुनी पाउ सलूक[1]।
दूलन ऐसे नाम तैँ, लाउ नेह निस्तूक ॥ २२ ॥
रटत कटत अघ क्रम फटत, भ्रम तम मिटु सब चूक।
दूलन ऐसे नाम तैँ, लाउ नेह निस्तूक ॥ २३ ॥
अंध तकत वहिरे सुनत, धुनत वेद को मूक[2]।
दूलन ऐसे नाम तैँ, लाउ नेह निस्तूक ॥ २४ ॥
विपति सनेही मीत सो, नीति सनेही राउ।
दूलन नाम सनेह दृढ़, सोई भक्त कहाउ ॥ २५ ॥
सुरपति नरपति नागपति, तीनिउँ तिलक लिलार।
दूलन नाम सनेह विनु, धृग जीवन संसार ॥ २६ ॥
यहि कलि काल कुचाल तकि, आयो भागि डेराइ।
दूलन चरनन परि रहे, नाम की रटनि लगाइ ॥ २७ ॥
दूलन नाम रस चाखि सोइ, पुष्ट पुरुष परवीन।
जिन के नाम हृदय नहीँ, भये ते हिजरा हीन ॥ २८ ॥
मरने की डेर छोड़ि कै, नाम भजैा मन माहिँ।
दूलन यहि जग जनमि कै, कोउ अमर है नाहिँ ॥ २९ ॥
नामी लोग सबै बड़े, काको कहिये छोट।
सब हित दूलनदास जिन, लीन्ह नाम की ओट ॥ ३० ॥
दूलन चरनन सीस दै, नाम रटहु मन माहँ।
सदा सर्वदा जनम भरि, जा तैँ खैर सलाह ॥ ३१ ॥
राम पुकारत राम जी, लागहिँ भक्त गुहारि।
दूलन नाम सनेह की, गहि रहु डोरि सँभारि ॥ ३२ ॥

(१) सत्कार। (२) बहिरे।

दुलन नाम आसा सदा, जगत आस दियो त्यागि ।
छूटै कैसे राम जी, हम तैं तुम तैं लागि ॥ ३३ ॥
कृपा कंठ उर बैठि कै, त्रिकुटी चिता बनाय ।
नाम अछर दुइ रगरि कै, पावक लेहु जगाय ॥ ३४ ॥
नाम अछर दुइ रटहु मन, करि चरनन तर बास ।
जन दूलन लैालीन रहु, कबहुँ न होहु उदास ॥ ३५ ।
राम नाम दुइ अच्छरै, रटै निरंतर कोइ ।
दूलन दीपक बरि उठै, मन परतीत जो होइ ॥ ३६ ॥
नाम हृदय बिनु का कियो, कोटिन कपट कलाम ।
दूलन देखत पास हौं, अंतरजामी राम ॥ ३७ ॥
हम चाकर सतनाम के, भक्ति चाकरी हेत ।
दूलन दाता रामजी, मन इच्छा फल देत ॥ ३८ ॥
तीनिउँ करता लोक के, इहाँ उहाँ के राम ।
दूलन चरनन सीस दै, रटत रहै। वह नाम ॥ ३९ ॥
सुरत कलम हिय कागद, मसि करु सहज सनेह ।
दुलनदास बिस्वास करि, राम नाम लिखि लेह ॥ ४०
दूलन दाता रामजी, सब काँ देत अहार ।
कैसे दास बिसारि हैं, आनहु मन इतिबार ॥ ४१ ॥
दुखित बिभीषन जानि कै, दीन्हेउ राज अजीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४२ ॥
पाँडव सुत हित कारने, कियो हुतासन[1] सीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४३ ॥

(१) महाभारत में कथा है कि पाँडवोँ को अपनी राज गद्दी का काँटा समझ कर दुर्योधन ने धोखा देकर उन्हें उनकी माता कुन्ती सहित वारणावत नगर

प्रन पालेउ प्रहलाद को, प्रगटेउ प्रेम प्रतीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४४ ॥
जहर पान मीरै किये, नेकु न लाग्यो तीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४५ ॥
संकट में साथी भयो, हाथी जानि सभीत ।
दूलन कैसे छोड़िये, हरि गाढ़े के मीत ॥ ४६ ॥
चारा पील पिपील को, जो पहुँचावत रोज ।
दूलन ऐसे नाम की, कीन्ह चाहिये खोज ॥ ४७ ॥
भूप एक भुवनेस्वर, रामचंद्र महराज ।
दूलन और केतानि को, राज तिलक जेहिँ छाज ॥ ४८ ॥
इत उत की लज्या तुम्हैं, रामराय सिर मौर ।
दूलन चरनन लगि रहे, राखि भरोसा तोर ॥ ४९ ॥
कबहीं अरबी पारसी, पढ़यो द्रौपदी जाइ ।
दूलन लज्या रामजी, लीन्हौं चीर बढ़ाइ ॥ ५० ॥
कबहिं पराकृत संसकृत, पढ़ि कियो पील पुकारि ।
दूलन लज्या रामजी, लीन्हौं ताहि उबारि ॥ ५१ ॥
चहिये सो करि है सरम, साईं तेरे दस्त ।
बाँध्यो चरन सनेह मन, दुलनदास रस मस्त ॥ ५२ ॥

को भेज दिया जहाँ एक महल लाह का अपने मंत्री पुरोचन के द्वारा बनवा रक्खा था इस मतलब से कि उस में पांडवों को टिकावें और जब अवसर मिले आग लगा दें कि वहीं सब जल भुन कर मर जायें परंतु उन के ईश्वर भक्त चचा विदुरजी को यह बात मालूम हो गई सो उन्हों ने युधिष्ठिर को चेता कर एक सुरंग उस महल में रात को इस तरह की खुदवा दी कि पांडव आग महल में आग लगा कर उस की राह से कुन्ती सहित निकल भागे और दुष्ट पुरोचन उस लाह के मंदिर में जल गया ।

तुला रासि तीनिउँ सदा, जा को मन इक ठौर ।[1]
राम पियारे भक्त सोइ, दूलन के सिर मौर ॥ ५३ ॥
दूलन एक गरीब के, हरि से हितू न और ।
ज्यों जहाज के काग को, सूझै और न ठौर ॥ ५४ ॥
त्रिभुवन करता रामजी, दास तुम्हार कहाइ ।
तुम्हैं छाड़ि दूलन कहौ, केहि काँ याँचन जाइ ॥ ५५
राम नाम दीपक सिखा, दूलन दिल ठहराय ।
करम विचारे सलभ[2] से, जरहिं उड़ाय उड़ाय ॥ ५६

शब्द महिमा ।

सूर चन्द नहिं रैन दिन, नहिं तहँ साँझ विहान ।
उठत सबद धुनि सुन्य माँ, जन दूलन अस्थान ॥ १
जगजीवन के चरन मन, जन दूलन आधार ।
निसु दिन बाजै बाँसुरी, सत्य सबद झनकार ॥ २ ॥
चरचा बाद बिबाद की, संगति दीन्हेउ त्यागि ।
दूलन माते अधर धुनि, भक्ति खुमारी[3] लागि ॥ ३ ॥
कोउ सुनै राग रु रागिनी, कोउ सुनै कथा पुरान ।
जन दूलन अब का सुनै, जिन सुनी मुरलिया तान ॥४
सबदै नानक नामदेव, सबदै दास कबीर ।
सबदै दूलन जगजिवन, सबदै गुरु अरु पीर ॥ ५ ॥

---

(१) जिस का मन एक ठौर अर्थात् स्थिर है उस के तराजू की तीनों डोरियाँ सदा एक सम और नथी हैं, भाव तिरगुन का वेग नहीं व्यापता । (२) पतंगा । (३) नशा ।

संत मत महिमा।

दूलन यह मत गुप्त है, प्रगट न करौ बखान।
ऐसे राखु छिपाइ मन, जस बिधवा औधान[1] ॥ १ ॥
रीझि सबद सो भींजि रस, मत माते गलतान।
दूलन भागन भक्त कोइ, ठहराने अस्थान ॥ २ ॥
सूचे सोइ ऊँचे दुहुन, चहुँ दिसि देखि विचारि।
दूलन चाखा आइ जिन्ह, यह रस ऊख हमारि ॥ ३ ॥

चितावनी।

दूलन यह परिवार सब, नदी नाव संजोग।
उतरि परे जहँ तहँ चले, सबै बटाऊ लोग ॥ १ ॥
दूलन यहि जग आइ के, का को रहा दिमाक[2]।
चंद रोज को जीवना, आखिर होना खाक ॥ २ ॥
दूलन काया कबर है, कहँ लगि करौं बखान।
जीवत मनुआँ मरि रहै, फिरि यहि कबर समान ॥ ३ ॥

उपदेश।

बंधन सकल छुड़ाइ करि, चित चरनन तेँ बाँधु।
दुलनदास विस्वास करि, साईं काँ औराधु ॥ १ ॥
ज्ञानी जानहिं ज्ञान बिधि, मैं बालक अज्ञान।
दूलन भजु बिस्वास मन, धुरपुर बाजु निसान ॥ २ ॥

(१) गर्भ, हमल। (२) दिमाग़ = घमंड।

सूरति दृढ़ करै, मन मूरति के पास।
है रजाइ पर, सोई दूलन दास ॥ ३ ॥
विकल मलीन मन, डगमग कृत जंजाल।
र औषधि एक यह, दूलन मिलि रहु हाल ॥ ४
रनन लागि रहु, नाम की करत पुकार।
धारस पेट भरु, का दहुँ लिखा लिलार ॥ ५ ॥
जग तें अलग रहु, जोग जुगति की रीति।
हरदे नाम तें, लाइ रहो दृढ़ प्रीति ॥ ६ ॥

विनय।

ी सरन होँ, अब की मोहिं निवाज।
प्रभु राखिये, यहि बाना की लाज ॥ १ ॥
इ कर जोरि कै, विनती सुनहु हमारि।
मोहिं बताइ दे, साईं के अनुहारि ॥ २ ॥
की लज्या तुम्हैं, रामराय सिर मैार।
रनन लगि रहे, राखि भरोसा तोर ॥ ३ ॥

प्रेम।

त मनि छवि लहो, निरखि चरन धरि सीस।
म रस मस्त ह्वै, थाके पाँच पचीस ॥ १ ॥
पा तेँ पाइये, भक्ति न हाँसी ख्याल।
ई सहज हीं, कोउ ढूँढ़त फिरत बिहाल ॥ २ ॥

दूलन बिरवा प्रेम को, जामेउ जेहि घट माहिँ।
पाँच पचीसी थकित भे, तेहि तरवर की छाहिँ ॥ ३ ॥
जप दान तप तीर्थ व्रत, धर्म जे दूलनदास।
भक्ति-आसरित तप सबै, भक्ति न केहु की आस ॥ ४ ॥
दुलन तिरथ तप दान तेँ, और पाप मिटि जाइ।
भक्त-द्रोह अघ ना मिटै, करै जे कोटि उपाइ ॥ ५ ॥
पेट ठठावहिँ स्वास गहि, मूँदहिँ दसहुँ दुवार।
दूलन रीझै न प्रेम बिनु, सत्त नाम करतार ॥ ६ ॥
धृग तन धृग मन धृग जनम, धृग जीवन जग माहिँ।
दूलन प्रीति लगाय जिन्ह, ओर निबाही नाहिँ ॥ ७ ॥
प्रेम पियारे पाहुना, दूलन ढूँढ़त ताहि।
मोल महँग दूलन दरस, भक्त सोई जग माहिँ ॥ ८ ॥
समरथ दूलनदास के, आस तोष[1] तुम राम।
तुम्हरे चरनन सीस दै, रटौँ तुम्हारो नाम ॥ ९ ॥
सरबस दूलनदास के, केवल नाम प्रसाद।
महतत सिधि औ सर्व सुभ, सुफल आदि औलाद ॥१०॥

धीरज।

दूलन सतगुरु मत कहै, धीरज बिना न ज्ञान।
निरफल जोग सँतोष बिन, कहैँ सबद परमान ॥ १ ॥
दूलन धीरज खंभ कहँ, जिकिरि वड़ेरा लाइ।
सूरत डोरी पोढ़ि करि, पाँच पचीस झुलाइ ॥ २ ॥

---

(१) आनंद।

दासातन ।

सती अगिन की आँच सहि, लोह आँच सहि सूर ।
दूलन सत आँचहि सहै, राम भक्त सो पूर ॥ १ ॥
जथाजोग जस चाहिये, सो तैसे फल देइ ।
दूलन ऐसे राम के, चरन कँवल रहै सेइ ॥ २ ॥

साधु महिमा ।

दुलन साधु सब एक हैं, बाग फूल सम तूल ।
कोइ कुदरती सुबास है, और फूल के फूल ॥ १ ॥
जा दिन संत सताइया, ता छिन उलटि खलक्क[1] ।
छत्र खसै धरनी धसै, तीनिउँ लोक गरक्क[2] ॥ २ ॥

फुटकल

भाग बड़े यहि जक्त भा, जेहि के मन वैराग ।
बिषय भोग परिहरि दुलन, चरन कमल चित लाग ॥१॥
दूलन पीतम जेहि चहैं, कही सुहागिल ताहि ।
आपन आपन भाग है, साझा काहु क नाहिं ॥ २ ॥
जगत मातु बनिता अहै, बूसी जगत जियाव ।
निंदन जोग न ये दोऊ, कहि दूलन सत भाव ॥ ३ ॥

(१) खलक़=सृष्टि । (२) डूब जाना ।

बनिता ऐसी है बड़ी, देखा यहि संसार ।
दूलन बन्दै दुहुन को, झूठे निंदनहार ॥ ४ ॥

दूलन चोला चाम को, आयो पहिरि जहान ।
इहाँ कमाई बसि भयो, सहना औ सुलतान ॥ ५ ॥

दूलन छोटे वै बड़े, मुसलमान का हिन्दु ।
भूखे देवैं भैारियाँ[1], सेवैं गुरु गोबिन्दु ॥ ६ ॥

भूँखेहि भोजन दिहे भल, प्यासे दीन्हे पानि ।
दूलन आये आदरी[2], कहि सु सबद सनमान[2] ॥ ७ ॥

काल कर्म की गम नहीं, नहिं पहुँचै भ्रम बान ।
दूलन चरन सरन रहु, छेम कुसल अस्थान ॥ ८ ॥

दूलन यह तन जक्त भा, मन सेवै जगदीस ।
जब देख्यो तबही पस्यो, चरनन दीन्हे सीस ॥ ९ ॥

दूलन प्रेम प्रतीत तें, जो बंदै हनुमान ।
निसु बासर ता की सदा, सब मुसकिल आसान ॥ १० ॥

दुलन चरन चित लाइ कै, अंतर धरै न ध्यान ।
निसुबासर बकि बकि मरै, ना मानी सो ज्ञान ॥ ११ ॥

दूलन कथा पुरान सुनि, मते न माते लोग ।
वृथा जनम रस भोग बिनु, खोया को संजोग ॥ १२ ॥

बेद पुरान कहा कहेउ, कहा किताब कुरान ।
पंडित काजी सत्त कहु, दूलन मन परमान ॥ १३ ॥

---

(१) लिट्टियाँ । (२) आदर या ख़ातिरदारी ।

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

कबीर साहिब का साखी-संग्रह (२१५२ साखियाँ) ... ... ॥।)॥
कबीर साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ तीसरा एडिशन ॥)
" " " भाग २ ... ... ॥)
" " " भाग ३ ... ... ।)
" " " भाग ४ ... ... =)
" " ज्ञान-गुदड़ी रेखते और झूलने ... ... ।)
" " अखरावती का पूरा ग्रंथ जिस में १७ चौपाई दोहे और सोरठे पहिले छापे से विशेष हैं ... ... -)॥
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ... ।≈)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली मय जीवन-चरित्र भाग १ ॥।)
" " " भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित ... ॥।)
" " रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ... ॥।≈)
" " घट रामायन दो भागों में, मय जीवन-चरित्र
भाग १ ... १)
भाग २ ... १)
गुरु नानक साहिब की प्राण-संगली सटिप्पण, जीवन-चरित्र सहित
भाग १ ... १)
भाग २ ... १)
दादू दयाल की बानी, जीवन-चरित्र सहित, भाग १ (साखी) ... १-)
" " भाग २ (शब्द) ... ... ॥।-)
सुंदर विलास और सुंदरदास जी का जीवन-चरित्र ... ॥≈)
पलटू साहिब की शब्दावली (कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र, भाग १ ॥)
" " " भाग २ ... ... ।-)।
जगजीवन साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ॥-)
" " " भाग २ ... ... ।-)
दूलन दास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... .. ≈)
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ... -)।
" " भाग २ . ... ।≈)।
गरीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ।≈)
रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ।-)।

दाम में डाक महसूल व वाल्यू-पेअबल कमिशन शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा।

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद।

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी कृत

बारहमासी

❖ ❖

ज्ञान वैराग्य और प्रेम का दर्पण

❖ ❖

Allahabad:
Printed at The Belvedere Steam Printing Works,
by E. Hall.

1919

[तीसरा छापा]

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

॥ भूमिका ॥

लोक-प्रसिद्ध श्री गोस्वामी तुलसीदासजी कृत सरस वाणी श्रैार अद्भुत भक्तिरस को कैान नहीं जानता। आज उन्हीं गोस्वामीजी की एक ज्ञान वैराग्यमय वारहमासी सर्व सज्जनों के कृतार्थ हेतु उपस्थित करता हूँ। इस वारहमासी में गोस्वामीजी ने वह ज्ञान वैराग्य कूट कूट कर भरा है कि श्रवण रंध्र में प्रवेश करते ही रोमांच खड़े हो जाते ह, थोड़ी देर के लिये इस असार संसार से चित्त हट कर यह शोकमय भवसागर निरस सा प्रतीत होने लगता है।

जहाँ तक मैं जानता हूँ यह वारहमासी पहिले कहीं नहीं छपी है परंतु बुँदेलखंड निवासियों में वहुधा ऐसे पुराने सज्जन मिलेंगे जिन को इसकी एक एक कड़ी कंठस्थ है। अपने मित्र भगवत-भक्त बाबू माधो प्रसाद खँपरिया के मुख से सुनकर मने यह अद्भुत वाणी लिखी है और अब उसे छपवा कर प्रेमी जनों के भेंट करता हूँ।

बिजावर-निवासी,
पं० पुरुषोत्तम भट्ट।